।। श्री सद्गुरु प्रसन्न।।

संरक्षक

परमपूज्य सद्गुरू वासुदेव रामेश्वरजी तिवारी

संपादक मण्डल :

श्री संतोष शुक्ला, शहडोल

डॉ. चन्दा रजक, रीवा

संपादकीय सलाहकार :– देवेन्द्र सिंह राय, भोपाल

सद्‌गुरुदेव की यह वेबसाईट (www.shrisatgurudev.com) जबलपुर के श्री महेन्द्र द्विवेदी एवं अन्य के द्वारा प्रारंभ की गई है। सभी परिवारजनों से अनुरोध है कि वेबसाईट को अद्यतन एवं समृद्ध करने हेतु उनके पास उपलब्ध सद्‌गुरुदेव से संबंधित अनुभव, संस्मरण या उनके फोटो **श्री महेन्द्र द्विवेदी** (09425811209) को भेजने का कष्ट करें।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पूज्य गुरुजी की आरती	4
2.	अपनी बात	5
3.	श्री सद्‌गुरु–स्तुति	6
4.	पूज्य गुरुजी के प्रवचन – धर्म	7
5.	सद्‌गुरु –वाणी––	12
	I. गायत्री कलश	
	II. पोज / धारणा –	
	III. ढपोर शंख	
	IV. संत लक्षण – श्री अशोक भइयाजी से प्राप्त डायरी पर आधारित	
	V. आनन्द	
6.	संख्या योग के आधार पर परम पूज्य गुरु जी का जीवन श्री अशोक तिवारी (न्यास अध्यक्ष)	20
7.	स्वामी समर्थ रामदासजी महाराज – भारत की महान विभूति	23
8.	सदगुरू प्रवचन के उत्प्रेरक अंश	35
9.	शिष्यानुभव, संस्मरण एवं पत्र	39
10.	भजन	46
11	परम पूज्य श्री सदगुरूजी के चरणों में सादर आत्म चिंतन	47
12	पूज्य गुरू जी की सेवा	54
13.	भारत पदार्पण दिवस – रिपोर्ट	56
13.	न्यास का वार्षिक लेखा–जोखा	64

परम पूज्य गुरू जी की आरती

ओम् जय जय जय गुरुजी ,
जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।
जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।।
ओम् जय जय जय गुरुजी।।1।।

अष्टसिद्धि तव दासी, नवनिधि के स्वामी।
जनदुःखहरण–परायण, सब के सुखकामी।।
ओम् जय जय जय गुरुजी ।।2।।

जन्मसिद्ध तुम योगी, नित परहित कर्त्ता।
साधक जन, पथदर्शक, शरणागत त्राता।।
ओम् जय जय जय गुरुजी ।।3।।

शुद्ध, बुद्ध, तुम मुक्त भि, निश्चल अविनाशी।
सत्, चित, सुख, घन, ईश्वर, भक्त हृदयवासी।।
ओम् जय जय जय गुरुजी।।4।।

गुरुजी हम पुत्रों की, तुम वत्सल जननी।
तव गुण वर्णन करते, मौन बने वाणी।।
ओम् जय जय जय गुरुजी।।5।।

एक यही वर मॉ्गें, हम तव चरणों में।
अविचल भक्ति तुम्हारी, सदा रहे मन में।।
ओम् जय जय जय गुरुजी ।।6।।

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।
जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।।
ओम् जय जय जय गुरुजी।।

अपनी बात

जय गुरुदेव,

प्रिय स्वजन,

इस वर्ष भी उद्बोधन पत्रिका आपके हाथों में सौंपते हुये हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह बात अलग है कि पूज्य गुरुदेव के प्रवचन या आपके अनुभव प्राप्त करने में हमें अत्यंत कठिनाई होती है क्योंकि परिवारजन इन्हें भेजते ही नहीं। यदि डॉ. चंदा और श्री संतोष शुक्ला साल भर प्रयास न करें तो पत्रिका के लिये मैटर इकट्ठा हो ही नहीं सकता। वर्धा के भाई राजू काण्णव भी इस वर्ष सामग्री भेजने में विशेष सहयोगी रहे हैं।

आपको गुरुपर्व पर यह देखकर ज़रूर खुशी होगी कि भोजन कक्ष के उपर एक नया हाल जिसमें कई बड़े व छोटे कमरे एवं बाथरूम आदि शामिल हैं, बन चुका है और आपके उपयोग के लिये उपलब्ध है। गुरुपरिवार के कुछ विशिष्ट एवं वरिष्ठ परिवारजनों के आर्थिक सहयोग एवं श्री शांतिलाल लूनिया के निर्माण सम्बंधी पर्यवेक्षण के बिना यह संभव नहीं था।

हर्ष की बात है की पूज्य गुरुजी पर निर्मित वेबसाईट के साथ—साथ अब फेसबुक की सुविधा भी उपलब्ध है और परिवारजन उस पर एक दूसरे से बातचीत भी करते हैं और अपने अनुभव आदि बांटते हैं। जैसा कि विधि का विधान है, गुरुपरिवार के पुराने सदस्य जहां कम हो रहे है, वहां नई पीढ़ी के लोग बड़ी संख्या में पूज्य गुरुजी के आशीर्वाद से परिवार में शामिल हो रहे हैं।

इस बीच श्री बाबा साहब तकवाले, वर्धा, जिन्होंने वर्धा में गुरुपरिवार के संगठन में विशेष भूमिका निभाई थी, नहीं रहे। श्रीमती शान्ति रजक एवं श्री गंगादीन रजक, शहडोल, श्री श्रीधर केशव काण्णव, वर्धा, श्री राम किंकर पाण्डें, सतना, श्री रामबल द्विवेदी, शहडोल, श्रीमती सावित्री पाण्डे, शहडोल, श्रीमती पार्वती त्रिपाठी, पेन्ड्रा, श्री योगेश ठाकुर एवं श्रीमती ठाकुर, दुर्ग एवं श्रीमती कलावती राय, भोपाल ने अपनी आयु पूर्ण कर गुरु—चरणों में स्थान पाया है। हम उनकी चिर शांति और उन पर गुरुकृपा के लिये पूज्य गुरु जी से प्रार्थना करते हैं।

इस बार की पत्रिका प्रकाशन में कृष्णा प्रिंटिंग होम, भोपाल के संचालक श्री कृष्णा अग्रवाल का योगदान सदैव की तरह सराहनीय रहा है। प्रूफ रीडिंग में श्री जे.के.जैन, श्रीमती कुसुम राय, श्री कृष्णा कराड़े, श्री अरविंद सिंह एवं श्री महेन्द्र जैन (शिक्षा विभाग) ने विशिष्ट सहयोग दिया है।

इस वर्ष दिव्याम्बु—निमम्जन के दूसरे भाग को प्रारंभ कर प्रकाशित करने का विचार है। इस में पूज्य गुरु जी से सम्बंधित वर्ष 1984 से 1998 तक की सम्पूर्ण सामग्री देना है। आपके सहयोग के बिना यह नहीं हो पायेगा। कृपया आपके संस्मरण, गुरु जी के प्रवचन, पुराने फोटो एवं गुरु जी का यात्रा—वृतांत तत्काल मुझे भेजने का कष्ट करें।

पूज्य गुरु जी की सम्पूर्ण कृपा हम सब पर बनी रहे, यही उनसे प्रार्थना है

आपकार· नेही,
देवेन्द्र सिंहर ाय

सद्‌गुरू स्तुति

भवसागर तारण कारण हे, रविनन्दन बन्धन खण्डन हे।
शरणागत किंकर भीत मने, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

हरि कन्दर तामस भास्कर हे, तुम विष्णु, प्रजापति शंकर हे।
परब्रम्ह परात्पर वेद भणे, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

मन–वारण कारण, अंकुश हे, नर त्राण हरे हरि चाक्षुश हे।
गुणगान परायण देवगणे, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

कुल– कुण्डलिनी तुम भञ्जक हे, हृदि–ग्रन्थि विदारण कारण हे।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

अभिमान प्रभाव विमर्दक हे, अति दीन जने तुम रक्षक हे।
कम्पित वञ्चित भक्ति धने, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

रिपुसूदन मंगलनायक हे, सुख शान्ति वराभय दायक हे।
त्रय ताप हरे, तव नाम गुणे, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

तव नाम सदा सुख साधक हे, पतितअधम मानव पावक हे।
मम मानस चंचल रात्रि दिने, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

जय सद्‌गुरू ! ईश्वर प्रापक हे !, भव रोग–विकार विनाशक हे।
मन लीन रहे तव श्री चरणे, गुरूदेव दया कर दीन जने।।

धर्म
पूज्य गुरूजी के प्रवचन

ध = धारणा, म= ब्रम्ह ।

भू. भूवः स्वः मह जनः तपः सत्यमः । सात लोक पार करने के बाद मानव शरीर मिलता है। वह चाहे तो सत्य लोक में पहुॅच जाये, जाहे यहीं पड़ा रहे।

यह नक्स खयाली है, काबा हो या बुत खाना,

तू मुझमें है, मै तुझमें हूॅं , ऐ जलवये जाना?

साकी को मैं कहूँगा, यह राग फकीराना है।

संसार में जो दिखता है, उसका कोई Greater, वह और कोई नहीं, वह मैं हूँ।

क्रिया तीन प्रकार की होती है एच्छिक, अनैच्छिक, प्रतिक्रियात्मक। आपने किसी पर आरोप किया और वह उसे स्वीकार नहीं किया तो वह आरोपकर्ता के पास वापस आ जायेगा और प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।

गुरू आदेशानुसार ध्यान हमेशा ऊँ या गुरू चरणों का कर भ्रूमध्य पर केन्द्रित करने से आप अधिक से अधिक शक्ति सम्पन्न होते जाओगे। भूत भविष्य की बात मत सोचो संतोषी बनो ,हमेशा वर्तमान में रहो। भौतिक, बौद्धिक, मानसिक नैतिक इसमें पूर्ण हो जाओगे। 'संतोष'–ध्यान मग्न रहो, अभाव की ओर ध्यान न दो। जितना जब तक करना हो, (शारीरिक आसन, मंत्र जाप आदि) करो फिर अपने खाने–पीने की बातों में चले जायें, इस प्रकार बौद्धिक तुष्टि भी होती। आप स्वयं पूर्ण हैं।

"न चाह की चिन्ता, मगन रहने पर" तृप्ति हो जायेगी और अपने आप अभाव का नाश हो जायेगा।

ब्रम्ह निराकार है, गुरूदेव साकार है, इसे हम Intellectual satisfaction कहेगे, वह उसे ही हो सकता है, जो अपने स्वरूप में मगन रहता है। प्रारम्भ में ध्यान मोह के साथ है, अब मोह नहीं, अब ध्यान, ज्ञान के साथ है।

मनुष्य असंतुष्ट क्यों रहता है ?

मनुष्य जब तक बाह्य जगत में व्यस्त है, तब तक वह असंतुष्ट, परेशान रहता है किन्तु जब वह मोह से परे हो जाता है, तब वह संतुष्ट हो जाता है। जब तक हमारी बुद्धि, मन और इन्द्रियों के द्वारा, वस्तु या विषयों के भोगों की आशक्ति में फंसी रहती है, तब तक वह व्यक्ति असंतुष्ट एवं परेशान रहता है। जब हम अपने मन, बुद्धि, को विषयों से परे अपने आप में केन्द्रित कर देते हैं, तब हम पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाते है। यही संतोष है। भौतिक

व्यक्ति असुरक्षित, असंतुष्ट, असंरक्षित एवं परेशान है। सुरक्षित एवं संरक्षित रहना स्वयं पर निर्भर है। यह अभ्यास, श्रद्धा एवं लगन के ऊपर निर्भर है। यही परमानन्द है। इन्द्रियों का उपयोग बाह्य जगत के लिये जो करता है, वही असंतुष्ट है, यदि अंर्तजगत के लिये करता है, तो वह परमानन्द को प्राप्त होता है। पूर्णता या पूर्णबोध को प्राप्त होता है। "This is the key of a peaceful & happy life"

"उत्तिष्ठ्य जागृतवरान्नयबोधत, क्षुरस्थ धारा निशिता दुरक्तया"

"उठो, जागो और श्रेष्ठ गुरू के पास जाकर बोध प्राप्त करो, तब तक सेवा करो, जब तक तुम्हे बोध न हो जाए"।

यदि तुम्हें बोध प्राप्त न हो तो भी गुरू सानिंध्य में रहो, यत्न करो। निर्दिष्ट मार्ग पर चलो। महद ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ गुरू का सानिंध्य आवश्यक है। ज्ञान प्राप्ति का मार्ग यदि निकाल दिया जाये तो बचा ही क्या? सांसारिक व्यवहार में भी अपने से श्रेष्ठ के पास ही जाने से ज्ञान उपलब्ध होता है। ज्ञानी के पास सब कोई नहीं जाता। प्रत्येक को प्रकाश अच्छा नहीं लगता। उल्लू जाति का पक्षी प्रकाश नहीं चाहता।

''मृदु मंगल मय संत समाजू, जिमि जन जंगम तीरथ राजू''

संत चलते फिरते तीर्थ हैं, संतों का आश्रम ही तीर्थ स्थान है। ''इन्द्रिया सुरन्ह न ज्ञान सुहाई'' इन्द्रियो विषयों में लिप्त लोगों को ज्ञान अच्छा नहीं लगता क्योकि इसके लिये उन्हें सीढी की आवश्यकता है। वरना छुरस्थ/छुरी की धारा तो है, तलवार की धार बिना समझे बूझे हाथ लगाया कि अंग भंग हुआ। जगत में हम परेशान हैं क्योकि छूरे की धार में हम कट रहें है या काटे जा रहे हैं।

'वयम् न भोक्ता वयमेव भुक्ताः।

हम भ्रूर्वोमध्य में ध्यान क्यों करते हैं? या भ्रूर्वोमध्य में क्यों केन्द्रित करते हैं ?..........

Fore brain के सामने या भ्रूर्वोमध्य भाग से दो Nerves निकलकर एक Optic Nerve में तथा दूसरी ज्ञान केन्द्र/ sensory system में जाती है। ज्ञान केन्द्र संस्थान में दो भाग हैं एक में Grey matter, तथा दूसरे में White matter जो कि quessuge relay में प्रसार का काम करता है। Grey Matter में जन्म जन्मान्तरों के संस्कार जमा रहते हैं।

Optic Nerve, visual area, जोकि मस्तिष्क के पीछे भाग में/ऑक्सीपुट में पहुँचकर तीसरी आँख जो Fore brain में है Third eye Membrane मेम्ब्रन से covered है।

अब भ्रूर्वोमध्य में हम ध्यान करते हैं तो दोनों Nerves में heat उत्पन्न होती है और अभ्यास करते –करते in due course of time जब तीसरी आँख की मेम्ब्रन कट जाती है

या गल जाती है तब साधक को भूत, भविष्य, वर्तमान सब दिखने लगता है, बोध होने लगता है। उधर Intellectual understanding में तीव्रता आने लगती है। परिणामतः बुद्धि प्रखर एवं प्रभावशाली बन जाती है। वाणी में प्रभाव उत्पन्न होने लगता है।

मस्तिष्क ही प्रधान है, नव निधि युक्त है जो करना है, इसी से किया जायेगा यह मल देह है किन्तु इसी में रहकर आप अपना उद्धार कर सकते हैं। एक cell से आप अनेक cell में देह पायें है। अब आंकुचन के द्वारा उसी एक सेल रूपी बिन्दु से देह को प्राप्त करना है ''ज्योर्तिमयदेह''। वह बिन्दु ज्योर्तिमय है। इन ऑखो से आप नहीं देख सकते। उसके लिये तीसरी आँख खोलना पड़ेगा जो कि विसुअल एरिया/visual area में membrane से ढका हुआ है, अभ्यास के द्वारा ही वह cover हट जायेगा और दिव्य आँख खुल जायेगी।

दिव्य शरीर हमारा क्या और कैसा हो ?

ज्ञान स्वरूप है, नित्य चैतन्य, अयम् आत्मानं। जिस विद्या से आप बिक जाते हैं, अपने को बेच डालते है, वह अविद्या है, ज्ञान नहीं है। ज्ञान प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं है। यदि बाधा है तो न करने और टालने की आदत क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह का भय अभी भी बना हुआ है। अपने उद्धार की तीव्र इच्छा उसमें है ही नहीं, जिसमें तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो जाता है, वह बिना सोचे विचारे चल देता है।

''एकहि साधे सब सधे''

बाहर की रूकावट है सम्पत्ति, मान, यह अन्दर नहीं जाने देता है। ''वा तत्वमेवं क्रिया चिन्तरूपम् परम अटल ब्रम्हा–निष्फल कैसा है– शान्त''। अभ्यास करके वहाँ पहुँचना और वहीं रहना तुम्हारा काम है। एक बिन्दु या सेल/cell है उसमें जाकर आपको रहना। स्पर्श एवं आवेश के योग से cell twice हो जाती है। ज्यों ज्यों आप प्रगति करेगें, त्यों त्यों सांसारिक काम से मुक्त होते चले जायेगें, सांसारिकता में व्यस्त रहने की धारणा से प्रगति अवरूद्ध हो जाती है। ''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्''– मनसा वाचा कर्मणा से उसके पास 24 घन्टे अपने इष्ट के पास रहना, अपने समीप देखना। परब्रम्ह– महान है, वह omni है, वह तुम्ही हो। ''तत् त्वम् असि'' यदि घर में कुछ करने के लिये कहा जाये तो उतना ही करो यदि घर में लोगों को हमारी कार्य पद्धति से संतोष न हो तो निर्विकार रूप से कह दो कि आप करलो या करालो। अपने उद्धार के लिये सतत् प्रयासरत रहो।

''सः एव जीवः विवरः प्रसूतिः'' (बुद्धि विवर में) बुद्धि आत्मा की देह है। ''अहम् बोध रूपाः'' यह आत्मा बुद्धि या ज्ञान स्वरूप है। कैसी बुद्धि? शुद्ध बुद्धि (आत्मस्थ) और उस रूप में ही उसे शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सच्चिानन्द स्वरूप कहा गया है।

''प्राणेन दोषेण गुहां प्रविष्टः'' मन एक देशीय है। एक काल में एक ही काम कर सकता है। बुद्धि स्वरूप में ही उसे सर्वज्ञ कहा गया है। क्योंकि वह आत्मा की देह है, आत्मा

के संयोग से ही वह ज्ञानवती बनती है। बुद्धि जड़ है किन्तु आत्मा के संयोग से वह चैतन्य कही गयी है। आत्मा से बोध की उत्पत्ति है।

बुद्धि स्त्रीलिगं है, जब वह जड़ है तब वह बुद्धि है। आत्मा की देह है, वह भी एक देशीय है आत्मा बिना शरीर के नहीं रह सकती। देवगण psychic body. या बुद्धिमय देह में रहते है। आत्मा सिन्धु में तभी मिलती है जब साधक का शरीर मस्तिष्क फोड़कर ऊपर से निकल जाए। गुरूजी– हम मर्यादा छोड़ते नहीं किन्तु बोलने से चूकते नहीं हैं। हम पिता हैं, पति है, हाँ हैं आदि आदि। ठीक है व्यवहार तदनुसार ही सबसे करना चाहिये किन्तु भीतर हमे सदा यह ध्यान रखना चाहिये कि ये सब स्वार्थी हैं, सब शोषण कर रहे हैं। बुद्धि से बोध होना, उसी का पर्यायवाची नाम–ज्ञान है। बुद्धि ही मन और इन्द्रियों को उस ओर ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रेरित करती है यानि कि बुद्धि मन का एक इन्सट्रूमेन्ट है।

भारतीय शास्त्र के अनुसार सभी इन्द्रियाँ एवम् मन, सभी जड़ हैं, बर्हिमुखी हैं। मन ललचाता है बुद्धि से निर्णय माँगता है। अब यदि बुद्धि भी तुम्हारे कन्ट्रोल में नहीं है, तो मन के वश में होकर विषयों में लगा देगी। जब मन और बुद्धि आत्मा की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न्न करता है, बुद्धि ज्यों ज्यों सात्विक और सत्य होती जायेगी, त्यों त्यों आत्मा की ओर उन्मुख होती जायेगी। इसी को One pointedness कहते हैं, कुशाग्र कहते हैं। कुशा की नोक के समान पैनी या तीक्ष्ण होती जायेगी।

अब चूँकि बुद्धि रथ का सारथी है, मन , इन्द्रियों रूपी घोडे की लगाम बुद्धि के हाथ में है। अतः बुद्धि का झुकाव अंतर्मुखी आत्मा की ओर होता जायेगा, और मन स्वतः बुद्धि के पीछे पीछे चलने के लिये विवश हो जायेगी। धीरे–धीरे मन–आइना की मलिनता आत्मा के संपर्क में पहुँचने के कारण दूर होती जायेगी और मन ज्यों ज्यों निर्मल होता जायेगा, आत्मा में ही रमने लगेगा और गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है– कि ''निर्मल मन जन सो मोहि पावा'' उस निर्मल मन में आप अपना दर्पण की भाँति शुद्ध स्वरूप का दर्शन करने लगेगें और बुद्धि को जब आत्मा का संयोग प्राप्त हो जाएगा तब वही बुद्धि आत्म बुद्धि हो जाएगी और ज्यों ज्यों वह तीक्ष्ण होती जायेगी आप सर्वज्ञ होते जाएगें, स्थित प्रज्ञ होते जायेगें, ब्रम्ह स्थिति को प्राप्त हो जायेगें। Omni potent, Omnicient, Omni present हो जायेगें। संयम अत्यन्त आवश्यक है। संयम अधीपते यत्र–तत्र समाधि, बुद्धि को आत्मा से जोड़ना है। साधना के पश्चात् जो ज्ञान होता है इससे व्यक्ति सर्वज्ञ होता है। जब तक वासना है सिद्धि सम्भव नहीं है। अधि–सूक्ष्म, अति सूक्ष्म अपने जन्मों के संस्कार है। बच्चा जब पैदा होता है, पैदा होते ही उसे भूख महसूस होती है, दूध पीने लगता है, दूध पीना उसे सिखाना नहीं पड़ता। सामान्य साधक अन्दर तब तक नहीं जा सकता जब तक उसे ब्रम्ह साक्षात्कार कराने वाला गुरू नहीं मिल जाता है।

''अजपाजपयोपसंहारः इति उन्मना''

जब तक साँस चलती है और मालूम होता है तब तक आप बाहर हैं। धीरे–धीरे स्थिति आती है उसके लिये बाह्य संवेदना शून्यवत् होना आवश्यक है, तब इष्ट के दर्शन होने लगेगें या हो सकेगें। जपात सिद्धिः– जप से आप प्रभाव या सिद्धि प्राप्त कर सकते है।

उन्मनी– जब आप जप करते हैं, तब जप करते समय आपका श्वास– प्रश्वास चलता है किन्तु मालूम नहीं पड़ता, तब वह उन्मनी स्थिति होती है और अन्दर प्रवेश करने की स्थिति प्राप्त होती है। अन्दर जो जप चलता है वह अर्न्तमुखी हो जाता है। सुषुम्ना मार्ग ⟶ दिव्य मार्ग/शिव मार्ग से स्वयमेव चलने लगता है और साधक समाधि स्थिति को प्राप्त हो जाता है।

उन्मना = उत् + मना, सुषुम्ना मार्ग से चलना

''जीव हृदय तम मोह विशेषी, छूटि ग्रन्थि किमि पड़इ न देखी''

इस मोह को उलट देना है, होम करना है, आपका हृदय मोह से घिरा है, तन, धन, जन, विद्या, मान आदि किसी का मोह हो, उदासीन होने पर ही वह ग्रन्थि दिखने लगती है। तब आप सामर्थ्यवान बन जाएगें।

तात्पर्य यह है कि जितने अधिक से अधिक समय तक आप अपने को उस जागृत समाधि में रख सकेगें। उस ग्रन्थि को सोलने वाला कोई गुरू होना चाहिये।

जब तुम्हें अपने स्वरूप का बोध हो जायेगा, तब तुम संसार और ब्रम्ह के बीच की ग्रन्थि को खोल लोगे। अज्ञानवश आप अपने आपको एक साधारण व्यक्ति समझ रहे हो, संसार बाहर से कुछ और अन्दर से कुछ।

ओम् शान्ति, ओम् शान्ति, ओम शान्ति, ––– आनन्द मंगल हो कल्याण हो–––

सरलता के बिना कोई भी व्यक्ति अन्य आत्माओं का सच्चा स्नेह नहीं पा सकता।

किसी भी वस्तु की सुन्दरता आपकी मूल्यांकन करने की योग्यता में छिपी हुई है।

निर्बल व खाली मन कभी भी समर्थ संकल्प उत्पन्न नहीं कर सकता।

सद्गुरू- वाणी

1. गायत्री कलश

प्रातः स्मरामि देवस्य सवितुर्भाग आत्मना, वरेण्यं तत् धियोयोनः चिदानन्दे प्रचोदयात्।

आत्मा ही सबकी त्राता है, हम असंगत है, शरीर से हमारा कोई संबंध नहीं।

मौन स्व अध्ययन, ध्यान में ध्येय, ब्रम्हानुचिंतनम् प्रदर्शन और चमत्कार निषेध किया गया है। स्व का अध्ययन ही ध्यान है। ब्रम्ह का चिंतन ही ध्येय होना चाहिये।

जिनको बोध हो गया, वे प्रदर्शन से दूर रहते है। जहाँ प्रदर्शन, वहाँ तक माया है, ज्ञानी का प्रदर्शन मौन होकर बैठे रहना है। वह आत्म बोध में मग्न होकर बैठा रहता है।

''क्रियाशील वाचाल व्यर्थ आहे''। अनुभव के बिना बोलना बकवास है। ''यत्र मेकम संयम''। धारणा– जो ध्यान करते है, ध्यान–सब दिखाई पड़ता है। समाधि–बुद्धि का आत्मा में विलय। जिससे दिखता है, वह है बुद्धि। जब बुद्धि आत्मा में समाहित हो गई, तब बचा ही क्या? वह पूर्ण हो गया–Nil

''गो गोचर जहँ लागे मन जाई, से सब माया जानेहु भाई''

हमें अपने आप में रहना है। यही भावातीत होना है। उसे ही मौन स्थिति कहाँ है।

अभ्यस्त– अभि+अस्त,। अभि–उस परम तत्व की ओर जहाँ से आये हो। अस्त– उन्मुख रहो। जब तक देह है, दुःख, सुख आते ही रहेगें और समाप्त भी होते रहेगें। यदि दुःख न टाल सको तो गुरूदेव की ओर उन्मुख करके स्वयं निश्चितं हो जाओ। यत्न में ढील न आने दो।

महा शक्ति मंत्र–ओम ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानाम् वाचम् मुखम पदम् स्तम्भय जिव्हां कीलय कीलय बुद्धि विनाशाय विनाशाय ह्रीं ओम् फट् स्वाहा।

शक्ति बीज–निर्भयता के लिये ह्रीं के स्थान पर ह्लीम को करे।

इनसे सावधान रहें 1–बुरे आदमी, 2–धनी। वे तुम्हें बहुत कुछ कहेगें, तुम्हारी निन्दा भी कर सकते हैं। किन्तु यदि तुम हृदय से परमात्मा को चाहते हो, तो तुम्हें सब सहना पड़ेगा, दुष्टों के बीच में ईश्वर चिन्तन नहीं हो सकता है। उनका स्वभाव बाघ और रीछों के जैसा होता है। जैसे बुरे आदमी, धनी स्त्रियाँ, कुत्ता, सांड़, शराबी।

संसार छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। अनासक्त होकर अन्दर से उसकी प्राप्ति की इच्छा रखने पर दर्शन सुलभ हो जाता है।

''मनुष्य का यही उददेश्य और कर्म भी यही है''।

अज्ञान – जब तक यह बोध है कि ईश्वर दूर है, तब तक अज्ञान है।

ज्ञान - जब ईश्वर का सान्निध्य महसूस होने लगे हर जगह, उसका आभास हो, वही ज्ञान है। जब इस प्रकार का आभास होने लगता है तब सम्पूर्ण वस्तुएँ सजीव मालूम होने लगती है और मै ही वही हूँ, इसका बोध होने लगता है। तब सर्वत्र और सब में वही दिखता भी है। रूप तो खोल मात्र है, अन्दर वही है। ज्ञानियों का भाव है। स्वरूप चिन्तन के इसी भाव में मग्न रहते है। हर क्षण उनका मन इसी में लगा रहता है।

2. धारणा/POSE

आप अपनी धारणा को जिस अवस्था में या रूप में रखोगे, वैसा ही बने रहोगे, वैसा ही काम होगा। निराशावादिता से दूर रहो।

सत्

गुरू ॐ

मॉ

'' इढासने सुश्यात मे शरीरं
त्वगस्थि मांस प्रलयं च यातु
अप्राप्य बोधं बहु काल दुर्लभं
नैव आसना जाप बुद्धिमन चलस्यति ''

प्रत्येक साधक की धारणा इस प्रकार की होनी चाहिये-

1. **सदा मुस्कुराते हुये, सावधान रहते हुये, साक्षी रूप से जगत व्यवहार देखते चलो।**
2. **बुद्धि को आत्मा की ओर मोड़ दो।**

**याद रखो- ''आत्मस्थ ज्ञानमयो पुण्यो, देह मांस भयः अशुचितः
त्वैक्यं प्रवश्यन्ति किं अज्ञान मतः परम ''**

''मन का मैल निकाल प्यारे, क्या काया को मल—मल धोवे,
मोह जनित मल लगा विविध विधि, कोटिहु जतन न जाई''

मन का मैल निकाले बिना, न साधना होगी, न ही भक्ति। चित्त प्रसन्न होते ही सारे दुःखों का अवसान हो जायेगा।

''अनन्य चेताः सततं यो मा स्मरति नित्यतः तस्याहं सुलभ पार्थ, नित्य मुक्तस्य योगिना''

कृष्णोवाच—– जो मनुष्य अनन्य चित होकर नित्य निरन्तर मेरा स्मरण करता है, उस नित्य में लगे योगी के लिये मैं सुलभ हो जाता हूँ, वह मुझे सहज ही प्राप्त हो जाता है। साधक की प्रीति सब जगह से सिमटकर, एक मात्र अपने प्राणों के प्राण परमात्मा में केंद्रित

हो जाती है। वह अनवरत उन्ही का ध्यान एवम् स्मरण करता रहता है।

सत्

गुरू ॐ प्रत्येक स्थिति में भगवान के मंगलमय स्वरूप को देखो। भगवान

मंगलमय हैं, यह जगत् भगवान से भरा है, अतएव तुम भी मंगलमय हो मंगल में निवास कर रहे हो। जैसे बादल सूर्य ढका हुआ रहता है, राख में आग ढकी रहती है, वैसे ही तुम्हारे अविश्वास से मंगलमयी माँ ढकी हुई है। वास्तव में उनका मंगलमयी और स्नेहिल स्वरूप नित्य और सर्वत्र है।शरीर को अपना मान कर देखते रहोगे तो संसार ही दिखेगा। इसे जब अपना न मानकर देखेगे तो सर्वत्र परमात्मा ही दृष्टि गोचर होगें।

मन में जब तक कामना का निवास रहेगा, तब तक आप दरिद्र रहेगें, यह अकाट्य सिद्धान्त है। चलते फिरते कवच मंत्रका जाप करते रहो, बीच– बीच में सोऽहम् अथवा बोधरूपा कहो।

कँचन कॉचहि सम गिने

कामिनी का कृपाषाण,

तुलसी ऐसे संत जन

पृथ्वी ब्रहम् समान ।।

मन निग्रह– या तो करके रहो, या होकर रहो। योगी कुण्डलिनी शक्ति को अपने वश में रखता है। अन्य साधक या लोग शक्ति के वश में आश्रित होकर रहते है। यही 02 मार्ग है, यदि तुम स्वयं कुछ कर सकते हो, तो स्वतः करो नहीं तो गुरूदेव के शरणागत होकर रहो। आचरण में अपने आपको ढालो, मन से भी विकारों का ध्यान न हो, ऐसा प्रयत्न करो, यही है ''मानस पुष्प होहि नहिं पाया'' मन का संकल्प विकल्प करना, यही तो व्याधि है।

वि–विकार, आधि–छोड़ना–पकड़ना साधक को चाहिये कि मन को विकारों से मुक्त करने का सतत् प्रयत्न करे, जहाँ मन विकारों से मुक्त हुआ, वह निर्मल हुआ कि आत्म साक्षात्कार सुलभ हो गया, ऐसे साधक के चेहरे पे दमक आ जायेगी, वह प्रभावशाली हो जायेगा।

''निर्मल मन जन सो मोहि पावा''

रोगान् शेषापहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलान् भीष्टान

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।
(दुर्गा सप्तश्लोकी– दुर्गा सप्तशती)

''दीन दयाल विरद सम्भारी, हरहु नाथ मम् संकट भारी''।

तुम्हारा आश्रय लेकर यानी तुम्हारा बल पाकर दूसरों को आश्रय देने में समर्थ होता है।

''गिरही के टुकडो बुरो– दो– दो अंगुल दाँत, मंजन करे तो उबरै नातर काए आव''

Return करे भक्त जन तो–ईश सेवा तभी सम्भव है, जब उसके शब्दों में इतनी शक्ति हो कि वह जो कुछ कहे, आर्शीवाद में फलीभूत हो। *Indirectly* गिरही की सेवा है।

3. ढपोर शंख

एक गरीब ब्राम्हण समुद्र के आस–पास गया और भिक्षा माँगा, समुद्र ने एक छोटा सा शंख दिया और बताया कि जब नहां धोकर तुम मांगोगे, तो एक स्वर्ण मुद्रा पा जाओगे। ब्राम्हण ने ऐसा ही किया। स्वर्ण मुद्रा शंख से प्राप्त करने का रहस्य जब एक बनिये को पता चला, तो बनिये ने अपने छल कपट द्वारा शंख चुरा लिया और उसके स्थान पर दूसरा शंख रख दिया। ब्राम्हण ने स्नान कर शंख से माँगा, तब शंख बोला कि मै बोलता हूँ, देता कुछ नहीं हूँ ।

यही आज के दुनिया के मानव की स्थिति है, लो कुछ करते नहीं, सुनते नहीं, आचरण में लाते नहीं।

''ब्रह्मज्ञ ानि बिनुन ारिन रक रहिन द ूसरक ाम''

नारायण तो सभी के हैं, किन्तु कैसे नारायण, दरिद्र नारायण, वासनाओं से भरे पूरे, इनका पेट कभी भरता नहीं, इसलिये अपने से इनका मेल कभी खाता नहीं। प्रसंगानुसार कुछ बोल दो, वरना मौन रहो। वस्तुतः मन निर्मल रहता है, कोई विचार आया तो उठाकर चित्त में डाल दिया या उसे छोड़ देना, अंतः यह साधक के ऊपर निर्भर है कि किसे रखे, किसे छोड़े। यही पाप और पुण्य है।

बुद्धिमें सब वासनाओं के संस्कार हैं। बुद्धि के शुद्धसात्विक होने पर प्रकृति पुरूष में लीन हो जाती है।

''बुद्धिस ाम्योक`वल्यं''

''ब॰ह्मास ए वज ीवि विवरःप॰सूताप॰ाणेनद्य ाोषेणग ुहांप॰विष्ठा।

मनोम यंश ाब्दमुपैतिब ीजंर॰ वरोव र्णःइ तिस मविष्ठः' '

ब्रह्म ही तो जीव होकर बुद्धि रूपी देह में रहकर प्राण रूप में स्थित होकर वर्ण स्वर से युक्त होकर वाणीं के रूप में प्रकट होकर सब अहम् के आवरण रूप तू, मै होकर इस देह के साथ सब काम करवा लेता है।

तुम्हीं ब्रम्ह, तुम्हीं वाणी होकर–

परापश्यन्ति मध्यमां बैखरी कामारवे...........

योनी मुद्रा अवस्थिता ।

आप किसी प्रकार की चिन्ता करे ही नहीं, तभी समाधि की ओर क्रमशः अग्रसर होगें। यदि कोई समस्या आ जाय, तो शुद्ध संकल्प से पूज्य गुरूजी के ऊपर डालकर कि वे ही उसका हल निकाले और समाधान करें। आप पुनः निश्चिन्त होकर अपने रंग में डूबे क्योंकि एक तो आप स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप हैं अतः अपने स्वरूप का चिन्तन करें, दूसरे आपके चारो ओर आनन्द ही आनन्द है, उसे *realize* करें, और उसका रसास्वादन करने में तल्लीन हो जाए, फिर देखिये कैसी मस्ती आती है? देह या शरीर की भी चिन्ता न करें, नाही घर की, धन की, नही सदस्यों की ही क्योकिं –

'द्रष्टम् तत् नष्टम्'

हाँ किसी से द्वेष न हो, न ही ममत्व, क्योंकि ये सब दिखाने के लिये है। आप अकेले आये हैं और, और अकेले जायेगें, और जाना पड़ेगा ही। यह जग मुसाफिर खाना है, ''न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर''

''विहाय कामान्तर सर्वान प्रभास्वरति निःस्पृहा

निर्ममो निरहंकारा आशान्तिमधिगच्छति''

जब तक जग में रहना है, व्यवहार में न चूकें, सब से सद् व्यवहार करें, अपने आपको एडजस्ट करें। दोषों से बचते रहो, दोषों से बचते रहे, इन्द्रियों पर काबू रखे, और जब प्रसंग न आये, मौन रहें, मौन रहने का प्रयत्न करें और अधिक से अधिक काल पर्यन्त डूबे रहें। यही साधना अब आपको करनी है। ध्यान रहे।

''यं यं वापि नरो भावं त्यजति अन्ने कलेवरं यथा प्रयाण काले मनस्चलेन ''

न जाने कब सॉस रूक जाए।

''अस्माकं सर्वेषु कालेषु नाम अनुस्मरणं'' यह आपका कवच ध्यान है।

1. Have no desire and you are fearless.
2. Have no राग, द्वेष -- Be Happy.
3. Be silent, observe silence & enjoy peace.

4. Realise God before you and near you.
5. Practice to brace your will.
6. Adjust yourself in every moment and enjoy there.

अतः अपने प्रिय पर खीझो नहीं, गाली देने वालों पर खीझों नहीं, अनासक्त भाव से मौनावस्था में रहने का प्रयत्न करो। किसी बात की चिन्ता मत करो, सब गुरूजी पर अर्पित कर आनन्द में डूबे रहो।

जब तक आप ध्यान मग्न हैं, आप सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। आप भी वही हैं। 'अयं आत्म ब्रह्म्' तभी तक आप बोध रूप हैं। जहॉ संसार में आए, कि मानव हो गये, आप कामना, वासना का संकल्प न करें, विचार ही समय पाकर मूर्त रूप धारण करता हैं।

'तुल्य निन्दा स्तुति मौनी'–मौन स्थिति आने पर ही साधक निन्दा स्तुति से दूर रह सकता है।

मन की समाहित स्थिति– मौन स्थिति – शुद्धस्थिति– शान्त स्थिति– मौन स्थिति।

इस आसन पर बुद्धि और मन नहीं चल सकते। साधना में संकल्प लेकर बैठ जाये, तो चाहे जो भी संकट उत्पन्न हो जाये, नहीं हटूगाँ, चाहे प्राण चला जाये, तब लक्ष्य सिद्ध होगा।

तात्पर्य यह है कि अपनी साधना इतनी दृढ़ होगी, तभी काम, क्रोध, दुर्व्यसनादि पर काबू पाया जा सकता है।

साधक coil है, लोहा है। गुरू चुम्बक है। उसी से साधक शक्ति पाता है। मैगनेट लोहे को चुम्बकत्व देता है, पर उसका कुछ नहीं बिगड़ता , बाद में वह स्वयं मैगनेट हो जाता है, और दूसरों को शक्ति प्रदान करने में सक्षम हो जाता है। सद्‌गुरू अपनी शक्ति शिष्य को देता है, और शिष्य से पुनः गुरू की ओर जाता है, और पुनः गुरू से शिष्य की ओर जाता है। यही क्रम चलता रहता है। जिस प्रकार मैगनेट के पास कैसा भी लोहा लाया जाए, कुछ या क्षणिक प्रभाव तो पड़ता ही पड़ता है। यदि वह बहुत समय तक मैगनेट के संपर्क में रहा, तो लोहा भी मैगनेट हो जाता है। अन्यथा लोहे का लोहा ही रहेगा।

कबीर जी कहते है––

4. संत लक्षण--

तनकम ानम नम ेंन हीं,स बकोर ाखत‍् यार,
नारायणत ास ंतप ै,ब ार-बारब लिहार।
कपटग ॉठम नम ेंन हीं,स बकोस रलस ुभाव,
नारायणत ाभ ाक्तक ील गे किनारेन ॅव।।
मनल ागोय ारफ कीरीम ें,

जोस ुखप ायोप्रभुन ामभ ाजनम ें,स ोस ुखन ाहींअ मीरीम ें।
भली,ब ुरीस बकीस ुनल ीजिये,क रग ुजरालग रीबीम ें।।

प्रेमन गरम ेंर हनिह मारी,भ ालिब निअ ाईस बूरीम ें।
हाथम ेंक ूड़ी,ब गलम ेंस ोटा,च ारोंदिसज ागीरीम ें।।

आखिरम नय हख ॉकमिलेगा,क हॉर हतम गरूरीम ें।
कहतक बीरस ुनोभ ाईस ाधो,स ाहिबमिलेस बूरीम ें।।
''कबीर''

करतद ेखावनह ेतुस ब,ज प,त प,प ूजा,प ाठ
कामक ुछउ नस ोन ही,स हस बस ूखेक ाठ
बिनप्रेमजियअ पनैं,अ ानन्दअ नुभवन ाहिं
ताबिनुस बफ ीकोल गे,स मुझिल खोजियभ ाग
अद्वैतस ुखत ेचिज े,च ाखिसनिन्द्रेम ाझे

देह सुखी या दुखी परन्तु जो असली भक्त है, वे ज्ञान और भक्ति के ऐश्वर्य में मस्त रहता है। पाण्डवों को देखो, कितने एवम् कैसे संकट उठाये पर कृष्ण में उनका विश्वास तिल मात्र भी कम नहीं हुआ। स्मरण रहे वस्तु एक ही है किन्तु नाम में भिन्नता है। जो ब्रम्ह है, वही परमात्मा है, वही भगवान है। ब्रम्हज्ञानी उसे ब्रम्ह कहते हैं, योगी –परमात्मा कहते हैं, भक्त उसे भगवान कहते है।

संसार में रहने और संसार के कर्म करने में कोई दोष नहीं। केवल दासी के समान मन–भाव रहना चाहिये। दासी सब कार्य करती है, पर किसी को अपना नहीं कहती है। सभी काम अलिप्त भाव से करना चाहिये। चिन्ताओं और दुःखों का रूक जाना ही ईश्वर पर पूर्ण निर्भर रहने का सच्चा स्वरूप है।

5. आनन्द

आत्म स्थिति मे न तो चिन्ता है न तो चिन्तन, वह आनन्द सागर है, न संकल्प, न इच्छा, न परिणाम, यह मुक्त या आनन्द अवस्था की उपलब्धि है। नित्य चैतन्य, अयं आत्मा, इसका बोध हमेशा बना रहे कि मैं आत्मा हूँ, जो बोध स्वरूप है जिसका रूप आदित्यवर्ण है। जितना और जब भी समय मिले उसी में रमें रहो। ऐसै परमात्मा परमानन्द के दर्शन हेतु भीतर से अकुलाहट होने पर ही सफलता शीघ्र सम्भव है।

Devote major portion of your time in Dhyan \Meditation of Guruji charan.

आत्माराम कैसे मिलते हैं? धैर्य से, विश्वास से,

''अगर है शौक मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा–– '' और अपने निष्कपट दिल को तू दुनिया से चुराता जा, न गंगा न जमुना, न करकट में ही खा गोते, लेकिन प्रेम के सागर में डुबकी तू लगाता जा।

''जब हम थे, तब तू नहीं, अब तुम हो हम नहीं''

''इस जग में कौन किसी का है स्वार्थ जिससे उसी का
कष्ट पड़ा और नाता टूटा, रिश्ता हंसी खुशी का
भाई, बाप, बेटा, और नारी, सब हैं बना, बनी का
कौन रहा, कौन रहेगा, है मेला चला, चली का
छोड़ के सब मिल बैठो, नहीं समय है तना, तनी का
जग वसुधा परमान है, बिरथा नहीं समय है एक किसी का
छोटा बड़ा जो दृष्टि आवे है, खाना काल बली का
उस राजा को रक जानो जो मृत माया ठगनी का
शहंशाह उस रंकं को समझो, जो अनुगामी हरि का''

1. एक क्षण भी अहं ब्रह्मस्मि् के न बीते ।
2. जल्दी से उत्तर न दों, सुनो, शब्दो को तौलो, सोच समझकर उत्तर दो, उसका रंग अपने ऊपर न चढ़े इसका ध्यान रखो।
3. इच्छायें कम करो, स्वस्वरूप अवस्था में रहो, मै मन को भूलो, कर्म तो प्रकृति करती है, किन्तु मैं करता हूँ, यह भाव आ गया तो बंध गये। सजीव ही जीव धारा को चलाने में समर्थ है।

पुस्तकीय ज्ञान से ब्रह्म की प्राप्ति असम्भव है। यह तो साधारणतया गुरूकृपा से ही प्राप्त होती है। पुस्तकें स्वयमेव जड़ है। उनसे हमें भावनायें प्राप्त होती हैं और उनके द्वारा बताये गयें रास्ते को आचरण में लाने पर ज्ञान होता है।

''देह मम् इति बन्धो नाहंम मम् इति मुक्तता''

कफन बाँधे हुये सिर पे तेरे कूचे में जा बैठा ।
हजारो ताने हम पर लगा ले जिसका जी चाहे ।।

जस मर्यादा जगत की बाधि दियो करतार ।
राजा, रंक, जती, सती, करत सोई व्यवहार।।

व्यवहार सोच समझ कर करना चाहिये, व्यवहारमय भाषा का प्रयोजन अपने आचरण में अनुकरणीय बनाना चाहिये। **सद्गुरू के मुकाबले में कोई पद नहीं, कोई श्रेष्ठ नहीं।** गुरूजी द्वारा संयम पालन पर विशेष बल दिया जाता है। संयम ही ब्रह्म है। आप भी संयम का पालन करें, वस्तुएं सम्भाल कर रखे, बाद में चिन्ता होगी, देखो कोई ले न जाये, ऐसा नहीं करना चाहिये, दोषारोपण नहीं करना चाहिये। जो बोलो तौल कर बोलो, शब्द में उत्तर न हो तो, मौन हो जाओ।

संख्या योग के आधार परम पूज्य श्री गुरूजी का जीवन

परम पूज्य गुरूजी का जन्म स्थान दक्षिणी अमेरिका में 23 जुलाई 1908को हुआ। गुरूजी की जन्म तारीख 23–7–1908 का योग किया जाय तो योगांक 3 बनता है। 3 का अंक गुरू अंक कहलाता है। गुरूजी जन्म के बाद साढ़े 11 वर्ष अमेरिका में रहे। 12 दिन का एक तप 12 वर्ष का एक तप (एक युग) कहलाता हे। गर्भवस्था से माने तो परम पूज्य श्री गुरूजी का एक युग अमेरिका में बीता। गुरूजी जन्म सिद्धयोगी हैं। उनके सम्पूर्ण जीवन में सांख्य योग का विशेष महत्व रहा है। दिशाओं के मान से मनन करें तो अमेरिका (दक्षिण) से भारत (पूर्व) की ओर अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर श्री गुरूजी की यात्रा रही। दक्षिण को वाम अर्थात विपरीत दिशा मानी जाती है। परम पूज्य गुरूजी अपने जीवनकाल के सम्पूर्ण प्रवास में सांख्य योग को लेकर चले जो कि आज प्रायः लुप्त होता जा रहा है।

विजयादशमी पर्व पर श्री गुरूजी भारत आगमन के पश्चात 3 दिन कलकत्ता में रहे। परम पूज्य श्री गुरूजी 3 वर्ष तक उत्तर प्रदेश के ग्राम कालूपुर (इलाहाबाद) में व्यतीत किये। 15 वर्ष की पूर्ण आयु में श्री गुरूजी का विवाह सम्पन्न हुआ ओर 8 दिन पश्चात श्री गुरूजी घर त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े। यह प्रथम अज्ञातवास 12 वर्षों का रहा जो कि विभिन्न स्थानों में साधना में बीता। अन्त में यह साधना प्रवास पसान के जंगलों में समाप्त हुआ। तत्पश्चात श्री गुरूजी महाराष्ट्र के औरंगाबाद में आये और वहाँ के जंगलों की गुफाओं में पुनः साधनारत रहे। श्री गुरूजी 35 वर्ष की आयु में अपने गृह–ग्राम कालूपुर में आये। 37 वर्ष की आयु में पुनः घर त्याग कर महाराष्ट्र के अकोला में डॉ. नन्दभारती के सम्पर्क में आये और 3 वर्ष अकोला में व्यतीत कर होम्योपेथी चिकित्सा पद्धति पर कार्य किया।

सन् 1940 में अकोला से परम पूज्य श्री गुरूजी तेल्हारा में आये और एक सफल होम्योपेथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में स्थापित हुए। 18 वर्ष तेल्हारा में रोगियों की सेवा कर 58 वर्ष की आयु में तेल्हारा छोड पुनः 3 वर्ष के लिए श्री गुरूजी अज्ञातवास में

रहे। (18 का अंक पूर्ण अंक माना गया है, 1+8 = 9, गीता में 18 अध्याय है, 18 पुराण हैं महाभारत का युद्ध 18 दिन तक चला)

सन् 1960 में परम पूज्य गुरूजी दुर्ग में एक संगीत शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए और संगीत के माध्यम से भी चिकित्सा संभव है, ऐसा प्रमाणित किया। 12 वर्ष अर्थात एक युग दुर्ग (छ.ग.) में निवासरत रहे और सन् 1973 में दुर्ग से पुनः भ्रमण हेतु निकल पड़े।

भ्रमण करते करते परम पूज्य श्री गुरूजी 1984 में मुँगेली आये जहाँ आश्रम की स्थापना हुई। 1973 से 1984 का यह प्रवास भी लगभग 12 वर्ष अर्थात एक युग का रहा। 1983 में मैं स्वयं अपने परिवार सहित परम पूज्य श्री गुरूजी की सेवा हेतु मुँगेली आया और अनेक प्रवासों में श्री गुरूजी के साथ रहा।

चूँकि परम पूज्य गुरूजी अपने जीवन काल में अपने गुरू–परिवार के बीच प्रवास पर रहे अतः मैं भी अनेक प्रवासों में श्री गुरूजी के साथ विभिन्न स्थानों में सन् 1986 से 1998 तक रहा अर्थात यह काल श्री 12 वर्ष का अर्थात एक युग रहा। श्री गुरूजी का प्रवास मुख्यतः ग्वालियर, भोपाल, रीवा, इंदौर, खडवा, पैन्ड्रा रोड, शहडोल, वर्धा, औरंगाबाद, अकोला आदि स्थानों का रहा।

मुझे स्मरण है कि ग्वालियर में श्रीमान बुआ साहब शिन्दे जी के यहाँ परम पूज्य श्री गुरूजी का प्रवास दशहरा पर्व मनाने के लिए रहता था। यह प्रवास 12 दिनों का होता था। भोपाल में डॉ. व्ही.ए.शिन्दे जी के यहाँ 40 दिन का प्रवास श्री गुरूजी का रहा। प्रवास के दिनों की गणना घर से निकलने के दिन से वापसी के दिन तक भी की जाती थी। अध्यात्मिक सिद्धियों के लिए 40 दिन की साधना का उल्लेख अनेक महात्माओं के जीवन परिचय में पाया गया है।

रीवा में डॉ. आर.पी. पाण्डेय जी के यहाँ 12 दिन का प्रवास श्री गुरूजी का रहा। यह प्रवास 23 जुलाई का पर्व मनाने हेतु था। रीवा में डॉ. व्ही.ए.शिन्दे जब मेडिकल कालेज में डीन के पद पर जब पदस्थ हुए तब भी श्री गुरूजी का प्रवास 12 माह का रहा।

इंदौर में भी श्री गुरूजी का प्रवास श्री बी.एस.भटजीवाले के यहाँ जो कि अधिकतम 40 दिनों का रहा और अंतिम प्रवास 3 दिनों का 1995 में रहा।

पेन्ड्रा रोड एवं खण्डवा में श्री गुरूजी श्री ओ.पी.शर्मा जी (बड़कुऊ) के यहाँ रहे। यह प्रवास अधिकतम 12 दिनों अथवा 3 दिन का रहा। जैसा कि पूर्व में लिखा गया है कि 12 दिन अर्थात एक तप तथा 3 अंक हमेशा गुरूओं के जीवन में विशेष महत्व रखता हैं

शहडोल में श्री गुरूजी डॉ. जानकी प्रसाद मिश्रा जी के यहाँ 40 दिन, श्री भैयालाल तिवारी जी के यहां 12 दिन और 23 जुलाई पर्व के निमित 3 दिन का प्रवास शहडोल मठ में रहा।

वर्धा में परम पूज्य श्री गुरूजी का प्रवास बाबा साहब तकवाले जी के यहाँ अधिकतम 40 दिनों का रहा। श्री प्रभाकर पाण्डे जी के यहाँ 12 दिनों का प्रवास रहा जो कि श्री गुरूजी

का वर्धा में अंतिम प्रवास था।

औरंगाबाद एवं अकोला में श्री गुरूजी का प्रवास श्री बसंत हिरण्य जी के यहाँ 40 दिन एवं 12 दिन का ही रहा। इस प्रकार ये सारे प्रवास सांख्य योग के अनुसार रहे जो कि आध्यात्मिक एवं साधना की दृष्टि से विशेष महत्व रखते है।

"सांख्य योग के आधार पर अंको का आध्यात्मिक विश्लेषण"

1. एक ब्रह्म
2. दो युग (गुरू) ब्रह्मान्ड में गुरू के व्याप्त होने का सूचक 2 अंक है
3. तीन – गुण (रज. तम्. सत्)
4. चार–अवस्था जागृत स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिय
5. पाँच – तत्व (महाभूत – पृथ्वी, जल, आकाश, हवा, अग्नि)
6. षटकोण (षटकोण में महाशक्ति विराजती है
7. सात स्वर (सा, रे, ग, म, प ध, नि)
8. आठ जोड (जीवन + मृत्यु

   8 के पहाड़े में संख्या घटने लगती है

   शरीर की आयु घटती जाती है

   8 x 2 = 16 (1 + 6 = 7)
   8 x 3 = 24 (2 + 4 = 6)
   8 x 4 = 32 (3 + 2 = 5)
   8 x 5 = 40 (4 + 0 = 4)
9. नौ ग्रह (महाशक्ति का अंक 9 है

   18 पुराण, 18 गीता के अध्याय (1 + 8 = 9)

   36 आहारनली 36 फीट लम्बा है

   72 – 72000 नाडियाँ है इस प्रकार 9 पूर्णांक है।

किसी भी नाम के अक्षरों का योग कर 4 गुना करके उसमें 5 जोड़कर 2 गुना कर यदि 8 से भाग दिया जाय तो शेष 2 बचेगा – 2 अर्थात दो युग (गुरू)

एक उजेड, एक अंधेर, दोन्ही मार्ग अनादी।

मार्ग सोडी तो एक, एक टीकातो फरचात।।

अर्थात :– जीवन में दो मार्ग हैं –एक उजाला दूसरा अंधेरा । दोनों मार्ग सनातन हैं । उजाला मार्ग (प्रकाशमय) जन्म मृत्यु फेरे से मुक्त करता है। अंधेरा मार्ग जन्म–मृत्यु के फेरे में डालता है।

1. देवयान मार्ग –विद्युत मार्ग 2. कृष्ण मार्ग –घूम्र मार्ग

इत्यलम्

अशोक वासुदेव तिवारी, मुंगेली, (छ.ग.)

स्वामी समर्थ रामदास जी महाराज

(भारत की महान विभूति)

ज्ञानविरहित जे जे केले। ते ते जन्मासि मूळ जाले। म्हणौनि सद्‌गुरूचीं पाउले। सुदृढ धरावी।।

दास बोध – 04.01.22

ज्ञान बिना जो कुछ भी किया वह बना जन्म का ही

कारण। इस कारण दृढ़भाव से पकड़े रहना है सद्‌गुरूचरण।।

भक्त म्हणिजे विभक्त म्हणिजे भक्त नव्हे। अणि विभक्त नव्हे। विचारे विण काहीच नव्हे। समाधान।।

दास बोध – 04.09.06

हैभ् ात्तव हीज ोन हीं विभक्ता विभक्तत ोभ् ात्तन हींह ोता।ा विचारक`ा बिनाा किसीप्र कारस` समाधानन ाा मिलप ाता।।

भारत के महान संत श्री समर्थ स्वामी रामदास अध्यात्मिक एवं राजनैतिक जागरण के लिए विख्यात् हैं। अतः उनका जीवन चरित्र एवं कृतित्व हम सब के लिए अनुकरणीय है।

रामदास जी के पूर्वज कृष्णाजी पंत ठोसर के पुत्र दशरथ पंत ने 932 ईसवी में "जांब" नामक ग्राम को बसाया, उसी जांब में 1608 ई. में रामजन्म अर्थात चैत्र शुद्ध नवमी के शुभ अवसर पर इस अद्‌भूत लोकोद्धारक राम के दास का जन्म हुआ। रामदासजी के पिता सूर्याजी पंत और माता राणूबाई को बालक नारायण के बाद में रामदास बने, की तेजस्विता का परिचय मिलने लगा था।

समर्थ बालपन में सदा प्रसन्नचित्त और हास्यवदन रहते थे। रोना तो वे कभी जानते ही न थे। वे बहुत शीघ्र बोलने और चलने लगे। शरीर सुदृढ़ और तेजस्वी था। वे बड़े नटखट और उपद्रवी थे। सदा खेलकूद में निमग्र रहते और क्षणभर भी एक स्थान में न रहते थे। चपलता उनके रोम–रोम में भरी हुई थी। बानर की तरह यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ फिरते रहना और अपने साथ के लड़कों को मुँह बिगाड़ कर चिढ़ाना भी उनका एक खेल था। उनके माता–पिता ने जब देखा कि, ये बहुत उपद्रव करते हैं तब उन्होने बाल समर्थ को भैयाजू के यहाँ पढ़ने को बैठा दिया। पर भैयाजू के यहाँ उस समय जितनी शिक्षा दी जाती थी उतनी शिक्षा का ज्ञान उन्होने थोड़े ही दिनों में कर लिया और फिर इधर उधर खेलने–कूदने लगे। गाँव के लड़कों को साथ लेकर गोदावरी के किनारे जाते और वहाँ वृक्षों पर, बन्दर की तरह, चढ़ जाते। एक डाल पर आना तो उन्हें बहुत सहज था। कभी–कभी वे किसी बड़े वृक्ष की चोटी पर चढ़ जाते। कभी कभी वे किसी बड़े वृक्ष की चोटी पर चढ़ कर उसे हिलाते थे। वृक्षों के फल स्वयं तोड़ कर खाते और अपने साथियों को खिलाते थे। कभी–कभी वे वृक्ष के ऊपर ही से नीचेवाले लड़कों को फलों की गुठलियाँ फेंक कर मारते थे। वृक्ष पर चढ़ने का उनका साहस देख कर सब लोग आश्चर्य करते। उनके साथी तो, उनको, वृक्ष पर चढ़ कर डाल हिलाते हुये देखकर, बहुधा चिलाया करते कि, "अरे! अब यह गिरा–गिरा!" पानी में ऊँचे पर से कूदना और तैरना भी उन्हें बहुत पसन्द था। इस प्रकार वे गाँव के बाहर खेला करते थे। इसके सिवाय, जितनी देर वे गाँव में रहते उतनी देर भी उनका यही हाल रहता था। कभी इस छप्पर पर से दीवार पर कूदते और कभी किसी वृक्ष पर से किसी के घर में कूद पड़ते! सारांश, उनकी बाललीला देखकर यदि लोग उन्हें हनुमानजी का अवतार समझते हैं तो कोई आश्चर्य नहीं। बहुत लोग समझते हैं कि जो लड़के बहुत खिलाड़ी और चपल होते हैं वे आगे, अवस्था के कुछ प्रौढ़ होने पर, बड़े प्रतिभाशाली निकलते हैं। समर्थ के विषय में भी यह अनुमान बहुत मिलता है। पाँचवें वर्ष में सूर्याजीपन्त ने उनका यज्ञोपवीत बड़ी धूमधाम के साथ किया।

यज्ञोपवीत के बाद उनके पिता ने उनकी शिक्षा के लिए एक वैदिक ब्राह्मण नियत किया। समर्थ ने उसी ब्राह्मण के पास, अपने घर में रहकर, उत्तम अक्षर लिखना, नित्य नैमित्तिक कर्म और कुछ संस्कृत का अभ्यास किया। उन्हीं दिनों में उनके पिता सूर्याजीपन्त का स्वर्गवास हो गया। दोनों भाइयों ने पिता का उत्तरकार्य किया। उस समय से समर्थ के ज्येष्ठ बन्धु गंगाधर उपनाम "श्रेष्ठ" उनके विद्याभ्यास में दृष्टि रखते थे। समर्थ के ग्रन्थों को देख कर यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि वे संस्कृत के पूर्ण पंडित थे तथापित "उपनिषद् और भागवत्" के समान कठिन ग्रन्थों से वे अच्छी तरह परिचित थे। इस बात का उल्लेख उन्होंने अपने "दासबोध" नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में, पहले दशक के पहले ही समास में किया है। उनके अध्ययन के सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है कि, उन्हें संस्कृत का अभ्यास अच्छी तरह समझने भर का ज्ञान अवश्य था। इसके सिवाय, उनका बहुश्रुत अगाध था।

समर्थ रामदासस्वामी यों तो बालपन ही से भगवद्भक्त थे; पर पिता के देहान्त होने पर उनमें और भी अधिक विरक्ति आ गई। समर्थ के ज्येष्ठ बन्धु श्रेष्ठ का उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं महाराष्ट्र के लोग जिस प्रकार समर्थ को हनुमान का अवतार मानते हैं उसी प्रकार उनके ज्येष्ठ बन्धु को वे सूर्य का अवतार समझते हैं। श्रेष्ठ भी, अपनी वंश परम्परा के अनुसार, श्रीराम के भक्त और उपासक थे। वे भी अनेक लोगों को मंत्रोपदेश देकर भक्तिमार्ग में प्रवृत्त करते थे। एक बार एक मनुष्य उनके पास मंत्र लेने के लिए आया। श्रेष्ठ ने अनुग्रहपूर्वक उसे मंत्रदीक्षा देकर भक्तिमार्ग का उपदेश दिया। यह देखकर समर्थ अपने बन्धु से कहने लगे कि, हमें भी आप मंत्र दीजिए। उनके बन्धु ने उत्तर दिया कि, आपकी उम्र अभी कम है। मंत्रोपदेश के लिए जो पात्रता चाहिये वह अभी आपमें नहीं है। इस प्रकार का उत्तर सुनकर समर्थ अपने ग्राम के बाहर, गोदावरी के किनारे, हनुमान के मंदिर में जाकर उनकी प्रार्थना करने लगे। कहते हैं कि, उनकी भक्ति और निष्ठा देख कर हनुमानजी ने, उनके ऊपर कृपा करके, दर्शन दिये और कहा कि आप अभी मंत्र पाने के लिए इतनी शीघ्रता क्यों करते हैं। परन्तु जब समर्थ ने उपदेश देने के लिए बहुत आग्रह किया तब हनुमानजी ने उन्हें वहीं रामचन्द्रजी का दर्शन कराया। रामचन्द्रजी ने उन्हें "श्रीराम जय राम जय–जय राम" इस त्रयोदशाक्षरी मंत्र का उपदेश दिया और आज्ञा दी कि सारी पृथ्वी में यवन छाये हुए हैं। अनीति का राज्य है, दुष्ट लोग अधिकारमद से मतवाले होकर साधुओं को सता रहे हैं। धर्म का ह्रास हो रहा है, इसलिए आप वैराग्य–वृति से कृष्णा–तीर रह कर उपासना और ज्ञान की वृद्धि करके, लोकोद्धार करें।" इस प्रकार श्रीराम से मंत्रोपदेश और आज्ञा पाकर बाल समर्थ को परम सन्तोष हुआ। उनकी माता और बन्धु को जब यह हाल मालूम हुआ तब वे अत्यन्त हर्षित हुए।

जिस प्रकार माता अपने पुत्र के लिए अनेक उत्साह की इच्छायें रखती है उसी प्रकार वह एक यह भी प्रबल इच्छा रखती है कि लड़के का विवाह शीघ्र हो जाना चाहिए। इसी नियम के अनुसार समर्थ की माता राणुबाई भी अपने पुत्र नारायण (बाल समर्थ) के विवाह की चिन्ता करने लगीं। विवाह की बातें सुनकर नारायणजी बहुत चिढ़ते और नाना प्रकार से विरक्ति व्यक्त करते थे। एक बार विवाह की चर्चा छिड़ने पर वे घर से भाग कर जंगल में चले गये। उनके ज्येष्ठ बन्धु श्रेष्ठ बहुत समझा बुझाकर उन्हें घर ले आये। उनकी यह चाल देखकर माता राणुबाई को बड़ी चिन्ता हुई। श्रेष्ठ अपने कनिष्ठ बन्धु नारायण की विरक्ति देखकर पहले ही समझ गये थे कि यह विवाह नहीं करना चाहता। उन्होंने अपनी माता को बहुत प्रकार से समझाया, पर वे बार–बार यह कहती कि नारायण का विवाह अवश्य होना चाहिए। अवसर पाकर एक दिन माता राणुबाई अपने नारायण को एकान्त स्थान में ले गईं और मुख पर हाथ फेर कर, बड़े लाड़ प्यार से बोलीं, ''अच्छा तो विवाह की बात चलने पर तू ऐसा पागलपन क्यों करता है?आपका कहना न मानेंगे तो मानेंगे किसका? कहा भी है न, ''मातुः परं दैवतम्'', यह सुनकर माता राणुबाई बोलीं, ''अच्छा तो विवाह की बात चलने पर तू ऐसा पागलपन क्यों करता है? तुझे मेरी कसम है, ''अन्तरपट'' पकड़ने तक तू विवाह के लिए इन्कार न करना।'' माता की यह बात सुनकर समर्थ बड़े विचार में पड़े। कुछ देर तक सोच विचार कर

उन्होंने उत्तर दिया, ''अच्छा, अन्तरपट पकड़ने तक मैं इंकार न करुंगा।'' भोली भाली बिचारी माता। समर्थ के दांव–पेंच उसे कैंसे मालूम होते! राणुबाई ने समझ लिया कि लड़का विवाह करने के लिए तैयार हो गया। उन्होंने जब यह बात अपने बड़े पुत्र श्रेष्ठ को बतलाई तब वे कुछ हंसे और प्रकट में सिर्फ इतना ही कहा, ''क्यों न हो!''

जब देखा गया कि लड़का विवाह करने के लिए राजी है तब सबकी सम्मति से एक कुलीन और प्राचीन संबंधी कुल की कन्या से विवाह निश्चित किया गया। लग्न तिथि के दिन श्रेष्ठ सारी बरात लेकर, बड़ी धूम–धाम के साथ कन्या के पिता के यहां पहुंचे। सबके साथ समर्थ भी आनन्तपूर्वक गए। सीमन्तपूजन, पुण्याहवाचन आदि लग्नविधि होते समय श्रेष्ठ और समर्थ, दोनों भाई, आपस में एक दूसरे की ओर देखकर, मन्द–मन्द हंसते जाते थे। कुछ समय के बाद अन्तरपट पकड़ने का अवसर आया। ब्राम्हणों ने मंगलाष्टक पढ़ना प्रारंभ किया। सब ब्राम्हण एक साथ ही 'सावधान' बोले। समर्थ ने सोचा कि मैं सदा सर्वदा सावधान रहता हूं, फिर ये लोग ''सावधान, सावधान'' कहते ही हैं, इसलिए इस शब्द में अवश्य कुछ न कुछ भेद होना चाहिए। मातुश्री की आज्ञा भी अन्तरपट पकड़ने तक की ही थी। वह भी पूर्ण हो गई। मैं अपना वचन पूरा कर चुका। अब मैं यहां क्यों बैठा हूं? मुझे सचमुच सावधान होना चाहिए– इस प्रकार मन में विचार करके समर्थ एकदम लग्नमंडप से उठकर भागे! कई लोग उनके पीछे दौड़े पर वे हाथ नहीं आए। इधर लग्नमंडप में बड़ा शौर गुल मचा। कुछ शांत होने पर, ब्राम्हणों ने लड़की का दूसरा विवाह कर देने के लिए शास्त्राधार सम्मति दी। समर्थ के भागने का हाल जब उनकी माता को मालूम हुआ तब वे बहुत दुःखित हुईं। श्रेष्ठ ने उनका समाधान किया और कहा कि आप कोई चिंता न करें। नारायण कहीं न कहीं आनन्द से रहेगा। मैं पहले ही कहता था कि उसके विवाह के प्रयत्न में न पड़ो। अस्तु, जो हुआ सो हुआ!

टाकलीम ेंत पश्चर्या

विवाह समय से सावधान होकर समर्थ पहले दो–चार दिन अपने गांव जाब की पंचवटी में छिपे रहे। वहां से वे नासिक पंचवटी को चले गए। आजकल रेलगाड़ी से यात्रा करने वालों को समय के प्रवास–संकटों का अनुमान नहीं हो सकता। सोचना चाहिए कि, बारह वर्ष के बालक को, शाके 1542 में (सन् 1620) में, जॉब से नासिक–पंचवटी तक, सैंकड़ों मील की यात्रा करने में, कौन–कौन और किस–किस प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ा होगा। भर्तृहरिजी ने ठीक कहा हैः–

मनस्वीक ार्याथींग णयतिन द ुखंन च स ुखम्।

कार्य करनेवाला पुरुषार्थी और साहसी महात्मा सुख–दुख की परवाह नहीं करता। इस प्रकार के महात्माओं के सुलक्षण बालकपन से ही झलकने लगते हैं। नासिक पहुंच कर पंचवटी में श्रीरामचन्द्र जी के दर्शन करके समर्थ वहां से पूर्व की ओर दो तीन मील पर टाकली नामक गांव में गए। वहां गांव के बाहर एक पुराने और विस्तृत वृक्ष के घनी छाया में कुटी बनाकर रहने लगे।

टाकली में रहकर समर्थ ने तप करना प्रारंभ किया। प्रातःकाल उठकर गोदावरी स्नान करने जाते और वहां दोपहर तक कटिपर्यन्त जल में खड़े होकर जप करते थे। दोपहर के बाद पंचवटी में मधुकरी–भिक्षा मांगने जाते और श्रीरामचन्द्र जी का नैवेद्य लगाकर भोजन करते थे। इसके बाद कुछ समय तक भजन करते और फिर सांयकाल होते ही जप और ध्यान में निमग्न हो जाते थे। उनका सब समय मंत्र, पुरश्चरण और भजन, अर्थात् ईश्वर अराधना में व्यतीत होता था। वे किसी से बात भी न करते थे और न किसी के घर जाते थे। पानी में खड़े रहने के कारण, कमर के नीचे सब देह गल कर सफेद हो गई थी। समर्थ का मन उस समय जप और ध्यान में इतना एकाग्र हो जाता था कि मछलियों के नोचने पर उन्हें कुछ मालूम ही न होता था। सच है, महात्मा लोग यदि देह के सुख–दुख की ओर ध्यान देने लगे तो उन्हें ईश्वर प्राप्ति कैसें हो?और वे जनोद्धार कैसें कर सकें?

श्रीस मर्थर ामदासर् वामी 47

इस प्रकार समर्थ ने बारह वर्ष तक नाना प्रकार की कठिन तपस्या की। अन्तःकरण की शुद्धि कठिन तपश्चर्या ही से हो सकती है। ''मन ही बन्ध और मोक्ष का कारण है।'' इस चंचल मन को, बिना तप किए, कोई अपने अधीन नहीं कर सकता। जो मन को जीत लेता है उसमें अद्भुत सामर्थ्य अवश्य आ जाता है। काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि मन के प्रमुख विकारों के अधीन होकर मनुष्य नाना प्रकार के दुष्कर्म करते हैं। तपश्चर्या करके शरीर को बलात् क्लेशित नहीं कर पाता तब तक, ईश्वर–प्राप्ति करने के मार्ग में अनेक संकट आकर विघ्न डालते हैं। अतएव सिद्ध है कि बिना तप किए–बिना कष्ट उठाए–परमात्मा–स्वरुप का ज्ञान नहीं हो सकता, मोक्ष नहीं मिल सकता अथवा स्वतंत्रता के दर्शन नहीं हो सकते। समर्थ स्वयं अपने अनुभव से 'दासबोध' में इसी कष्ट या तप की महिमा गाते हैं–

कष्टेंविणफ लन ाहीं।क ष्टेंविणर ाज्यन ाहीं।।

आधींक ष्टाचेंद ु:खस ोसिती।त`प ुढेंस ुखाचेंफ लभ ोगिती।।

कष्ट किए बिना फल नहीं मिलता, कष्ट किए बिना राज्य नहीं मिलता, जो पहले कष्ट (तप) के दुःख सहते हैं वे आगे सुख के फल भोगते हैं। अस्तु।

श्रीसमर्थ ने बारह वर्ष तक, बड़ी दृढ़ता के साथ, तप किया। इतने समय में उन्हें पुराने ऋषिमुनियों की तरह, अनेक बार बड़े–बड़े मायावी संकटों से सामना करना पड़ा, पर उन्होंने विघ्नों की कुछ भी परवाह न की। तप करते समय श्रीराम ने, कई बार दर्शन देकर, उन्हें यह आज्ञा दी कि ''तुम अब तपश्चर्या मत करो, कृष्णा–तीर जाकर जनोद्धार का काम प्रारम्भ करो।'' परंतु समर्थ ने यही दृढ़ प्रतिज्ञा कर लीक, जब तक पूर्ण रीति से मनोजय प्राप्त न हो जाएगा– जब तक शरीर में जनोद्धार करने के लिए सामर्थ्य न आ जाएगा– तब तक मैं उस कार्य में हाथ न डालूंगा, अन्त में जब उन्होंने देखा कि, अब मनोविकारों के लिए हमारे शरीर में स्थान नहीं है तब उन्होंने तपस्या बन्द कर दी। और टाकली में जिस कुटी में रहकर वे तपस्या करते थे उसमें हनुमानजी की मूर्ति स्थापित करके उसकी पूजा करने के लिए उद्भव गोस्वामी को नियत कर दिया। इसके बाद वे पैरों में पादुका, हाथ में माला, कांख में कूबड़ी और तुम्बा, मस्तक में टोपी और शरीर में कफनी पहनकर, तीर्थयात्रा तथा देश पर्यटन करने के लिए निकले।

तीर्थयात्राअ ौरद `शप र्यटन

जिस प्रकार तीव्र तपस्या करके मनोजय प्राप्त करने की आवश्यकता है उसी प्रकार लोकोद्धार या धर्मस्थापना करने के लिए देश पर्यटन करके स्वदेश स्थिति, और तीर्थयात्रा करके धर्म की दशा, जानने की भी जरुरत है। सारा देश घूमकर उद्धारकों को यह जानना पड़ता है कि, जन समाज की क्या दशा है और तीर्थों में जाकर इस बात की जांच करनी पड़ती है कि, स्वधर्म का हास करने वाले कौन–कौन कारण धर्मप्रचार में विघ्न डालते हैं। समर्थ ने सारे भरतखण्ड का प्रवास, उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक, पैदल ही किया, उनके पास एक फूटी कौड़ी भी न थी। उदरनिर्वाह हेतु उन्होंने भिक्षावृत्ति स्वीकार की। स्मरण रखना चाहिए कि भिक्षावृत्ति स्वीकार करने में केवल उदरनिर्वाह ही करना उनका मुख्य हेतु न था। भिक्षा की महिमा गाते हुए वे अपने ''दासबोध'' में कहते हैं :–

भिक्षाम् हणजे निर्भयस्थिति।भिक्षेनेप्र गटेम हंती।।

स्वतंत्रताइ 'श्वरप्राप्ती।भिक्षागुणे।।

भिक्षा निर्भय स्थिति है, भिक्षा से महंती प्रकट होती है और भिक्षा ही से ईश्वर मिलता है। इतना ही नहीं, उससे 'स्वतंत्रता' भी मिल सकती है। भिक्षा मांगने का हेतु केवल पेट भरना ही न हो, उसका यह हेतु हो कि, स्वदेश दशा का ज्ञान प्राप्त किया जाय तो इसके लिए निःसंदेह भिक्षावृत्ति से बढ़कर अन्य कोई

अच्छा साधन नहीं है। रामदास स्वामी, अपने अनुभव से इस विषय पर, दासबोध में एक जगह और कहते हैं। इस पद्य में वे मांगने का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट किए देते हैं–

कुग्रामेंअ थवान गरें।प ाहावींघ ारांचीघ ारें।।

भिक्षामिसेंल ाहानथ ाोरें।प रीक्षूनस ोडावी।।

कुग्राम हो चाहे नगर (शहर) हो, घर–घर देख डालना चाहिए और भिक्षा के ''मिस'' से छोटे बड़े, सब प्रकार के लोगों की, परीक्षा कर डालना चाहिए। ऐसा करने से लोगों के सुख–दुःख मालूम होते हैं। उनके ज्ञान का लाभ अपने को मिलता है और अपने विचार उन पर प्रकट करने का मौका मिलता है। आज कल हमारे देश में भिखारियों की कुछ कमी नहीं है, पर खेद है कि, समर्थ के मत के अनुसार, एक भी भिखारी देश में निकलना कठिन है। अस्तु।

नाना प्रकार के ग्रामों, नगरो, वनों और पर्वतों में घूमते हुए श्रीरामदास स्वामी पहले काशी जी में पहुंचे। वहां गंगास्नान करके, विश्वनाथ जी के दर्शन करने के लिए वे मंदिर में गए। वहां कुछ ब्राम्हण रुद्राभिषेक कर रहे थे। समर्थ का वेष, गेरुए रंग की कफनी और सिर पर जटा आदि देखकर उन ब्राम्हणों ने समझा कि यह कोई ब्राम्हणेत्र जाति का वैरागी है। उन्होंने समर्थ को लिंग के पास जाने नहीं दिया। समर्थ ने कहा, ''अच्छा है, श्रीरामचंद्रजी की इच्छा।' इतना कहकर वे जहां खड़े थे वहीं से, श्री विश्वेश्वर जी को, और सब ब्राम्हणों को साष्टांग प्रणाम कर वहां से लौट पड़े। उनके लौटते ही रुद्राभिषेक करने वाले ब्राम्हणों को, जिन्होंने मंदिर में जाने नहीं दिया था, विश्वनाथ जी का लिंग दिखाई नहीं दिया। इस कारण सब ब्राम्हण बहुत घबराए। परंतु अन्त में वे समझ गए कि, हो न हा, उसी वैरागी का चमत्कार है जिसका हमने अपमान किया है। उसमें से कुछ ब्राम्हण दौड़ते हुए बाहर गए और समर्थ से प्रार्थना करके उन्हें मन्दिर में ले आए। सब ब्राम्हणों ने पश्चाताप युक्त श्री विश्वनाथ की प्रार्थना की और रामदास स्वामी से क्षमा मांगी। थोड़ी देर के बाद फिर उन्हें लिंग यथावत् दिखाई देने लगा। समर्थ ने कुछ दिन तक काशी में निवास करके नाना प्रकार का अनुभव प्राप्त किया। वहीं से उन्होंने प्रयाग और गया की भी यात्रा की। काशीजी में एक घाट का नाम हनुमान घाट होने पर भी उसमें हनुमानजी की मूर्ति न थी, इसलिए उन्होंने वहां हनुमानजी की मूर्ति स्थापित की।

काशी से चलकर समर्थ अपने परम प्रिय इष्ट देव श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्याजी में गए। वहां सरयू नदी में स्नान करके श्रीराम और हनुमान आदि देवताओं के दर्शन किए। कुछ दिन वहां रह कर सरयू नदी में स्नान करके श्रीराम और हनुमान आदि देवताओं के दर्शन किए। कुछ दिन वहां रहकर अयोध्या–महात्मय का श्रवण किया। इसके बाद मथुरा, वृन्दावन, गोकुल आदि तीर्थ क्षेत्रों में स्नान, देवदर्शन और कुछ दिन रहकर संतसमागम, आदि करते हुए वे द्वारका जी की ओर पधारे। द्वारका में पहुंच कर श्रीनाथ जी के दर्शन किए, तीर्थ का विधि–विधान किया। पिंडार्क, प्रभास आदि क्षेत्रों में गए और वहां भी तीर्थ–विधि की। समर्थ ने अपने दासबोध में लिखा है कि चाहे जैंसा महंत हो, उसे आचार की शिक्षा देता है तो वह महन्त कैसा? वे कहते हैं कि तीर्थों में जाकर मुख्य देव को पहचानना चाहिए। जो लोग तीर्थ करते हैं, पर अन्तरात्मा को नहीं पहचानते–उसमें श्रद्धा नहीं रखते– उनके लिए तीर्थों में क्या रखा है?वहीं पानी और पत्थर की भेंट है! ऐसे लोग व्यर्थ के लिए तीर्थ करके कष्ट उठाते हैं! द्वारकाजी में समर्थ ने श्रीराम की मूर्ति स्थापित की और प्रभास क्षेत्र में, रामदासी सम्प्रदाय का मठ स्थापन करके, अनेक लोगों को भक्तिमार्ग में प्रवृत्त किया।

प्रभास क्षेत्र से चलकर, पंजाब के ग्राम–नगरों में घूमते हुए, श्रीरामदास स्वामी श्रीनगर पहुंचे। वहां नानकपंथी साधुओं से भेंट हुई। वे साधु अध्यात्मज्ञान में परम निपुण थे। जब कोई साधु उनके यहां आता तब वे वेदान्त विषयक प्रश्न उससे अवश्य पूछते थे। परंतु जो साधु उनकी शंकाओं का समाधान न कर

पाता था उसका वे उपहास कभी न करते थे। समर्थ का आगमन सुनकर वे उनके दर्शन के लिए गए और भक्तिपूर्वक कुछ अध्यात्म प्रश्न उनसे पूछे। जिन शंकाओं का उत्तर बड़े–बड़े अनुभवी साधु न दे सकते थे उनको श्रीसमर्थ ने, बात ही बात में, हल कर का उत्तर बड़े–बड़े अनुभवी साधु न दे सकते थे उनको श्रीसमर्थ ने, बात ही बात में, हल कर दिया। नानकपंथी साधुओं को उनका अध्यात्म निरुपण सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने रामदास स्वामी को, बड़े आदर के साथ, एक मास तक अपने यहां रख लिया। जब समर्थ वहां से विदा होने लगे तब उन सिक्ख–गुरुओं ने समर्थ से मंत्रदान के लिए प्रार्थना की। समर्थ ने कहा, ''आप लोगों के गुरु वही नानकजी हैं जिन्होंने मुसलमानों से भी राम–राम कहलाया है। वह उपदेश क्या तुम्हारे लिए कम है? नानकपंथ की सार्थकता करो!'' इतना कहकर समर्थ हिमालय की ओर चले। हिमालय में उन्होंने बदरीनाथ, केदारनाथ, और उत्तरमानस की यात्रा की। हिमालय के एक अति उच्च शिखर पर 'श्वेतमारुती' का स्थान है। वहां, शीत या हिम की अधिकता के कारण, कोई पुरुष नहीं जा सकता। श्रीयुत् शंकराचार्य जी वहां तक गए थे। श्री समर्थ भी वहां तक गए और हनुमान जी के दर्शन करके, कुछ दिन में, लौट आए। इस प्रकार उत्तर और पश्चिम की यात्रा पूर्ण करके, अनेक मनोरम तथा विकट स्थानों में घूमते हुए वे एकदम पूर्व की ओर जगन्नाथजी को चले।

जगन्नाथ पुरी में पहुंचने पर पद्मनाथ नामक एक ब्राम्हण समर्थ के शरण में आया। उसे मंत्र देकर समर्थ ने रामदासी सम्प्रदाय का उपदेश दिया और पुरी में श्रीराम की मूर्ति स्थापित करके, मठ की व्यवस्था उसी ब्राम्हण को सौंप दी। जगन्नाथ जी के दर्शन करके पूर्वी समुद्र के किनारे प्रवास करते हुए, वे दक्षिण में रामेश्वर को गए। वहां देव दर्शन और पूजन अर्चन करके समर्थ जी लंका तक गए। लंका में पहुंचकर उन्हें रामायणकालीन विभीषण और हनुमान आदि कुछ कविता रची। लंका से लौट कर वे आदिरंग, मध्यरंग, अंतरंग, श्रीजनार्दन और दर्शसेन आदि क्षेत्रों में जाकर देवदर्शन करते हुए गोकर्ण–महाबलेश्वर में पहुंचे। वहां कुछ दिन रूककर शेषाद्रि पर्वत पर गए, और फिर श्रीवेंकटेश, श्रीशैल्यमल्लिकार्जुन, बाल नरसिंह, पालक नरसिंह, शचोटी, वीरभद्र और पुराण–प्रसिद्ध पंचलिंगों के दर्शन करके किष्किन्धा नगरी में आए। वहां पम्पासर, ऋष्यमूक पर्वत आदि रामायण प्रसिद्ध स्थान देखकर, श्री कार्तिकस्वामी के दर्शन को रास्ते से, पश्चिमी समुद्र के किनारे होते हुए, महाबलेश्वर में आकर उन्होंने श्रीपंढरीनाथ भीमाशंकर के दर्शन किए और श्रीत्रयम्बकेश्वर को जाकर वे नासिक–पंचवटी में लौट आए।

इस प्रकार बारह वर्ष पैदल प्रवास करके श्रीसमर्थ ने विविध प्रकार के आधिभौतिक तापों का अनुभव प्राप्त किया, अनेक प्रकार के लोगों से मिले, भिन्न–भिन्न जनस्वभावों की परीक्षा की, भांति–भांति के सामाजिक, धार्मिक और राजकीय आचार–व्यवहार देखे, भिन्न–भिन्न प्रांतों के राज्य–प्रबंध का अवलोकन किया, नाना प्रकार से सन्तसमागम करके अध्यात्मज्ञान का रहस्य जाना और प्रकृति के अनेक चमत्कारिक और रमणीय दृश्यों का निरीक्षण किया। सारांश, स्वदेश– संबंधी सारी आवश्यक बातों का ज्ञान, देश–पर्यटन और तीर्थयात्रा करके, उन्होंने प्राप्त किया। इस सम्पूर्ण ज्ञान का परिपाक उनके ग्रंथों में हुआ है। विशेष कर उनका 'दासबोध' तो इसी प्रकार के अनुभव जन्य ज्ञान का समुद्र है। ऐसी कोई भी बात नहीं है जो उसमें न हो। स्थान–स्थान पर प्रकृति के मनोहर और अनूठे दृश्यों का प्रतिबिम्ब इस ग्रन्थ में मिलता है। उन दृश्यों के उदाहरण देने के लिए यंहा स्थान नहीं हैं।

पंचवटी में आकर समर्थ ने पंचगंगा का स्नान किया और श्रीरामचंद्र जी के दर्शन करके प्रार्थना की कि ''बारह वर्ष की तीर्थयात्रा करके मैंने आपकी कृपा से अनेक स्थानों में देवताओं के दर्शन किए, तीर्थ–सलिल से स्नान किए और नाना प्रकार के विधि–विधान किए– इन कर्मों का फलस्वरुप पुण्य मैं आज आपके चरणों में अर्पण करता हूं।'' विचार करने की बात है कि, समर्थ कितने निस्पृह महन्त थे, वे कैंसे कर्मयोगी थे। निष्कामकर्म करने का इससे अच्छा और कौन सा उदाहरण मिल सकता है? समर्थ अपने लिए

कुछ भी नहीं चाहते थे। वे जानते थे कि हम जो कुछ बुरा या भला काम करते हैं वह अपने लिए नहीं– उस ईश्वर के लिए करते हैं– उस आत्माराम के लिए करते हैं, और इसीलिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण धर्म–कर्मों का पुण्य आज राम के पवित्र चरणों में अर्पण कर दिया। श्री कृष्ण परमात्मा अर्जुन से कहते हैं–

यत्करोषिय दश्र्नासिय ज्जुहोषिद दासिय त्।

यत्तपस्यसिक ौंतेयत त्कुरुष्वम दर्पणम्।।27//

भ.गी.अ.9,

हे कौंतेय! तुम जो भोजन करो, जो हवन करो, जो दान करो, जो तप करो, (कहां तक कहें) जो कुछ करो, सब मुझे अर्पण करो। ठीक यहीबात समर्थ के आचरण में पाई जाती है।

पंचवटी से निकलकर समर्थ, पैठण गांव में एकनाथ महाराज की समाधि के दर्शन करते हुए, गोदावरी प्रदक्षिणा के लिए चले। मार्ग में जब वे गोदावरी नदी के किनारे अपनी जन्मभूमि जाब के निकट पहुंचे तब उन्हें अपनी माता और श्रेष्ठ बन्धु का स्मरण आया। इधर उनकी माता अपने प्रिय पुत्र नारायण के वियोग से बिलकुल व्याकुल हो गई थी। शोक के कारण रोते–रोते उनके नेत्र भी चल बसे थे। ऐसी दशा में उन्हें अपने नारायण का निजध्यास सा लग गया था। चौबीस वर्षों के बाद, समर्थ, भ्रमण करते हुए, अपने गांव में पहुंचे और हनुमान जी के दर्शन करके, अपने घर के प्रथम बड़े दरवाजे से आगे बढ़ कर उन्होंने ''जय–जय श्री रघुवीर समर्थ'' कह कर भिक्षा मांगी। उनकी माता ने, जो सामने दालान में बैठी हुई थीं, अपनी बहु (श्रेष्ठ की पत्नी) को आज्ञा दी कि वैरागी को भिक्षा दे आओ। यह सुनकर समर्थ, आगे बढ़कर, अपनी माता से बोले, ''अन्य वैरागियों की तरह भिक्षा लेकर लौट जाने वाला आज का वैरागी नहीं है।'' दूसरी बार समर्थ के बोलने पर माता ने उनका शब्द पहचान लिया और शीघ्र ही उठकर कहने लगी, ''क्या नारायण आया है?'' इतना सुनते ही रामदास स्वामी माता के चरणों में लिपट गए। माता और पुत्र दोनों के नेत्रों में प्रेमाश्रु की धारा उमड़ आई। माता राणुबाई जब अपने पुत्र के मस्तक और मुख पर प्यार का हाथ फेरने लगी तब उनके हाथ में बढ़े हुए जटाजूट और दाढ़ी का स्पर्श हुआ और वे बड़े आश्चर्य से बोली, ''अरे नारायण! तू कितना बड़ा हो गया। मेरी आंखों से तो कुछ सूझ नहीं पड़ता, अपने नारायण को कैसें देखूं? अपनी मां के ये दीन वचन सुनकर समर्थ का हृदय भर आया। उन्होंने ज्योंही अपना पवित्र हाथ माता के नेत्रों पर फिराया त्योंही उन्हें फिर पूर्ववत् सब कुछ दिखाई देने लगा। उस समय राणुबाई के सामने आनंद की लहरें उठने लगीं। उन्होंने आश्चर्यचकित होकर पूछा, ''बेटा! यह भूत–विद्या तूने कहां से सीखी?'' समर्थ ने तत्काल एक पद बनाकर इस प्रश्न का उत्तर दिया। उस पद का सारांश इस प्रकार हैः–

''जो भूत अयोध्या के महलों में संचार करता था, जो भूत कौशल्या के स्तनों में लगा था, जिस भूत के चरण का स्पर्श होने से पत्थर की स्त्री हो गई और जिस भूत ने और भी इसी प्रकार के अनेक चमत्कारपूर्ण कार्य किए वही सर्व महाभूतों का प्राणभूत मुझमें संचार करता है। यह विद्या उसी की कृपा का फल है।'' माता और पुत्र में इसी प्रकार का वार्तालाप हो रहा था, कि इतने में समर्थ के ज्येष्ठ बन्धु श्रेष्ठ भी बाहर से आ गए। समर्थ उन्हें देखते ही चरणों पर गिर पड़े। दोनों भाईयों ने आपस में प्रेम–पूर्वक आलिंगन किया। श्रीरामदास स्वामी कई दिन तक अपने घर में आनंद–पूर्वक रहे। प्रति दिन भोजन करके दोनों भाई एक साथ बैठते और अध्यात्मज्ञान विषयक वार्तालाप किया करते थे। समर्थ की बुद्धि का चमत्कार देखकर श्रेष्ठ को परम हर्ष हुआ। समर्थ जब अपनी माता से बिदा होने लगे तब माता ने बहुत शोक प्रकट किया। यह देखकर उन्होंने अपनी माता को वही आत्मबोध बतलाया जो भागवत् में कपिल मुनि ने अपनी माता को दिया है। उस बोध से माता राणुबाई को बहुत शान्ति मिली। इसके बाद रामदास स्वामी, अपने बन्धु से आज्ञा लेकर, गोदावरी–प्रदक्षिणा, के लिए आगे बढ़े। समुद्र संगम पर गोदावरी के सात प्रवाह हो गए हैं। प्रत्येक प्रवाह की दाहिनी ओर से परिक्रमा करते हुए वे दक्षिण किनारे पर गए। वहां से त्रयम्बकेश्वर में

गोदावरी के उद्‌गमस्थान पर जाकर, पंचवटी के दक्षिण की ओर पहुंचे और वहां श्रीरामचंद्र जी के दर्शन करके गोदावरी–प्रदक्षिणा पूर्ण की। इस प्रकार बारह वर्ष तप और बारह वर्ष तीर्थयात्रा तथा देश पर्यटन करके उन्होंने जनोद्धार करने का सामर्थ्य प्राप्त किया। इस समय उनकी आयु छत्तीस वर्ष की थी।

धर्मप्रचारअ ौरज नोद्धारक ाक ार्य

श्री समर्थ पहले पंचवटी से अपने तपस्थान टाकली को आए और वहां उद्‌भव स्वामी से भेंट करके, श्रीरामचन्द्र जी के आदेशानुसार, कृष्णा के तीर धर्मप्रचार और लोकोद्धार का कार्य प्रारंभ करने के लिए, वे दक्षिण देश को चले। पहले पहल वे महाबलेश्वर को गए। और वर्षा ऋतु के चार महीनों में वे वहीं रहे। वहां उन्होंने हनुमान् जी का मठ स्थापन करके अपना सम्प्रदाय बढ़ाया और अनेक लोगों को भजनमार्ग में लगाया। अनन्त भट्‌ट, दिवाकर भट्‌ट आदि कई विद्वान् वहां उनके शिष्य बने। महाबलेश्वर से चलकर, सतारा जिले में रामदासी सम्प्रदाय का प्रचार करते हुए, वे वाई क्षेत्र में पहुंचे और वहां कृष्णा नदी के तट पर, एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे रहने लगे। वाई क्षेत्र के पण्डित और शास्त्री उनका अध्यात्मज्ञान देखकर उनके शरण में गए और दीक्षा लेकर भजनमार्ग में लगे। वहां भी समर्थ ने हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की और मठ का प्रबंध एक शिष्य के अधिकार में कर दिया। वाई क्षेत्र से चलकर वे माहुली पहुंचे। वहीं गांव के बाहर, एक पहाड़ी के उपर, हनुमानजी के मंदिर में रहने लगे। प्रातःकाल उठकर वे कृष्णा नदी में स्नान करके संध्याआदि नित्यकर्म करते और दोपहर होने पर बस्ती में मधुकरी मांग कर भोजन करते थे। इसके बाद, फिर उसी पर्वत पर आकर भजन, जप और ध्यान में मग्न रहते थे। वहां कभी–कभी उनके समकालीन संतजन एकत्र होकर धर्म–चर्चा किया करते थे। प्रत्येक साधु अपने–अपने अनुभव की बातें बतलाता और सब मिल कर हरिभजन और कीर्तन करते थे। श्रीरामदासस्वामी का अनुपम सामर्थ्य देखकर उसी समय संत लोग उन्हें ''समर्थ'' कहने लगे। कुछ दिन माहुली में रहकर वे कन्हाड़ को चले गए। कन्हाड़ प्रांत में उनके अलौकिक चमत्कारों को देखकर अनेक लोग उनके शरण में आए। उस प्रांत के शाहपुर नामक ग्राम में उन्होंने हनुमान का मंदिर बनवाया और उसमें ''प्रताप मारुति'' की स्थापना करके उसका प्रबंध बाजीपंत नामक एक मुखिया को सौंप दिया। बाजीपंत ने सकुटुम्ब मंत्रोपदेश लिया। उनकी स्त्री सतीबाई समर्थ पर बहुत भक्ति रखती थीं। समर्थ ने कई प्रकार के भयानक चमत्कार दिखला कर सती बाई की परीक्षा ली पर बे बराबर अपनी भक्ति पर दृढ़ रहीं। यह देखकर समर्थ बहुत प्रसन्न हुए और कहते हैं कि उन्हें साक्षात् हनुमान का दर्शन कराया।

इस प्रकार धर्म का प्रचार करते हुए समर्थ चाफल नामक ग्राम के समीप पहुंचे। वहां वे पहले कई वर्षों तक वन–पर्वतों की दरी, खोरी और कन्दराओं में घूमते रहे। उस समय बस्ती में वे बहुत कम आते जाते थे। जब कभी वे लोगों के सामने निकलते तब अवधूत दशा में रहने के कारण लोग उन्हें पागल समझते थे। परंतु वास्तव में वे पागल नहीं थे, उनका चित्त अखंडरुप से भगवान् में लगा हुआ था। श्रीसमर्थ के दासबोध में उनके आत्मचरित का आभास कई स्थानों में पाया जाता है। एक समास में उन्होंने निस्पृह महन्त लोगों के बर्ताव का वर्णन किया हैं उसी समास में वे कहते हैं कि मैंने यह सब पहले किया है, फिर लोगों को बतलाया है। यह समास बड़े महत्व का है। चाफल में रहकर, पहले वे बहुत दिनों तक किस प्रकार धर्मप्रचार और लोकोद्धार का कार्य करते रहे– यह बात उक्त समास के पढ़ने से प्रकट होती है। इस समास के दो पद्य हम यहां उद्‌धृत करते हैं। उसमें पाठक गण यह अनुमान कर सकेंगे कि लोकोद्धार का प्रयत्न वे किस चतुराई के साथ करते थे।

उत्तमग ुणा ितुकेध यावे।घ ोउनज नासि शकवावे।
उदंडस मुदायक रावे।प रीग ुप्तरुपें।।18।।

अखंडक ामाचील गबग।उपासनेसल वावेंज ग।

लोकस मजोनम ग।अ ाज्ञाइ छिती।।19।।

दा.बो.द.11स`.10।

''उत्तम, गुण पहले स्वयं सीखकर फिर लोगों को सिखलाना चाहिए। प्रचण्ड समुदाय इकट्ठा करना चाहिए, पर गुप्त रुप से। काम कभी बन्द न करना चाहिए। सारे जगत को, सारे देश को उपासना में आत्माराम के भजन में लगाना चाहिए। लोगों को अपने कर्त्त्व का परिचय देना चाहिए, क्योंकि लोग जब जान लेते हैं कि यह सच्चा महंत है तभी आज्ञा पाने की इच्छा करते हैं।'' इस प्रकार चाफल में रहकर समर्थ ने हजारों शिष्य और सैकड़ों महन्त निस्पृष्ट तैयार किए और महाराष्ट्र के अनेक स्थानों में स्थापित किए हुए मठों में उन्हें नियत किया– इस प्रकार भजन और उपासना मार्ग की खूब वृद्धि करके समर्थ ने लोगों को स्वधर्म में प्रवृत्त किया। स्वधम्र की जागृति होते ही लोगों में स्वाभिमान और ऐक्य का अंकुर उठा। यवन या म्लेच्छ लोगों से, जिनका उस समय महाराष्ट्र में (या भारत भर में) अधिकार था, अपनी स्वतंत्रता और अपना धर्म बचाने की प्रचण्ड या तीव्र इच्छा लोगों के मन में जागृत हुई। इस प्रकार समर्थ रामदास स्वामी ने धर्म और स्वतंत्रता के विषय में उस समय विचार–क्रान्ति पैदा कर दी। यह सब हाल जिस दिन छत्रपति शिवाजी महाराज के कानों तक पहुंचा उसी दिन उनके मन में समर्थ के समान महात्मा का दर्शन करने के लिए तीव्र उत्कंठा हुई। पर वह दर्शन हो कैसे? समर्थ स्वयं पहले पहल उसके यहां जाने वाले न थे और न वे एक स्थान में रहते ही थे जो छत्रपति महाराज सहज में दर्शन कर सकते। अंत में जब शिवाजी को समर्थ–दर्शन–लालसा अनिवार्य हो गई तब वे स्वयं एक दिन अपने महल से निकलकर जंगल पहाड़ों में समर्थ की खोज करते हुए निकले। बड़ी कठिनाई से वन में एक औदुम्बर वृक्ष के नीचे शिवाजी को समर्थ के दर्शन हुए। वहां शिवाजी महाराज ने मंत्रोपदेश लिया। उसी दिन से सद्गुरु और मुमुक्षु–शुद्ध स्वातंत्रयेच्छुक शिष्य, दोनों मिलकर धर्म–प्रचार और लोकोद्धार का कार्य करने लगे। समर्थ और शिवाजी का संबंध नैसर्गिक, बड़ा गहन, विस्तृत और विचार करने योग्य हैं इस विषय का भली भांति विचार करने के लिए एक स्वतंत्र ग्रंथ या अनेक निबंधों की आवश्यकता है। उसका कुछ विवेचन हम आगे चलकर करेंगे।

इस प्रकार चाफल स्थान में रहकर समर्थ ने प्रचण्ड शिष्य–समुदाय इकट्ठा किया और वहां शाके 1570 (सन् 1648) में उन्होंने शिवाजी की सहायता से एक मंदिर बनवाकर श्रीरामचंद्रजी की स्थापना की। समर्थ के अनेक शिष्य और महंत उसी मठ में रहते थे। वे नाना प्रकार से श्रीराम का उत्सव करके धर्म की धूम मचाए रहते थे। समर्थ अपनी इच्छा के अनुसार, कभी मठ में रहते, कभी वन पर्वतों की गुफाओं में रहते और कभी मुख्य–मुख्य शिष्यों को साथ लेकर महाराष्ट्र प्रांत में धर्म–प्रचार करते फिरते थे। सारे काम करते हुए भी उनका मन अखंडरुप से आत्माराम में लगा रहता था। एक जगह वे स्वयं कहते हैं:–

दासड ंगरीर ाहातो।य ात्रद`वाचीप ाहातो।।

देवभक्तासवेंज ाती।ध्‍ यानरुपें।।

''दास (रामदासस्वामी) पर्वतों में रहता है, और वहीं से बैठे–बैठे, श्रीराम का बस्ती में निकला हुआ जुलूस देखा करता है। इतना ही नहीं, वह ध्यानरुप से देवभक्तों के साथ उस जुलूस में शामिल भी होता है।'' एक बार समर्थ कुछ शिषयों को साथ लेकर करवीर प्रांत में धम्र प्रचार करने गए। वहां अनेक स्थानों में उनके भजन कीर्तन को सुनकर लोग शरण आए। उस प्रांत के मुखिया ओर शिवाजी के सूबेदार पाराजीपंत ने दीक्षा ली। उनकी बहन समर्थ के भक्तिभाव को देखकर,अपने दो लड़कों के साथ समर्थ की सेवा में रहने लगी। उसके ज्येष्ठ पुत्र का नाम अम्बादास था। वह लिखने पढ़ने में बहुत तीव्र था, इसलिए समर्थ ने उसे अपना लेखक बनाया। यही अम्बादास समर्थ के मुख्य शिष्य और महन्त बनकर, कल्याण स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। समर्थ ने जितने ग्रंथ रचे वे सब कल्याण स्वामी ही के लिखे हुए हैं। समर्थ पद्य बोलते जाते थे

और कल्याणस्वामी लिखते जाते थे। चाफल के आसपास वन पर्वतों में बैठकर वे ग्रंथ रचना किया करते थे।

च्याफल के लोगों ने जब एक बार बहुत आग्रह किया तब वे पंढरपुर की यात्रा को गए। वहां विठ्ठलजी (श्रीकृष्ण) के दर्शन किए। समर्थ के उपास्य देव श्रीराम थे, इसलिए पंढ़रपुर में उन्हें अयोध्या की भावना होने लगी और विठ्ठल जी की मूर्ति उन्हें राममूर्ति सी दिखाई देने लगी। यात्रा से लौटने पर कुछ दिनों के बाद, छत्रपति शिवाजी के बहुत आग्रह करने पर समर्थ सातारा के समीप सज्जनगढ़ पर रहने लगे। वहां शिवाजी महाराज नित्य उनके दर्शन को आते थे। एक दिन समर्थ की माता और बन्धु का यह पत्र आया कि, बहुत दिन से भेंट नहीं हुई, इसलिए एक बार फिर मिल जाओ। शाके 1575 (सन् 1653) में रामनवमी के उत्सव पर वे फिर अपनी जन्मभूमि को गए और अपनी माता तथा बंधु के साथ कुछ दिन रहकर फिर सज्जनगढ़ को लौट आए।

शाके 1575 (सन् 1653) में वे सज्जनगढ़ से कुछ शिष्यमण्डली साथ लेकर तैलंग प्रांत में भ्रमण करते हुए रामेश्वर तक गए। तैलंग प्रांत में, कई मास रहकर, उन्होंने अपने सम्प्रदाय की बहुत वृद्धि की। तैलंगी भाषा सीख कर उन्होंने उस भाषा में भी अनेक कविताएं रचीं और उनका वहां प्रचार किया। अनेक प्रकार के अनोखे चमत्कार दिखलाकर बड़े–बड़े मानी पंडितों का गर्वगलित किया। अनेक पण्डित उनके शरण में आए और भजनमार्ग में लग गए। तंजौर में राजा व्यंकोजी (शिवाजी के भाई) ने समर्थ को अपने यहां एक मास तक बडे आदर से रखा और मंत्रदीक्षा ली। वहां भी समर्थ ने एक मठ स्थापित किया और उसमें सतीबाई के पुत्र भिकाजी बाबा को नियत किया। तंजौर से आगे चलकर वे रामेश्वर को गए। मंचल–क्षेत्र में अपूर्व चमत्कारों से लोगों को स्वधर्म की ओर लगाते हुए, समर्थ कुछ दिनों के बाद अपने पूर्वस्थान चाफल में लौट आए। उनका आगमन सुनते ही शिवाजी महाराज वहां उनसे मिलने आए और अपने साथ सज्जनगढ़ पर ले गए।

फुटकरब ातें

कुछ दिन के बाद उनकी माता का अन्तकाल आया। यह बात समर्थ ने अपने अन्तर्ज्ञान से पन्द्रह दिन पहले ही समझ ली। जिस समय उनकी माता ने अपने ज्येष्ठ पुत्र से कहा, ''मेरा नारायण अन्तकाल में यहां नहीं है।'' उसी समय वहां पहुंच कर समर्थ ने अपनी माता के चरणों पर सिर रखा। उन्होंने कहा कि, मैं अब आपके समीप आ गया, आप सुख और शान्ति से प्राण त्याग कीजिए। शाके 1577 (सन् 1655) में उनकी माता का स्वर्गवास हुआ। उनका उत्तर– कार्य हो जाने पर समर्थ फिर सज्जनगढ़ को लौट आए।

शाके 1580 (सन् 1658) में श्रीसमर्थ निजानन्दस्वामी के उत्सव में कर्‍हाड़ को गए। उत्सव–समाप्त होने पर वे लौट कर सज्जनगढ़ को आ रहे थे। उनके साथ पचीस तीस शिष्य भी थे। दोपहर के समय में भूख लगने पर समर्थ की आज्ञा लेकर शिष्यों ने कुछ जुआर के भुट्टे ही तोड़े और भूनकर खाने लगे। समर्थ भी शिष्यों के पास ही एक आसन पर बैठे थे। इतने ही में खेतों का मालिक दौड़ता हुआ आया और समर्थ को, सबका प्रधान समझकर, जुआर के डंठल से पीटने लगा। यह देखकर सब शिष्यों ने मिलकर उसे पकड़ा और मारने लगे। समर्थ ने कहा, उसे मारना उचित नहीं है– छोड़ दो। इसके बाद वह मालगुजार अपने घर चला गया और समर्थ, सब शिष्यों के साथ सितारे में शिवाजी के यहां चले आए। दूसरे दिन शिवाजी महाराज जब समर्थ को मंगल स्नान करा रहे थे तब उनकी पीठ पर मार की बड़तें शिवाजी को दिखाई दी। उन्होंने समर्थ से इस विषय में पूछा, पर कुछ उत्तर नहीं मिला। भोजन के बाद जब श्रीसमर्थ शयनागार में विश्राम कर रहे थे तब, बहुत प्रयत्न करने पर, एक शिष्य से शिवाजी महाराज को मार्ग का सब समाचार मिला। उस मालगुजार की मूर्खता पर शिवाजी महाराज को बहुत क्रोध आया। उन्होंने अपने

नौकरों को आज्ञा दी कि, उस मालगुजार को, मुरकें बांधकर, अभी ले आओ। समर्थ शयनागार में पड़े हुए थे सब बातें सुन रहे थे। उन्होंने शिवाजी महाराज को अपने पास बुलाकर कहा कि उस मालगुजार को बंधवा कर मत बुलाओ और मारपीट मत करो। इसके अतिरिक्त जो दण्ड हम कहें वही उसे दो। शिवाजी ने समर्थ की आज्ञा शिरोधार्य की। दरबार लगने पर वह मालगुजार उपस्थित किया गया। वहां आने के पहले ही उसे मालूम हो गया था कि, जिसे उसने साधारण वैरागी समझ कर पीटा था वे छत्रपति शिवाजी महाराज के मान्य गुरु समर्थ श्रीरामदासस्वामी हैं। दरबार में आते ही उसने समर्थ को दिव्य और उच्च सिंहासन पर बैठे देखा। वह बिचारा भय के कारण कांपने लगा और समर्थ के चरणों पर गिरकर रोने लगा। समर्थ ने आशीर्वाद किया कि, तेरा खेत तेरे लिए अच्छा फलेगा। इसके बाद वह उठकर शिवाजी के पैरों में लिपट गया और क्षमा मांगने लगा। समर्थ के आज्ञानुसार उन्होंने उसके अपराध को क्षमा किया और वह खेत, उस मालगुजार को वंश परम्परा के लिए दे दिया। यह देखकर दरबारी लोग आश्चर्य करने लगे। सच है, क्यों न आश्चर्य करें?उपकार का बदला, उपकार के द्वारा देनेवाले बहुत लोग हैं, पर अपकार करने वाले पर भी उपकार करने वाले केवल संत हैं। महात्मा तुलसीदास जी कहते हैं–

तुलसीस ंतस ुअम्बतरु,फ ूलफ लहिंप रहेत।
इततेज नप ाहनह नें,उ ततेव`फ लद`त।।

वह समर्थ के नाम पर पाया हुआ खेत, उस मालगुजार के वंश में, अब भी कायम है। धन्य है यह क्षमा और उदारवृत्ति।

समर्थ रामदासस्वामी के बन्धु श्रेष्ठ ने भी, गृहस्थाश्रम में रहकर, भक्तिमार्ग का बहुत प्रचार किया। उन्होंने ''भक्तिरहस्य,'' ''सुगमउपाय'' और कुछ फुटकर कविताएं लिखीं। जब उन्हें मालूम हुआ कि अब उनका अंत समय समीप है तब उन्होंने एक पत्र लिखकर समर्थ के पास भेजा और अपनी जन्मभूमि जॉब को गए और एक मास तक अपने बन्धु के निकट रहकर लोट आए। उनके लौट आने पर कुछ दिनों के बाद शाके 1599 (सन् 1677 ई.) में श्रेष्ठ का स्वर्गवास हो गया और उनकी पत्नी अपने पति को गोद में लेकर सती हो गईं। यह समचार सुनकर समर्थ ने, एक शिष्य को भेजकर, श्रेष्ठ के दोनों पुत्रों को अपने पास बुला लिया। यह हाल जब शिवाजी महाराज ने सुना तब वे समर्थ के समीप आए और इच्छा प्रकट की कि, जॉब रियासत में और बहुत से गांव लगाकर उसका स्थायी प्रबंध कर देना चाहिए। समर्थ ने कहा कि, अभी कोई जरुरत नहीं है, फिर देखा जाएगा। इस पर शिवाजी बहुत दुःखित होकर बोले, जान पड़ता है, श्रीराम की सेवा करना मेरे भाग्य में नहीं लिखा। यह सुन कर समर्थ ने कहा, अच्छा अभी कुछ थोड़ा प्रबंध कर दो जिससे सम्प्रदाय का खर्च और श्रीराम के उत्सव प्रति वर्ष उचित रीति से होते रहें। आज्ञा पाने पर शिवाजी ने 33 गांव और प्रति वर्ष के लिए 121 खंडी गल्ला लगा दिया। यह रियासत अभी तक श्रेष्ठ के वंशजों के अधिकार में है। हर साल कई उत्सव और सदा सर्वदा संत–समागम उसी रियासत के खर्च से होता है। धन्य है श्री शिवाजी महाराज के समान राजाओं की उदारता! अस्तु। एक साल तक श्रेष्ठ के पुत्रों को अपने पास रखकर समर्थ ने उन्हें अनेक प्रकार की शिक्षा दी और फिर घर भेज दिया।

शाके 1602 (सन् 1680) चै.शु. 15 रविवार को शिवाजी महाराज स्वर्ग को पधारे। यह समाचार सुनकर समर्थ को अत्यंत शोक हुआ। शोक क्यों न हो? शिवाजी ही के लिए रामदास स्वामी का अवतार हुआ। शिवाजी स्वयं रुद्र या शिव के अवतार माने जाते हैं। शिवाजी और समर्थ का सम्बंध नैसर्गिक था। परस्पर एक दूसरे की सहायता से, धर्म प्रचार और लोकोद्धार का कार्य पूर्ण करके स्थापना की। शिवाजी के वियोग के कारण समर्थ ने बाहर निकलना बिलकुल छोड़ दिया। वे अपने कमरे में ही रहकर भगवत् चिन्तन में मग्न रहते थे। सम्भाजी के राज्याभिषेक–उत्सव में श्रीसमर्थ ने स्वयं न जाकर अपने एक महन्त को भेज दिया। कुछ दिनों के बाद सम्भाजी के घोर साहसिक कर्मों का हाल सुनकर उन्होंने एक उपदेशपूर्ण पत्र

लिखा, यह पत्र बड़े महत्व का है। उसे देखने से समर्थ के राजनीति– सम्बन्धी ज्ञान का अच्छा परिचय मिलता है। परंतु सम्भाजी महाराज उस समय कुसंगति में इस प्रकार फंस गए थे कि, उन्होंने समर्थ के उपदेश से कोई लाभ नहीं उठाया।

समर्थक ा निर्वाण

शाके 1603 (सन् 1681) के रामनवमी–उत्सव पर समर्थ चाफले को गए और वहां मंदिर में अपने प्रिय उपास्य देव श्रीराम के दर्शन किए और हनुमान जी की आज्ञा लेकर, शिविकारुढ़ हो, सज्जनगढ़ को लौट आए। अन्तकाल समीप जानकर कई दिन पहले से उन्होंने अन्न का त्याग कर दिया, केवल दूध पीकर रहने लगे। उस समय यद्यपि उनका तेज बढ़ता जाता था, तथापि शरीर–क्षीणता बढ़ती ही जाती थी। इस प्रकार कुछ दिनों के बाद माघ–कृष्ण अष्टमी का दिन आ पहुंचा। उस दिन समर्थ की इच्छा हुई कि, अब इस बात की परिक्षा करनी चाहिए कि, हमारे शिष्यों में से किसी को हमारा अन्तिम दिन मालूम है या नहीं। इसी विचार से उन्होंने अपने सब शिष्यों के सामने यह अर्धश्लोक पढ़ाः–

रघुकुलतिलकाचाव`लस न्नीधअ ाला।
तदुपरिभ् ाजनानेंप ाहिजेस ंगक`ला।।

रघुकुल तिलक का समय निकट आ गया है, इसलिए बड़ी सांगोपांग भजन करना चाहिए। यह सुनकर उद्धवस्वामी ने तुरंत ही उस लोक की पूर्ति इस प्रकार की :–

अनुदिनन वमीह`म ानसीअ ाठवावी।
बहुतल गबगीनेंक ार्य-सिद्धीक रावी।।

अन्तिम दिन नवमी का स्मरण रखना चाहिए और बड़ी शीघ्रता से कार्य–सिद्धि करनी चाहिए। यह श्लोकार्थ सुनकर समर्थ बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सब भजन (भक्ति–पद–गान) करने की आज्ञा दी। अष्टमी के दिन रात भर भजन की धूम मची रही। सब शिष्य जमा हुए। नवमी का दिन आया। उस दिन समर्थ स्वयं पलंग से नीचे उतर कर बैठ गए। उस समय उन्होंने, शिष्यों के बहुत आग्रह करने पर, कुछ मिश्री और दाख खाकर, थोड़ा सा निर्मल जलपान किया। थोड़ी देर के बाद शिष्यों ने पलंग पर बैठने के लिए उनसे प्रार्थना की। समर्थ ने कहा, ''मुझे, पलंग पर उठाकर, रखो।'' यह आज्ञा पाकर उद्धवस्वामी उन्हें उठाने लगे पर वे उनसे नहीं उठ सके। यह देखकर आकाबाई नामक समर्थ की शिष्या भी उद्धवस्वामी के साथ उन्हें उठाने लगीं, पर तब भी वे नहीं उठे। अन्त में करीब दस मनुष्य मिलकर उन्हें उठाने का प्रयत्न करने लगे पर विफल हुए। इसके बाद समर्थ ने सब को अलग होने की आज्ञा दी। लोगों के हटने पर जब वे वायु आकर्षण करने लगे तब सब शिष्य चिल्ला–चिल्ला कर रोने लगे। समर्थ ने उनसब से कहा, 'आज तक हमारे पास रहकर क्या रोना ही सीखे हो? शिष्यों ने कहा, ''सगुण मूर्ति जाती है, अब भजन किसके साथ करेंगे और बोलने चाहे वह ''दासबोध'' आदि हमारे ग्रन्थ पढ़े। उन्हें पढ़ना मानों प्रत्यक्ष मुझसे बातचीत करना है।'' इतना कहकर ग्यारह बार ''हर–हर'' शब्द का उचारण किया और अन्त में ''राम'' शब्द के उच्चारण करते ही समर्थ के मुख से तेज निकल कर, समीप स्थापित की हुई राममूर्ति के मुख में, प्रविष्ट हो गया। भजन बराबर हो रहा थौ उस समय भजन की ध्वनि और बढ़ गई। इस प्रकार शाके 1603 (सन् 1682 ई. के फरवरी में) माघ कृष्ण 9 के दिन (संवत् 1738 फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की नवमी को) महाराष्ट्र प्रान्त का एकमात्र सिद्धरत्न, साधुराज, चातुर्यसागर, राजनीतिज्ञ–शिरोमणि, भक्तिज्ञान, वैराग्य का प्रत्यक्ष स्वरुप और निस्पृह महात्मा 'राम' में लीन हो गया! और 'दासबोध' में अनेक स्थानों में कहे हुए अपने इस वाक्य

को अक्षरशः सत्य कर गया कि :–

..................................।ह रिभक्तिसस ।दह ।वें।

मरोनक ीर्तीसउ रवावें।. ....।।13।।द .12स ं. 20

''सदा हरिभक्ति में तत्पर रहना चाहिए और मरने के बाद कीर्तिरुप से सदा जगत् में जीवित रहना चाहिए।'' हे सद्गुरु समर्थ! आप अपने इसी वचन के अनुसार कीर्तिरुप से और आत्मस्वरुप से भी–अमर हैं। केवल आप ही अमर नहीं है।, किन्तु असंख्य लोगों को आप अपने आदर्श से अमर कर चुके हैं, अमर कर रहे हैं और अमर करेंगे। जब तक इस आर्यावर्त में धर्म का नाम है– जब तक हिन्दुओं को ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास है, और जब तक इस पवित्र भूमि में 'महाराष्ट्र' के नाम पर भारतवासियों को अभिमान है, तब तक आप और आपका उपदेश, इस पृथ्वी पर, अटल, अचल और अमर है।

सद्गुरू प्रवचन के उत्प्रेरक अंश

(1)

मैं शिष्य नहीं बनाता, जिसको चेला कहते हैं , अनुयायी नहीं बनाता, अपने जैसा तैयार करता हूँ। बनाना क्या? वो तो बना बनाया है। साधना की तीव्रता – मन्दता से वे आगे बढते चले जाते हैं। अष्ट सिद्धि, नव निधि सब उन्हें प्राप्त हो जाती है। वे समर्थवान हो जाते है। वे होनी को अनहोनी, वा अनहोनी को होनी करने में समर्थ होता है। वे शाप व वरदान देने में समर्थ होता है।

(2)

सबके अन्दर वो सूर्य रूपी आत्मा / परमात्मा समान रूप से विराजमान है, विकार रूपी बादल से आच्छादित है। ध्यान –योग अभ्यास से विकार रूपी बादल हटता है, विकार रूपी बादल हटा तो सूर्य रूपी आत्मा प्रगट।

बुद्धि आत्मा के योग से सूक्ष्म होती है, तीक्ष्ण/पैनी होती है। बुद्धि की सूक्ष्मता की सीमा आत्मसाक्षात्कार की अवस्था है। आत्मसाक्षात्कार के बाद मैदान में उतरो कोई हाथ नहीं पकड़ता।

श्री राजू काण्णव, वर्धा, द्वारा प्रेषित

(3)

शास्त्र के प्रयोजन एवं उद्देश्य को अध्ययन व अभ्यास कर पहले स्वयं आचरण/व्यवहार में लाएं, तत्पश्चात् घर–घर, गाँव–गाँव ,देश–देश जाकर अध्ययन वा अभ्यास करा कर आचरित करायें उसे ही आचार्य कहा गया है, व यही मानव धर्म है।

(4)

सत्य बोलो, उतना ही बोलो, जितनी जानकारी है, उतना ही बोलो, जितना आवश्यक है। जैसे का वैसा बोलना, बनाकर नहीं बोलना, बिगाड़कर नहीं बोलना।

(5)

भक्ति–भक्त, भगवन्त, गुरू नाम चार वपु एक ।
जिनके सुमिरन ते किए विनशै विघ्न अनेक ।।

(6)

दुनिया भर में देवी–देवता, भगवान खोजने के बजाय अपने आप को खोजो–जानो, अपने आप को जान लेने पर सब जानने में आ जाता है, सब प्राप्त हो जाता है। यहाँ आकर बार–बार प्रणाम करने से मैं खुश नहीं होता, जैसा बताया गया है, वैसा करने वा रहने वाले सें खुश होता हूँ।

(7)

सहज–सहज सब कोई कहै, सहज न चिन्हे कोय ।
आठो पहर भीनी रहे, सहज कहावत सोय ।।

राम के संबंध में सुनना हो तो हमारे देश में अनेक विद्वान हैं, उनके पास जाइए, हाँ, राम को पाना हो तो यहाँ बैठिये, लेकिन याद रखिये, वह अपने सिर की कीमत पर मिलता है।

(8)

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दोऊ न समाय।
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नहीं ।।

प्रेम भक्ति जो ऐसा चाहिये, शीश दक्षिणा देत।
लोभी शीश न दे सकै, नाम प्रेम का लेत।।

(शीश दक्षिणा यानि शरणागत होना)

(9)

राम नाम को छाँडिके, करे और का जाप ।
वैश्या केरा पुत जो, कहे कौन को बाप ।।

(राम अर्थात आत्माराम जे रमन्ते योगिनो हृदये अस्मिन् सः रामः)

राम झरोखें बैठकर, जग का मुजरा लेत।
जिसकी जैसी चाकरी, उसको वैसा देत।।

कामी पीयारी नारी जीमी, लोभी के प्रिय दाम।
तिमी 'रघुनाथ' निरंतर प्रिय लागे मोहें राम।।

(10)

घीरज, धर्म मित्र, अरू नारी ।
आपतकाल परिखिरही चारी ।।

साधु ऐसा चाहिये , दुःखै दुखावय नाहीं।
फुल– पान तोड़य नाहीं, रहैय बगीचा माहीं।।

(11)

हम किसी पर उपकार नहीं करते, जो करते हैं अपने लिये करते है।
कर भला तो हो भला, कर बला तो हो बला ।

मनुष्य जो बोता है वही पाता है , एक दाना बोता है मुट्‌ठी भर पाता है।

प0 पू0 गुरूजी कहते थे– प्रेम में मेरा लगोंट उतार के ले जावों, व टेढ़े हाथ तो लगा दो।
बिन माँगे मोती मिले। माँगे मिले न भीख ।।
जो समाज से विभक्त हो, वह भक्त नहीं हो सकता, भक्त वही है जो समाज से जुड़ा हो।

चिंता से चतुराई घटे। दुःख से घटे शरीर ।।
पाप से लक्ष्मी घटे । कह गये दास कबीर ।।

एक चुल्लू मयस्सर नहीं डूबने को है न जिनको ।
वे खड़े हमको समन्दर का पता बतला रहे हैं।

गुरू ब्रम्हा गुरूर्विष्णु र्गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूदेव परमब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अर्थात ब्रम्हा, विष्णु, व महेश का जो गुरू है, वह परमब्रम्ह ही है । मैं उस गुरू /परमब्रम्ह की शरण लेता हूँ , उस परमब्रम्ह को नमन करता हूँ। वह गुरू ही है मैं नहीं।

जिनकी निष्ठा एकमात्र श्री गुरूजी पर हो, श्री सद्‌गुरू पर भक्ति अव्यभिचारिणी हो अर्थात जो एक मात्र सद्‌गुरूजी को ही अपना गुरू मानते हो, दूसरा और किसी को भी नहीं व उनके मार्गदर्शन पर चल रहें हों या चलना चाहें, उनके लिये ये आश्रम है। वे सब गुरू परिवार है। चाहे किसी को श्री सद्‌गुरूजी का मार्गदर्शन/दीक्षा किसी भी माध्यम या रूप से प्राप्त हो। यहाँ माध्यम गुरू नहीं है। वह केवल निमित्त मात्र है, गुरूजी ही एक मात्र सद्‌गुरू है।

अव्यभिचारिणी भक्ति– जैसे एक हिन्दुस्तानी महिला एक पति के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है। दूसरे के प्रति स्वप्न मे भी विचार नहीं करती, ऐसी सिर्फ एक पर निष्ठा हो, को अव्यभिचारिणी भक्ति कहते हैं।

प0 पू0 गुरूजी कबीर जी का यह वाक्य बोलते थे–
कबिरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।।
जो मानता है, उनके है
जो चलेगा, वह पहुँचेगा।
जिन खोजा तिन पाइयॉ गहरे पानी पैठ।
मैं बावरी ऐसी भई, रही किनारे बैठ।।

संकलनकर्ता– योगेश शर्मा, फोटोग्राफर, आमापाराचौक, रायपुर छ0 ग0

FAITH ON GURU

Param Pujya Guruji used to say if you have faith in God equal to a mustard seed you can move. the mountains. This divine sentence of Guruji calms the restless mind of disciple. Faith in your guru Prevents oscillation of mind to wander here and there in search of divine beings.

Let us know what is faith. faith is sharadha or 'Bharosa'. Faith should be firm, unconditional and unquestionable. Firmness of faith should be line a rock. Physical or mental storms should not affect it. Unconditional faith implies that it is unaffected by favorable or unfavorable situations of life. Unquestionable faith implies there in no questions as to Why an How. There is complete surrender. With complete surrender you get positive attitude towards everything. Whatever good ro bad comes you are not bothered be caused you know Guruji will take care of you.

For firm faith your have to make an enternal relation with guru. Guru as Master, Father, Mother or guru as everyting. When you develop this divine relationship the faith becomes firm and there is total surrender.

Faith and devotion leads you to get tuned with your respected guruji. Fasten you mind and intellect in him and he will take you to the divine source. Thus faith deepens your meditation. For regular meditation you also require a disciplined body with disciplined life. A time comes when your faith in Guruji leads to deep meditation. The disciple totally surrenders himself to his guru and fixes his total devotion in him. The eternal faith helps him to get absorbed in his guru and in return guru takes care of him to overcome all the obstacles of the mind and body. Such a disciple does everything with his guru. He awakens with him, works with him and sleeps with his thought. In a nutshell he sees faith, breathes faith, and becomes nothing but devotion. Such a person is free from anger, hatred, greed and lust.

Thus faith in guru leads to/Devotion for guru/Meditation/Total peace.

So applied aspect of Faith is as follows:

1. United with love for the master.
2. Eternal worship for the master.
3. Follow the word of the master and act on his teachings.
4. Surrender and renouncing your work results.
5. Meditation

In the end I pray to Guruji to help to disciple to develop eternal faith.

Dr. Syeda Shinde, Bhopal

सद्गुरू संस्मरण

इस बार मुंगेली गुरूपर्व 23 जुलाई 2010 के अवसर पर गुरूजी ने अपने अनुभव/भाव लिखने की आंतरिक प्रेरणा दी थी। फिर सत्संग के दौरान श्री राजू काण्णव, श्री दिलीप मराठे, श्री मोहन देशपांडे जी ने भी यही दिनर्देश दिया कि भावों को लिखा जाएं।

इन दिनों एक विचार बार बार मन में आता है 23 अगस्त 2010 को डा. श्रीमती सईदा शिंदे एवं डा. शिंदेजी से मुलाकात हुई पहली ही मुलाकात में शिंदे दंपत्ति से बहुत अधिक प्रभावित हुई उनकी बात चीत में गुरूजी के लए अनौपचारिक अपनापन एवं श्रद्धा समर्पण के साथ एक ऐसा भाव प्रतीत हुआ जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है।

डॉ. शिंदे कहते हैं कि गुरूजी 500 वर्षो तक हमारे बीच है हम शिष्य लोगों के लिए गुरूजी आज शरीर में भले ही नहीं है किंतु गुरूजी की शरण में जो आज भी समर्पण भाव से है उनसे पूज्य गुरूजी दूर नहीं गए हैं।

कल गुरूजी ने विचार दिया है यदि हम गुरूजी को सतगुरू कहते हैं तो हमारा सदशिष्यपन कहॉ है गुरूजी की महिमा बढ़ाने में हमारा शिष्यत्व क्या योगदान दें रहा है? हम इस साधना विहीन जीवन को जीते हुए किसे तकलीफ दे रहे हैं हम स्वयं इस बात को गहनता से मंथन करें और गुरूजी के श्री चरणों में अहैतुकी भक्ति प्राप्त करने के लिए उठै और तत्पर हो जावें।

हम सभी गुरू परिवार के लोग गुरूजी के फोटो के सामने बैठे गुरू चर्चा में बहुत प्रेम एवं श्रद्धा से तल्लीन थे। राजू काण्णव बोले कि शब्द ब्रह्य है इस महत्व को गुरूजी की नपीतुली बातों से समझा जा सकता है। इसी संदर्भ में नंदा दीदी ने कहां कि यदि हम गुरूजी से कहते कि थोडा बहुत खा ले तो गुरूजी कहते कि थोडा या बहुत? दोनों कैसे हो सकता है?

गुरूजी वस्तुओं के उपयोग में बहुत किफायती थे वे कहते आधा ग्लास से थोडा कम पानी दें। मुझे आधा केला दें

श्री दिलीप मराठे ने जब गुरूजी उनके पास श्री नगर पधारे थे तब का जिक्र किया कि मैंने एक कोट भेंट किया था । बाद में मुंगेली में गुरूजी ने मराठे जी से कहा कि आपने मुझे एक कोट दिया था उसमें अब 1000 छेद हो चुके है बहुत सहज और सरल थे गुरूजी।

गुरूजी का आश्वासन है कि वे सदैव हमारे बीच है तो हमारा भी ये परम दायित्व है कि हमारी क्षुद्र प्राथमिकताओं को छोड परम सदगुरू की उपस्थिति का लाभ उठाएं अर्थात आत्मसाक्षात्मकार के लिए तत्पर होवे ध्यान साधना करें यही गुरूजी के लिए हमारी चरणों में भेंट है हमें ध्यान करना ही होगा जब यह एकमात्र पथ हमें गुरूजी ने प्रदान किया है कि परमतत्व इसी अस्तित्व में अंर्तनिहित है तो फिर भटकाव क्यों? हमें ध्यान करना ही होगा,

परम एकाग्रता हासिल करना होगी ताकि वह आत्म तत्व हमारे सामने प्रकट हो जाए।

भगवान बुद्ध ने कहा है तथागत गण केवल महान शिक्षक होते हैं। प्रयास स्वयं को करना होता है।

गुरूजी की प्रेरणा से आदरणीय श्रद्धेय शिंदे दंपत्ति से वार्ता के दौरान ध्यान साधना के लिए जो अनमोल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उसे बिंदुवार लिखना श्रेयस्कर है ध्यान के लिए बेठना कैसे शुरू करें –

1. नियमित रूप से बैठें – विचार, मन कहीं भी जाए सब छोड़कर शरीर के बैठाएं
2. निश्चित समय निश्चित स्थान पर बैठें।
3. पहले अवधि कम रखें लेकिन दृढता बढ़ाएं हिलना डुलना नहीं, धीरे–धीरे अवधि बढ़ाएं। दर्द या झुन–झुनी हो, कष्ट हो, यही सोचें कि गुरूजी की गोद में बैठ कर ध्यान कर रहें है, वही जानें।
4. ध्यान लगेगा तो जानेंगे कि जैसी दुनिया बाहर है वैसी ही एक शानदार दुनिया अंदर भी है ध्यान करते करते विचार शनैः शनैः कम होने लगेंगे।

   जब हम जन्म लेते है तो शुद्ध होते हैं किंतु धीरे–धीरे हमारी इन्द्रियों की वजह से एवं कर्मजन्य कारणों से संस्कारों की गठरी बनती है अतः पाँचों इन्द्रियों को अच्छे कामों में लगाएं, परनिंदा, परपीड़ा से बचे। हमारे जीवन का हेतु क्या है हमे दुनियां में कौन लाया है उसे खोजें – इस हेतु गुरूजी की आत्म कथा "दिव्याम्बु निमज्जन" का एक दो पृष्ठ रोज पढ़ें पढ़ने से पहले गुरूजी से प्रार्थना करे कि जो पढ़े उसका सारतत्व समझ में आए एवं बार–बार पढ़ें, हर बार नया अर्थ समझ में आएगा जो भी काम करें – गुरूजी से निवेदन करें कि गुरूजी यह काम हमारे साथ कीजिए फिर देखिए कैसा परिणाम मिलता है।
5. सकारात्मक नकारात्मक विचारों के भेद को जानें – गुरूजी से प्रार्थना करें कि नकारात्मक विचारों से दूर रखें एवं धीरे–धीरे सकारात्मक विचारों से स्वयं को भरते जाएं।
6. अपने बच्चों को इज्जत दें व गल्ती होने पर उन्हें प्यार से समझाएं, धीरज से समझाएं
7. बच्चों के बड़े हो जाने पर उनके जीवन में कम से कम हस्तक्षेप करें।
8. विचार बहुत शक्तिशाली होते है अतः सात्विक विचार व सकारात्मक बुद्धि सुखकारी है गलत विचार पुनः आपके पास ही वापस होता है।
9. मौन सर्वोत्तम है। यथा संभव कम बोलें।
10. युवा लोगों के लिए विश्वास दृढ़ विश्वास, बिना प्रश्न बिना शर्त के केवल

विश्वास यही उत्तम कुंजी है। गुरूजी के प्रति विश्वास परिणामों पर निर्भर नहीं करता चाहे अनुकूल चाहे प्रतिकूल केवल विश्वास ही अंतिम और उत्तम है।

11. मैं को अलग करो सदैव सतर्क रहो, Spiritual Thoughts हमेशा बने रहें। ह्रदय की गहराई से डूबकी लगाओ मिलेगा।

समर्पण भाव से ध्यान करें समय एवं स्थान का अनुशासन रखें। ध्यान के लिए किसी अनुभव एवं प्रत्याशा की अपेक्षा नही। ध्यान के अनुकूल समय प्रातः 4 से रोशनी तक, सुबह 11 से 12 तक, विस्तार में नहीं जाएं मध्यम मार्ग का अनुसरण करें।

- ❒ डायरी लिखें, अनुभव लिखिए।
- ❒ दृढ़ विश्वास रखें व अभ्यास करें।
- ❒ प्रतिदिन मंथन–विश्लेषण करें, अपनी प्रगति के लिए सतत् धन्यवाद।
- ❒ भूत भविष्य में नही – वर्तमान में रहें।
- ❒ व्यर्थ समय नष्ट नहीं करें।
- ❒ अहा! गुरूदेव! आपको प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम।

प्रतिभा मैथ्यूज, भोपाल

जीवन की अविस्मरणीय दोपहर

मैनें, सपत्नीक प्रातः 6 बजे 22 नवम्बर 1992 को श्री वासुदेव आश्रम बड़ा बाजार मुंगेली में परम पूज्य गुरूजी से दीक्षा ली।

मुंगेली तहसील में सिंचाई कार्यो के निरीक्षण हेतु प्रायः मुझे हर सप्ताह मुंगेली जाना होता था तथा परम पूज्य गुरूजी के दर्शन का लाभ व आशीष लेता रहा। उन दिनों परम पूज्य का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था फिर भी पू. गुरूजी ने मुझे आश्वासन दिया कि वे मेरे बिलासपुर निवास आयेगें। यह शुभ अवसर मार्च 1993 में आया।

परम पूज्य गुरूजी लगभग 11 बजे श्री अशोक भैया व श्री आर.के. दुबे के साथ नेहरू नगर (घसिया पारा) स्थित मेरे बंगले में प्रवेश किये तथा संध्या 5 बजे तक हम लोगों को अनुगृहित किये। पश्चात रात्रि विश्राम श्री आर.के. दुबे के निवास स्थान पर किये।

वह शुभ दिन जहाँ हम सब दिव्यज्योति से आलोकित रहे, श्री गुरूपद प्रक्षालन, गुरू पूजा, गुरू–भोजन का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। वह असीम आनन्द वाला दिन अविस्मरणीय है। उस दिन का फोटोग्राफ कवर पर मुद्रित है।

आर.एन.छलोत्रे, भोपाल

दिव्य ज्ञान

पू0 गुरूजी के पास जब भी मैं (उधवपुरी) दर्शन के लिये जाता, अकसर गुरूजी कहा करते थे कि जब भी आप आते हैं, मुझे कृष्णजी की उस लीला का स्मरण हो आता है, क्या –बत्ती पड़ी थी। उद्धवजी ब्रज में गोपियों, समस्त ब्रज वासियों को ब्रम्हज्ञान सिखाने गये थे, इस लीला को याद कर पू0 गुरूजी बहुत ज्यादा भाव विभोर हो जाते थे।

सन् 1986 से 90 के आसपास की घटना है कि प0 पू0 गुरूजी एक वैवाहिक कार्यक्रम मे शामिल होने इन्दौर गये थे। इन्दौर के विधानसभा अध्यक्ष के छोटे भाई श्री धारकर सा0 , दुनिया के जाने माने न्युरोलॉजिस्ट, अमेरिका से विवाह में सम्मिलित होने के लिये आये थे । पू0 गुरूजी की ख्याति सुनकर धारकर सा0 , पू0 गुरूजी से मिलने के लिये बहुत ही उत्सुक थे। जैसे ही पू0 गुरूजी विवाह स्थल में पहुँचे, यह बात हवा की तरह फैल गई कि पू0 गुरूजी पधार गये हैं। धारकर सा0 जी ने चरण स्पर्श किया, पू0 गुरूजी ने उन्हे प्यार से आशीष दिया। डा0 धारकरजी ने पू0 गुरूजी से निवेदन किया कि यदि मैं गाड़ी से आप को ले जाऊँ, तो यह मेरा सौभाग्य होगा, पू0 गुरूजी ने सहमति दे दी। जैसे ही चलना प्रारम्भ हुआ, धारकर सा0 ने गाड़ी की गति धीमी कर दी, ताकि ज्यादा से ज्यादा समय पू0 गुरूजी के साथ सत्संग करने को मिल जाये।

पू0 गुरूजी ने कहॉ– मुझे आपसे Brain के विषय में कुछ पूछना था। धारकर सा0 के साथ कुछ विशेष माइक्रोस्कोपिक रचना, उसके निर्माण, एवं कार्य के विषय में चर्चा हुई। चर्चा के दौरान ही धारकर सा0 ड्राइविगं सीट से बाहर निकलकर पू0 गुरूजी के चरण कमल पकड़ लिये, और कहॉ– कि गुरूजी, अभी तक इस रचना के संदर्भ में संजमेज जानकारी आई ही नहीं, परन्तु आपने तो उसके विषय में विस्तृत जानकारी दे दिये। डा0 धारकर सा0 ने पू0 गुरूजी से दीक्षा के लिये अनुरोध किया , और डा0 धारकरजी की दीक्षा सड़क पर वाहन के अन्दर बैठे पू0 गुरूजी द्वारा प्रदान की गई।

श्री सद्गुरू युगल चरणों में मेरा शत् शत् नमन्

उद्धवपुरी गोस्वामी, बिलासपुर छ0ग0

खून का रिश्ता

1. सदगुरू कृपा से सन् 1990 के दशक में मेरे घर के पीछे आबादी जमीन खाली पड़ी थी, घर में कच्ची लेट्रिंन थी। मन में आया कि पीछे एक मंजिल ज्यादा बनवा लूँ। काम प्रारम्भ करके टैंक तैयार हो गया। 1 सप्ताह बाद पीछे जैन समाज के सहधर्मियों द्वारा विरोध प्रकट किया गया कि आप काम बंद कर दीजिये, जमीन हमारी है। मैंने अपने सगे भाईयों से चर्चा की, किसी ने साथ नहीं दिया। मैने काम

आगे बढाया, इसी बीच पड़ोसियों द्वारा मुझे मारने की योजना बनाई। लगभग 200 लोग मेरे दरवाजे पर खडे हो गये। मैने दरवाजा बंद कर लिया, फिर भी उनका अभद्र व्यवहार चलता रहा। मेरे बड़े पुत्र 18 वर्षीय विनीत ने कहा, पापा मैं समझाता हूँ। मैने कहा, बेटा वे आवेश में हैं। बेटा अनसुनी कर बाहर निकल गया। बेटे पर वार किया, चोट लगी। मैं भी गुरूजी का नाम स्मरण कर कूद पड़ा। संघर्ष करते हुये मै गिर गया, मेरे ऊपर लाठियों से वार किया गया। मेरी पत्नी चन्दा गुरूजी के फोटो के सामने खड़ी होकर रो रही थी। गुरूजी के फोटो में से साक्षात देवी दुर्गा के रूप में आवाज आई, जा– अपने सोहाग को बचा, वह बाहर आयी और आक्रमणकारी का बाल पकड़कर खींचा। आक्रमणकारी ने कलाई पकड़ी तो उसकी चूड़ियाँ टूट गई, और वे लोग भाग गये। मैं धीरे से उठा, पुलिस चौकी गया। लोक सभा के चुनाव की वोटिगं चल रही थी, चौकी में कोई नहीं था। मैं वापस हॉस्पिटल गया। डा0 ने पट्टी करके जाने की इजाजत दे दी। यहाँ पर कम्प्रोमॉइज करने की चर्चा चल रही थी। मैंने सब कुछ गुरुजी पर डाल दिया। दूसरे दिन गुरुजी के पास मुंगेली गया। गुरुजी ने कहा– आपने ठीक निर्णय लिया, उचित किया, अब आपको कुछ नहीं करना है। मुझे करना है। 6 माह बाद जवान लड़के की मौत हो गई। गुरुजी ने आदेश दिया कि उस जमीन को पूर्ण रूप से छोड़ दा। मैंने गुरुजी के आदेश का पालन किया। आज हमारा परिवार सुखी है।

2. गुरुजी रायपुर में डा0 आचार्य गुरुकृपा नर्सिग होम में रूके हुये थे। मैं कृष्णचंद्र मिश्रा बिलासपुर वालों के साथ गुरुजी के दर्शन हेतु गया था। चर्चा के दौरान अचानक गुरुजी बोले, आपकी गाड़ी का समय हो गया, आप जाइये। मैं हक्का, बक्का रह गया। योगेश शर्मा फोटो स्टूडियो वाले अपने साथ अपने घर ले गये। भोजन कराया एवं कहा, आप आज रुक जाइये। मिश्राजी उसी दिन वापस बिलासपुर चले गये। सुबह 6 बजे मैं गुरूजी के पास पहुँचा। गुरूजी को प्रणाम करके गुरूजी के चरण कमलों को दबा रहा था। गुरुजी बोले आप जब भी चाहें हमारे पास आ सकते हैं। अपने भोजन की थाली से आधा भोजन आपको करा दूंगा। आप हमारे परिवार के हैं। मैं रो पड़ा, कितनी ममता, कितनी करूणा थी मेरे ऊपर, मैं कुछ कह नहीं पा रहा था। गुरूजी बोले – कुछ लोग अपनी व्यवस्था के लिये मेरे पास आते हैं, उन्हें अन्य बातों से क्या लेना देना, इसका आगे से ध्यान रखंगें।

3. मुझे गौतम दरोगा साहब जी द्वारा पता चला कि पू0 गुरूजी भिलाई हॉस्पिटल के आई0 सी0 यू0 में भर्ती थे। मैं तत्काल भिलाई के लिये रवाना हुआ, सुबह भिलाई पहुँचा, गुरुजी के पास पहुँचने की तीव्र उत्कंठा थी। श्री दिवान जी लौकी का जूस लेकर जा रहे थे। मैने उनसे निवेदन किया कि भईया मैं जूस लेकर जाँऊगा। मैं लौकी का जूस लेकर गुरुजी के पास पहुँचा, गुरुजी को प्रणाम किया। गुरुजी बोले

अच्छा हुआ, आप आ गये, मुझे यहाँ से निकालो। चन्दा एवं बच्चों की कुशलता के बारे में पूछा। डा0 राउन्ड में आये और कहा कि हीमोग्लोबिन कम हो रहा है, गुरूजी को ब्लड चढ़ाने की आवश्यकता है। यह मेरा परम सौभाग्य था कि मेरा ब्लड ग्रूप गुरुजी के ब्लड ग्रूप से मैच कर रहा था। गुरुजी का blood group AB था। तत्काल 1 बाटल खून देने के बादै डा0 ने कहा– कि एक बॉटल खून और लगेगा। मैनें कहा–दूसरा बॉटल भी मैं दूंगा। डॉ0 सा0 बोले आपको कमजोरी लगेगी। मैंने जिद्द करके दूसरी बॉटल भी खून की निकलवाई। तत्काल दूसरी बॉटल गुरुजी को चढ़ाई गई जिसके कारण गुरुजी का हीमोग्लोबिन नारमल आ गया। 3 घन्टे बाद गुरुजी बरामदे में व्हील चेयर में निकले शाम तक पलंग पर पहुँच गये। मुझसे कहाँ कि अब आप घर जाईये, धर में चिन्ता कर रहे होंगे। मैंनें गुरुजी के आदेश का पालन किया एवं मुंगेली में पुनः गुरूजी के दर्शन किये। मेरा जीवन धन्य हो गया, खून के रिश्ते से बढ़कर कौन सा रिश्ता बढ़ा है?

सदगुरू युगल चरणों में रत

वीरचंद्र जैन , चंदा एवं परिवार , पेन्ड्रा , बिलासपुर छ0 ग0

अनुभव

आदरणीय प0 पू0 श्री सद्‌गुरुजी के चरणों में सादर साष्टांग चरण स्पर्श

श्री सद्‌गुरुजी के मार्ग दर्शन में प्रतिदिन ध्यान करने से भक्ति दृढ़ होती चली जाती है। धीरे–धीरे बुद्धि शुद्ध होती है। नाना प्रकार के दृश्य, दर्शन, प्रकाश स्वरूप सामने आते हैं, साधक को सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होती है। आध्यात्मिक उच्चाकाश में कई बार बाधाओं को सद्‌गुरू कृपा से आसानी से पार कर आगं बढ़ जाता है। धीरे– धीरे पृथ्वी तत्व, अथवा जड़ तत्व में कमी आ जाती है। साथ ही जल तत्व भी अपने प्रभाव से साधक को आगे की ओर बढ़ाता जाता है। धीरे–धीरे साधक जल तत्व से आगे आकाश तत्व की ओर बढ़ने लगता है। तब उसकी चेतना शक्ति ब्रम्हाण्ड की भौतिक शक्ति से तादात्म्य स्थापित कर लेती है। साधक के सारे क्रिया कलाप उसी शक्ति से तेजी से उन्नति करते हुये, नाना प्रकार के अनुभवों के साथ, उसकी बुद्धि आत्मसाक्षात्कार की सीमा को पार करके कई लोकों की यात्रा का लाभ लेकर वापस उसी शरीर में से परकाया प्रवेश का भी अनुभव करती हुई, कई प्रकार की शक्तियों से साक्षात् संबंध स्थापित करती हुई, कई जन्मों के अपने स्वरूप को पहचानती हुई, अपने आसपास के लोगों में भी उस काल देश के अपने परिचितों से पुनः परिचित होते हुये, नई ऊर्जा के साथ अपने आनन्द स्वरूप में मगन रहता है। धीरे–धीरे चेतना शक्ति बढ़ती जाती है, प्रकाश का भंडार भी बढ़ता जाता है, पूरा शरीर शुद्ध हो

जाता है, चेतना शक्ति साक्षात प्रकाश के रूप में पूरे शरीर में गतिमान हो जाती है। साधक का शरीर काँच के समान पारदर्शी हो जाता है एवं ऐसा अनुभव में आता है कि जैसे धूप में सिल्वर की पॉलिश वाला मिरर रख दिया जाएँ, तो जैसा तीव्र पकाश रिफलेक्ट होता है, वैसे साधक का शरीर प्रकाशमान हो जाता है। आइना तो सूर्य के प्रकाश में ही प्रकाशित होता है किन्तु साधक को बाह्य सूर्य की आवश्यकता नहीं पड़ती, साधक श्री सद्‌गुरू की कृपा से अपने स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित होता है। अधेरें में भी साधक को अपने शरीर से चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश, एवं काँच जैसा पारदर्शी शरीर दिखाई देता है। जैसा कि सद्‌गुरूजी बतलाते हैं कि गर्दन झुकाई की, हो गया दर्शन। गुरूजी सदैव हमारे साथ रहते हैं, यदि कोई कमी है तो हमारे पुरूषार्थ में। पू0 गुरूजी की ओर से सदैव प्रेम की, ज्ञान की, एवं प्रकाश की अविरल धारा बहती रहती है। मेरा ऐसा सोचना है कि जब तक आकाश में एक भी तारा टिमटिमाता है, तब तक चिन्ता की कोई बात नहीं। तथापि ईश्वर का स्वरूप सूर्य नारायण जब प्रतिदिन नियत समय पर उगते हैं और उनके अस्त होने पर चंद्रमा रात्रि को प्रकाशमान करता है, साथ ही अनगिनत तारे जब रात्रि को अंधकारमय नहीं रहने देते, तो फिर सद्‌गुरूजी रूपी अखण्ड़ ब्रम्हाण्ड की साक्षात् चेतन शक्ति हम सभी शिष्यों को अपना कृपापात्र बनाती है, इससे अधिक हमारा सौभाग्य क्या हो सकता है। पू0 गुरूजी के चरण कमलों में सतत विनती है कि संसार की सभी जड़, चेतन पर आपकी कृपा बनी रहे , इसी आशा के साथ।

कीर्ति राठौर ,इन्दौर म. प्र.

अनुभव

27 जनवरी 2011 को गुरूजी एवं माताजी का दर्शन मिला , दोनों को प्रणाम करने पर माताजी मेरे पीठ पर हाँथ फेरते हुये आशीष दीं। मैनें 5–5 रूपये पू0 गुरूजी एवं माताजी के चरण कमलों में अर्पित किया। कहीं जाने पर, बस में बैठने पर गुरूजी पहले दर्शन देते हैं। 24 घन्टे पू0 गुरूजी का दर्शन होता रहता है।

गजानन वड्यालकर, दुर्ग छ0 ग0

खुली आँख से आधे घन्टे तक प्रकाश दिखता है, प्रकाश सफेद रंग का रहता है। इस प्रकार से 20– 25 बार दर्शन हो चुके है।

श्रीमती प्रमिला वड्यालकर, दुर्ग, छ0 ग0

मनुष्य जितना स्वयं से धोखा खाता है उतना और किसी से नहीं।
बोलना एक कला है, मौन उससे भी बड़ी कला है।

"प्रकाशपुंज का अद्भुत प्रभाव"

यह 10 वर्ष पूर्व की घटना है। मेरी बड़ी बहू की प्रथम प्रसुति के समय उसे नजदीक के प्रसुतिगृह में 22/01/2000 दोपहर 3.00 बजे भर्ती किये। 36 घन्टों के उपरान्त चिकित्सक के परीक्षणों के पश्चात आपॅरेशन करने की सलाह दी गई। मेरी पत्नी अकेली थी घर संदेश पहुँचाने के लिये व्याकुल थी। तभी पू0 गुरूजी की कृपा से उसे अचानक मेरे छात्र मिल गये, जो मुझे संदेश पहुँचाने के लिये तैयार हो गये। दोनो छात्र शाम 6.30 बजे मेरे घर पहुँचे, सारी जानकारी से अवगत कराया। मैनें उन्हें पानी पीने के लिये आग्रह किया, मेरी मंझली लड़की पानी लेकर आई। बच्चों ने ग्लास पकड़ा, तो आश्चर्य से ग्लास ट्रे में ही रखकर बोले, अरे? कितना गरम पानी है। ठीक उसी समय मेरे कमरे में लगा पू0 गुरूजी का फोटो 3′ x 2′ से एक वेत प्रकाशपुंज तत्काल दरवाजे की ओर लपका। दोनों छात्र आश्चर्य से बोले–इस शाम की बेला में इतना प्रकाश कहाँ से आ गया? तुरन्त प्रसूतिगृह पहुँचने पर पता चला कि चिकित्सक ऑपरेशन द्वारा बच्चा प्राप्त कर चुके है। माँ और बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ है। बच्चे की प्रसूति का समय और प्रकाश पुंज का दरवाजे की ओर लपकने का समय एक ही था यानि ठीक शाम 6. 45 बजे।

इस तरह के अनेक लेख सद्गुरू महिमा के रूप में उद्बोधन में आ चुके हैं यह सत्य है कि पू0 गुरूजी सदैव अपने शिष्यों पर हर पल नजर रखते हैं। पू0 गुरूजी का दीक्षा के बाद यह कथन रहता था कि आज से मैं आपका चाकर हो गया। पू0 गुरूजी की कृपा सदा उनके चरण कमलों में स्मरण, विश्वास, और तन्मयता का परिणाम है। सदा श्रद्धा भक्ति के साथ गुरू चरणों में प्रणाम्।

अर्जुन सिंह नागरे, शिक्षक,
'गुरूछाया' शिव बजरंग चौक पोलसायपारा दुर्ग छ0ग0

भजन

।। हरि ऊँ ।।
गुरू चरनन में बैठ कर............
ऐसे आँसू बहाये ... परमानन्द पाये,
कोटि कोटि मेरे कर्म धोये....पावन मुझे बनाये......
गुरू चरनन में बस गयो मो चित्त
नमन करूं मैं, पल पल नित नित....गुरू चरनन......
इन चरनन की महिमा अपारा
झरत झरत छूटे संसारा,
चलत चलावत जाये हरि जित
नमन करूं मैं पल पल नित नित ...गुरू चरनन
इन चरनन को पावै दुर्लभ
मोक्ष द्वारे ये कहत गुणी सब
कृष्ण हुई, हरि किरपा बहुत,
नमन करूं मैं पल पल नित नित...गुरू चरनन
इन चरनन पर विश्व खड़े हैं
सुख वैभव सिद्ध यूँही पड़े हैं
सुमिर करत ही होत परम हित
नमन करूं मैं पल पल नित नित..... गुरू चरनन

संकलन कर्ता– श्री राकेश यादव, श्री गिरीश लोनकर नागपुर, महाराष्ट्र

आत्म-चिंतन

गुरु परिवार संकल्पना क्यों? क्योंकि इसमें आपस में स्नेह बना रहता है। कोई छोटा या कोई बड़ा नहीं होता। सब एक जैसे ही होते हैं। तभी तो प. पू. गुरुजी कहा करते थे– ''मैं शिष्य नहीं बनाता हूं, वरन् सबको अपने जैसा बनाता हूं।'' हम सभी प. पू. गुरुजी के अंश मात्र हैं। आइये! हम आत्म–मंथन करें कि–

1. हम क्यों प. पूज्य गुरुजी के सानिध्य में आये?
2. क्या वह हमारे जन्म–जन्म की पुण्यायी हैं?
3. इस जीवन में हम क्या साधना करने आये हैं?
4. दीक्षा से पूर्व तथा दीक्षा के बाद हममें क्या बदलाव आया है?
5. क्या हम नियमित ध्यान तथा अभ्यास करते हैं?
6. हमने ध्यान–अभ्यास द्वारा क्या अनुभूतियां पाई है?
7. प. पूज्य गुरुजी के ब्रम्हलीन होने के पश्चात् हमारी साधना में क्या बदलाव आया है?
8. क्या हमने समर्पण की भावना में वृद्धि पाई है?
9. क्या गुरु परिवार के प्रति हमारी जिम्मेदारी बढ़ी है?
10. पहले श्री गुरुजी मुंगेली या अन्यत्र स्थान पर रहते थे। उनका अहसास हम महसूस करते थे, परंतु आज वे ब्रम्हांड में लीन हैं। क्या हमें उनका अस्तित्व महसूस होता है?
11. समय के साथ–साथ गुरु परिवार में हम एक–दूसरे की उन्नति की मनोकामना करते हुये उनके भावनाओं का सम्मान करते हैं?
12. परिवार में हम सब एक श्रृंखला, एक–एक कड़ी बनकर मजबूत आधार के रुप में आनेवाली पीढ़ी का मार्ग–दर्शन कर सकते हैं?
13. मैं कौन हूं, और क्यों इस धरती पर आया हूं?मुझे क्या करना है, क्या मैं सही राह पर हूं?क्या इन सबका समाधान आपके पास है?
14. आपको गुस्सा आता है, तब क्या आप गुस्से पर नियंत्रण कर सकते हैं?

15. अहं को छोड़कर स्नेहपूर्वक परिवार के सभी सदस्यों का तथा विशेषकर ज्येष्ठ बन्धु–भगिनी के प्रति आदर भाव रखते हुये उनके मार्गदर्शन में कार्य करें। क्योंकि हमारे

ज्येष्ठ बन्धु–भगिनी ने गुरुजी के सानिध्य में रहकर अनेक बातों का अनुसरण कर ज्ञानार्जन किया है।

पं पूज्य गुरुजी से दीक्षा लेने से पूर्व ये अनुभूति हैं। मेरे भाई पं पूज्य गुरुजी से दीक्षित थे तथा घर का वातावरण गुरुजीमय था। मैं मुंबई कुलाबा वेधशाला में पदस्थ था। रोज स्नान के बाद गुरुजी के फोटो के सामने अगरबत्ती लगाकर प्रणाम करता था। एक दिन अचानक आफिस में कुछ लोग स्मगलिंग के लिये आये थे। उनका कुछ सामान समुंदर से जहाज में आने वाला था तथा वो माल गाडियों से ले जाने के लिये पूरे शस्त्र–अस्त्र से सज चार सफेद फियाट में ऑफिस परिसर में आये थे। उस दरम्यान आफिस सुरक्षा का मैं प्रभारी था। वो गुंडे लोगों ने हमारे वॉचमैन जो की एक्स–सर्विसमैन था उसको थप्पड़ लगाये और ऑफिस परिसर में प्रवेश किया। हमारे आफिस के पीछे लगभग 50 गज दूरी पर समुंदर था। परिसर में पूरा ब्लैक आउट किया गया था। कुछ लोगों को पैसे भी दिये गये थे। पूरा तामझााम हिन्दी सिनेमा के समान था। रात के बारह–साढ़े बारह बजे वॉचमैन मेरे पास आया। आफिस की चाबियां मुझे दी और कहा ''साहब मुझे बचाओ वो लोग मुझे मार डालेंगें'' विनती कर रहा था। ये सब सुनकर पता नहीं मैं घर आया प. पूज्य गुरुजी के फोटो के सामने अगरबत्ती लगाई प्रणाम किया गुरुजी मुझे शक्ति दो। अभी आपको सबकुछ संभालना है। मैं और वॉचमैन नीचे आफिस में आये। उन लोगों को आफिस परिसर से चले जाने को कहा। लगभग सभी अन्ना लोग थे। उन लोगों ने मेरे सामने नोटो के बंडल दिये और बोले उठाओ और यहां से चले जाओ। उनके पास स्टेन गन भी था। उन्होने वॉचमैन को डराया, मारा भी। मैंने खुद उसको एक कमरे में बंद किया था। सभी गुंडे लोगों को गेट से बाहर किया। वो पं. पूज्य गुरुजी की शक्ति थी कि सभी लोग चले गये। सब को आश्चर्य हो रहा था। लेकिन प. पूज्य गुरुजी ने दीक्षा पूर्व मुझे बचाया तथा मेरा कर्तव्य पूरा करने में मुझे सहायता की। वर्ना वो लोग मुझे मार डालते। ये सब प. पूज्य गुरुजी के कृपा प्रसाद का फल था। इस प्रसंग के वक्त श्री राकेश यादव भी मेरे साथ मुंबई मं था।

मैंने दिनांक 27.07.1989 को प. पूज्य गुरुजी से सहपत्नी दीक्षा ली। उस दरम्यान मैं रायपुर कार्यरत था। प. पूज्य गुरुजी ने कहा हमारा बहुत बड़ा परिवार रायपुर में है। हम आपकी मुलाकात सबसे करवा देंगें। इस दरम्यान रायपुर में श्री तेजवानी द्वारा सभी परिवार से परिचय हुआ। इसके बाद तीन साल रायपुर के कैसे गये हमको पता ही नहीं चला। गुरुवार को किसी ना किसी परिवार के यहां रात 8 बजे सामुहिक ध्यान, आरती तथा प. पूज्य गुरुजी के प्रवचन के कैसेट सुनते ही बड़ा आनंद आता था। गुरुजी जब रायपुर आते थे तब डॉ. आचार्य के यहां ध्यान, पूजा तथा प्रसाद होता था। लगभग 40–50 लोग गुरुवार को रहते थे। बड़ा आनंद आता था। आपस में स्नेह तथा प्यार बना रहता था। सभी आपस में अभ्यास के बारे में तथा अपने अनुभूति के बारे में खुलकर चर्चा करते थे।

एक बार प. पूज्य गुरुजी का मुकाम डॉ. पंधेर दीदी के यहां था। हम लोग सुबह शाम

दर्शन करने जाते थे। अचानक मन में ख्याल आया गुरुजी सबको कुछ ना कुछ अनुभव आया है। हम तो खाली है। प. पू. गुरुजी के चरण स्पर्श कर उनके सामने ध्यान में बैठा, थोड़ी देर में मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मेरा शरीर हल्का हो गया है। और मैं उपर हवा में आकाश की ओर जा रहा हूं। ऐसा लगा कि बस हो गया अपना काम तमाम और जोर से गुरुजी कर के चीख निकली। शायद बाजू में बैठे परिवार के लोगों को महसूस नहीं हुआ मगर प. पू. गुरुजी ने गिरीश कैसे हो कहते ही धीरे–धीरे में सामान्य हुआ। यह प. पू. गुरुजी की कृपा प्रसाद ही था।

मुंगेली में गुरु पूजा के लिये गुरुपरिवार एकत्रित हुआ था। गुरुजी की तबियत ठीक नहीं थी। प. पू. गुरुजी का हीमोग्लोबीन कम हुआ था, तथा डॉ. ने गुरुजी को रक्त चढ़ाने को कहा था। मेरा ब्लड ग्रुप ए$^+$ है तथा मेरी दिल से इच्छा थी कि सेवा का एक अवसर मिले। परंतु उस समय व्यवस्था हो गई। मैंने श्री अशोक भैया को कहा था अगर जरुरत पड़े तो मुझे बुलाना, फोन करना मैं पहुंच जाउंगा। प. पू. गुरुजी का ऑपरेशन भिलाई अस्पताल में था तथा अशोक भैया ने मुझे भिलाई पहुंचने को कहा। मैं नागपुर से ट्रेन में बैठा, गाड़ी चालू हुई और मुझे सभी तरफ प्रकाश ही प्रकाश नजर आ रहा था। बाहर पेड़ भी प्रकाश से चमक रहे थे तथा कुछ मंत्र उस पर लिखे हुये दिख रहे थे। मैं उस समय मंत्र किस तरह से कहना है ध्वनि कान में गूंज रहा था। उसका अर्थ भी समझ आ रहा था। लेकिन अब याद नहीं है। ये मैं रायपुर तक महसूस कर रहा था। रायपुर में स्नान वगैरह निपटाकर भिलाई पहुंचा। प. पू. गुरुजी को प्रणाम किया और सभी परिवार के साथ उनके समक्ष बैठा था। मन अस्वस्थ था कारण दूसरे दिन गुरुजी का ऑपरेशन तय था। किसी ने मुझे बुलाया। मैंने प. पू. गुरुजी को प्रणाम किया, गुरुजी ने पूछा कहा जा रहे हो, मेरे मुंह से निकला ब्लड डोनेट करने जा रहा हूं। गुरुजी बोले डोनेट कर रहे हो अच्छा–अच्छा। फिर दूसरे दिन प. पू. गुरुजी का ऑपरेशन हुआ। हम लोग रायपुर वापस आये। थोड़ा बुखार महसूस कर रहा था तथा राकेश के घर में मुकाम था। राकेश की धर्मपत्नी राजश्री भाभी गर्भवती थी तथा रात में उनको डॉ. आचार्य के यहां एडमिट किया था। बाहर बहुत बारिश हो रही थी। लगभग रात 11.30 –12.00 बजे डॉ. आचार्य साहब के क्लिनीक में पहुंचे। उपर एक कमरे में मैं लेट गया। मुझे बड़े प्रकाश में गुरुजी दिख रहे थे। राकेश बीच–बीच में आकर भाभी का समाचार दे रहे थे। पूरे रातभर यह सब चलता रहा। मैं अपनी ही धुन में था। सुबह भाभी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। मैं नागपुर आने तक प्रकाश महसूस कर रहा था। ऑपरेशन के बाद प. पूज्य गुरुजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। श्री राकेश यादव गुरुजी की सेवा में मुंगेली गया था। प. पू. गुरुजी ने राकेश को कहा हमें गिरीश का ब्लड नहीं दिया गया। ये बात राकेश ने मुझे बताई मुझे बहुत दुख हुआ मैं अपने आपको कोसने लगा कि मेरे अंदर जो अहम था इसी कारण ये सब हुआ है तथा पं. पू. गुरुजी के शब्द याद आये– अच्छा–अच्छा ब्लड डोनेट कर रहे हो।

करुणा के सागर प. पू. गुरुजी ने हमारा दुःख समझा और एक बार फिर मुझे मुंगेली बुलाया। मैं प. पू. गुरुजी के चरण पर माथा टेके अश्रु बहा रहा था। उतने में भिलाई से कोई आश्रम आये थे ब्लड देने हेतु परंतु प.पू. गुरुजी ने उसे मना किया और मुझे खुद जाकर अपने हाथों से बाटल में ब्लड लाने को कहा। प. पू. गुरुजी को ब्लड चढ़ रहा था और सामने हम आंख बंद कर बैठे थे। आंखों से अश्रु बह रहे थे। इस क्षण का वर्णन लिखने में हम असमर्थ हैं। प.पू. गुरुजी की असीम कृपा थी कि ये सौभाग्य हमें मिला। सद्‌गुरु द्वारा अपने शिष्य को इस तरह सेवा का मौका देना ये एक अद्‌भुत घटना थी। हम हमेशा आपके ऋण रहेंगें गुरुजी।

एक बार हम सभी परिवार रायपुर से पूना गये थे। रोहा से मुबई जाते समय। रोहा से ही ट्रेन छूटती थी। इसलिये पूरी गाड़ी खाली थी। हम सब एक डिब्बे में बैठे लेकिन दूसरे स्टेशन पर वो डिब्बा लेडीज कंपार्टमेंट में कनवर्ट हुआ था तथा पोलिस ने सभी जेन्डस लोगों को दूसरे डिब्बे में जाने को कहा। मेरे बच्चे 2–3 साल के होंगें साथ ही सामान भी बहुत था। मेरी पत्नी तथा सास बच्चों के साथ थे और मैं दूसरे डिब्बे में दरवाजे में खड़ा था। भीड़ काफी थी। मुझे डर लग रहा था। लोकल से मुंबई जाना है यह सब सामान, बच्चे कैसे करेंगें। दिवा जंक्शन से हमकों मुंबई जाना था। अब मैं प. पू. गुरुजी को याद कर रहा था। गुरुजी कैसे करें मैं चिंतित था। अब गाड़ी दिया जंक्शन पहुंची। एक आदमी सफेद कुर्ता, धोती तथा सफेद कपड़ा सिर पर बांध डिब्बे में आया और फटाफट हमारा सामान बाहर निकालने लगा। मैंने पैसे के बारे में पूछा– ''अरे भाई क्या पैसे लोगे नहीं तो फिर झंझट होगी।'' अब पहिले मैं मुंबई में था मुझे पता था लोग लूटते भी हैं। इसलिये मैंने कहा। वह आदमी कुछ नहीं बोला पूरा सामान डिब्बे के नीचे उतार दिया और बिना कुछ कहे चला गया। वे प. पू. गुरुजी ही थे। मुझे बहुत दुःख हुआ, हमारी चिंता की वजह से गुरुजी को कष्ट हुआ। वे सद्‌गुरुजी ही थे जो भक्तों को पूरा कवच प्रदान करते थे हैं और रहेंगे, बस श्रद्धा चाहिए।

एक बार हम सब रायपुर से वर्धा आये थे। प. पू. गुरुजी वर्धा में थे। मुझे जुड़वा बच्चे है और दोनों लड़कों का नाम प. पू. गुरुजी द्वारा किया गया। ज्ञानार्थ, बोधार्थ उनके नाम हैं। उस दरम्यान मेरा एक लड़का बोधार्थ वर्धा में था तथा दूसरा ज्ञानार्थ हमारे साथ रायपुर में रहता था। बोदार्थ रोज अपने दादाजी के साथ प. पू. गुरुजी के दर्शन हेतु जाता था। अब हम वर्धा में आये थे घर में बातचीत हुई कैसा करेंगें दोनों बच्चों को साथ कैसे रखेंगें। मेरी पोस्टिंग माना एयरपोर्ट पर थी तथा मेरी पत्नी दोनों को कैसे संभालेगी। मेरी मां तथा सास किसी का हमारे साथ आना संभव नहीं था। अतः हम प. पू. गुरुजी के दर्शन हेतु बाबा साहेब तकवाले के घर गये थे। प. पू. गुरुजी को प्रणाम करते ही गुरुजी ने कहा अब इस वक्त चि. बोधार्थ को रायपुर साथ ले जाओ। घर में जो चर्चा हो रही थी, उसके अनुरुप ही गुरुजी ने कहा अपने बच्चे अपने पास ही रखना चाहिए। अब दूसरे दिन हमको रायपुर जाना था। प.

पू. गुरुजी के दर्शन कर हम घर आये और बाद में दूसरे दिन हम स्टेशन गये। उस दरम्यान नागपुर में अधिवेशन चल रहा था। गाड़ी में इतनी भीड़ थी कि हम वापस घर लौट आये। दोपहर बाद गुरुजी के दर्शन हेतु फिर गये। गुरुजी को बताया बहुत भीड़ थी और हम जा नहीं पाये इसलिये वापस आये। प. पू. गुरुजी ने कहा ''कल जगह मिल जायेगी कल चले जाना''। ठीक दूसरे दिन हम स्टेशन पहुंचे, भीड़ बहुत थी फिर भी हम एक डिब्बे में कैसे भी घुस गये। अंदर जाकर देखा इतनी भीड़ में भी एक बर्थ खाली थी हम उस पर बैठ गये। अब भिलाई तक कोई भी उस बर्थ पर नहीं आया और भिलाई में एक आदमी आया बोला ये मेरा बर्थ है मैं रायपुर से यहां बैठने आ रहा हूं। मैंने कहा भाई आप कहो तो अभी उठ जाते हैं हमें रायपुर तक ही जाना है वह बोला नहीं नहीं! आप बैठिये मैं रायपुर से यहां आउंगा''। देखो प. पू. गुरुजी ने कहा था, आज आपको जगह मिल जायेगी तो ऐसा अनुभव हमें प्राप्त हुआ।

प. पू. गुरुजी का नागपुर में डॉ. जलगांवकर के यहां निवास रहता था। एक बार श्री जैन साहब गुरुजी के साथ आये थे और गुरुजी के साथ उनको रायपुर जाना था। उन्होने मुझे कहा गिरीश आप हमें रायपुर रोड तक छोड़ दो मैंने हां कहा लेकिन मुझे भी रास्ता मालुम नहीं था। मुझे लगा राकेश नागपुर का ही रहवासी है उसको सब रास्ते पता होंगे। अब प. पू. गुरुजी का सामान कार में रखकर मैंने मेरी स्कूटर चालू की राकेश पीछे बैठा मैंने उसे पूछा कहां से गाड़ी लेना है। उसने कहा मुझे रास्ता पता नहीं है। मैं एकदम डर गया, हम दोनों को ही रास्ता पता नहीं और प. पू. गुरुजी की कार हमारे गाड़ी के पीछे थी। गुरुजी डाकगांवकर परिवार से नीरोप आज्ञा ले रहे थे, तब तक हमने एक आदमी से पूछा लेकिन उसको भी रास्ता पता नहीं था। इतने में गुरुजी की गाड़ी आयी। बस हम अंदाज से चल पड़े और हम गलत रास्ते में जा रहे थे। सदर चौक में हमने पूछा तो लोगों ने कहा आप कमरेड रोड पर हैं तथा यहां से मुड़ जाओ। चौक में गुरुजी की गाड़ी मोड़ लेते हुई आई जैसे ही गाड़ी टर्न हुई गुरुजी ने पूछा क्या रास्ता चूक गये। मैं मन ही मन गुरुजी की प्रार्थना कर रहा था। गुरुजी अब आप ही सही रास्ता दिखाओ क्योंकि मैं भी पहली बार लोगों के बताये रास्ते से जा रहा था और रास्ता बड़ा कॉम्पलीकेटेट था। आखरी में हम रायपुर रोड पर पहुंचे। गुरुजी ने हंसते हुये कहा क्या सही रास्ते पर पहुंचे हैं ना और सभी हंसने लगे। प. पू. गुरुजी ने राकेश और मुझे बहुत आशीष दिया और उनकी गाड़ी रायपुर के लिये रवाना हुई। इसके बाद जब भी गुरुजी नागपुर आते या नागपुर से बाहर जाते थे ये हमारा सौभाग्य था कि हमारी स्कूटर हमेशा गुरुजी के गाड़ी के सामने रहती थी। बड़ा आनंद आता था ये सब गुरुकृपा ही थी।

सन् 1996 की बात है मैंने नागपुर में फ्लैट लिया था। उसके बाद प. पू. गुरुजी डॉ. जलगांवकर के यहां आये थे। मेरी इच्छा थी कि प. पू. गुरुजी अपने घर आये। इच्छा मन में लिये प. पू. गुरुजी के दर्शन करने डॉ. साहब के घर गया सभी लोग बैठे थे। प. पू. गुरुजी को चरण स्पर्श कर सामने बैठा था। उपस्थित परिवार में से किसी ने प. पू. गुरुजी को घर आने के लिये प्रार्थना की। गुरुजी एकदम गुस्सा होते हुये बोले ''मेरी हालत देखी नहीं,

आंखों से दिखता नहीं, पैरों से अपंग हूं, फिर भी आप लोगों को मिलने आता हूं, तो कहते हैं, गुरुजी मेरे घर आओ। मैं मन ही मन में समझ गया। दो दिन और गुरुजी का मुकाम नागपुर में था। गुरुजी दूसरे दिन वर्धा जाने वाले थे। में जब भी दर्शन हेतु जाता कुछ ऐसी बात होती कि हिम्मत नहीं होती कुछ कहने की। दूसरे दिन सुबह ध्यान में प. पू. गुरुजी से प्रार्थना की आप घर आयेंगें तो अत्यानंद होगा। घर में प्रसाद बनाया था। हार–फूल, रंगोली आदि सब व्यवस्था की थी। पर प. पू. गुरुजी आयेंगें या नहीं पता नहीं था। गुरुजी के दर्शन हेतु डॉ. साहब आ गये, प. पू. गुरुजी को प्रणाम किया। गुरुजी ने अशोक भैया को कहा आज वर्धा चलना है। मेरा मन खिन्न हुआ फिर भी गुरुजी के जाने की तैयारी में लग गये। हमारी गाड़ी प. पू. गुरुजी के गाड़ी के सामने चल रही थी। मेरा मकान, कन्नमवार नगर वर्धा रोड पर था। अशोक भैया बोले आपकी गाड़ी के पीछे हम आ रहे हैं आप गाड़ी घर के सामने से ले लेना। परंतु बिना गुरुजी के आदेश ऐसा करना ठीक नहीं था। अतः हम सोनेगांव पोलिस स्टेशन के सामने रुके, जहां से घर के लिये मोड़ना था। अशोक भैया ने प. पू. गुरुजी से पूछा गिरीश की इच्छा है घर के सामने से गाड़ी ले, गुरुजी ने विनती स्वीकार की। हमने घर के सामने प. पू. गुरुजी की पूजा की। गुरुजी ने फ्लैट पर नजर डाली बोल अच्छा है। करुणा सागर प. पू. गुरुजी भक्तों की परीक्षा लेते थे, उन्हे परखते थे।

प. पू. गुरुजी का मूड हमेशा बदलता था। कभी बहुत अच्छे, कभी बहुत गुस्से में, कभी बच्चे जैसे कंभी गंभीर, कभी मनोरंजन करते, क्रिकेट मैच का भी मजा लेते थे। एक बार मैंने गुरुजी के लिये वाकिंग स्टिक ली। अब गुरुवार था। डॉ. आचार्य के यहां सब भोजन था। सभी परिवार डिब्बे लाये थे। प्रसाद के रुप में सामूहिक भोजन की व्यवस्था थी। गुरुजी एकदम गुस्से मं थे। अब वाकिंग स्टिक कैसे दें मैनें श्री तेजस्विनी जी से कहा आप दे दो वो बोले नहीं आप ही दे दो अब बड़ी हिम्मत करके मैंने गुरुजी से कहा गुरुजी आपके लिये मैं वाकिंग स्टिक लाया हूं। गुरुजी ने स्टिक देखी और गुस्से से मेरी ओर मारने के लिये उठाई मैं डर गया था। तेजस्विनी जी बोले बड़े भाग्यवान हो! थोड़ी ही देर बाद गुरुजी ने बड़े प्यार से बात कही वो बड़े प्यारे क्षण थे।

2005 का गुरुपर्व कार्यक्रम पर राकेश और मैं आफिस में चर्चा कर रहे थे। अचानक मेरी आंखे बंद हो गई और प्रत्यक्ष प. पू. गुरुजी सफेद प्रकाश में दिख रहे थे। चर्चा जारी ही थी। एक नशा सा छा गया था। मेंने थोड़ी देर बाद राकेश को बताया कि गुरुजी ही गुरुजी नजर आ रहे हैं।

मुझे कई दिनों से ऐसा लग रहा था कि बांसुरी द्वारा प. पू. गुरुजी का भजन करें और सभी तल्लीन हो जायें। मैं कोशिश कर रहा था। इस साल गुरुपर्व कार्यक्रम पर बांसुरी प.पू. गुरुजी के चरणों में रखा और मन ही मन में कहा गुरुजी मुझे शक्ति दो, अब सब आपको संभालना है। मैंने गुरु माता–पिता, गुरु बंधू सखा'' बजाना शुरु किया, आंखे बंद थी और सिर्फ प्रकाश दिख रहा था। और मैं भी बांसुरी की लय सुन रहा था। गुरुजी द्वारा जो प्रेरणा

मिली, आशीष मिला उसकी साक्षात अनुभूति प्राप्त हुई। मुझे नहीं पता इतना मधुर स्वर मेरे बांसुरी द्वारा मंदिर में कैसा गूंज रहा था। सभी तारीफ कर रहे थे मगर मैं खुद जानता हूं, ये प. पू. गुरुजी की ही कृपा थी। मेरा आनंद द्विगुणीत कर दिया।

गुरुपर्व हमारे लिये एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम होता है। हर साल प. पू. गुरुजी के चरणों में लीन होने की मनोकामना होती हैं जो शक्ति हमें प्राप्त होती है प्रेरणा मिलती है। गुरुजी से और करीब मन को जोड़ती है।

इस साल मैं, राकेश और सभी गुरु परिवार ने समर्पित भाव से ऐ मेरे सदगुरु प्रणाम बार–बार, ओठों पे हो आपका ही नाम बार–बार भजन गुरु चरणों में तल्लीन हो कर गाया। इसका आनंद अद्वितीय है। सभी भाव विभोर हो गये थे। ये सब प. पू. गुरुजी की लीला है, कृपा है सो बड़े भाग्य से हमें प्राप्त हुई है हम हमेशा उनके ऋणी रहेंगें।

मैं ग्वालियर आफिस काम हेतु गया था। आफिस गेस्ट रुप में मेरे कान पर समाधि साधन संजीवन नाम श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज का भजन लगातार गूंज रहा था। उस दरम्यान मुझे रात में या दिन में भी सतत धुन कान पर सुनाई देती थी। मगर मुझे लगता था कि कही रेडिया या कैसेट चल रहा होगा। मगर मध्यप्रदेश टूर पर मैं अलग–अलग जगहों पर गया लेकिन गाने की धुन सुनाई दे रही थी।

उस रात मैंने नींद में देखा गुरुजी की पूजा करते–करते एकदम स्पंदन बढ़ गया और में प. पू. गुरुजी के चरणों पर गिर पड़ा। मेरी नींद खुल गई, सांस जोर से चल रही थी। इधर–उधर देखा मुझे ऐसा आभास हुआ। प. पू. गुरुजी मेरी बाजू में सोये हुये हैं। मैं थोड़ा डर भी गया था। प. पू. गुरुजी के तस्वीर को प्रणाम कर सो गया। लेकिन ये गाना कानों में गूंज रहा था। जब भी मैं अकेला रहता आफिस में या बाहर प. पू. गुरुजी आस–पास होने का आभास रहता है।

गुरुपर्व कार्यक्रम के बारे में मेरे दामादजी तथा भतीजी से चर्चा कर रहा था। शिवपुर का मंदिर और परिसर बहुत मोहक लग रहा था। हर एक चीज में प. पू. गुरुजी का एहसास महसूस हो रहा था। 22 तथा 23 तारीख को बहुत भजन गाये, ध्यान धारण की और अपनी मस्ती में थे। 24 तारीख को आश्रम से बिदाई की। 25 तारीख को सब वर्णन बता रहा था। मेरी आंखें जड़ हुई और एक नशा सा छा गया। सफेद प्रकाश चारों ओर दिख रहा था। प. पू. गुरुजी प्रकाश में नजर आ रहे थे। बाहर जाने का प्रोग्राम था मगर ये एहसास अंदर ही अंदर बढ़ता गया और मैं अकेला ही घर में रहा और अपने धुन में मस्त था। प. पू. गुरुजी के सामने अगरबत्ती लगाई और उद्‌बोधन पढ़ रहा था ताकि मैं अपना होश खोंउ नहीं। मुझे गुरुजी उद्‌बोधन 2006 के फ्रंट पेज में जो फोटो है 2 घंटे महसूस कर रहा था। रात 09.30 पड़े पड़े मैंने प. पू. गुरुजी का ध्यान किया। उसके बाद संवेदना कुछ कम हुई और धीरे धीरे से सामान्य हुआ।

गिरीशल ेणकर(नागपुर)

पूज्य गुरू जी की सेवा

मेरा तबादला मुम्बई से गुना हुआ तथा एक वर्ष के पश्चात् गुना से रायपुर तबादला हुआ। गुना रहते हुये मैंने वर्धा के गुरुपूजा में श्री कमलाकरजी लोणकर (बाबा) के माध्यम से सद्गुरुजी से दीक्षा प्राप्त की थी। सन् 1990 में रायपुर पदस्थ होने से श्री सद्गुरुजी के दर्शन डॉ. प्रभात आचार्य एवं डॉ. श्रीमती पंधेर मम्मी के यहां हुआ करते थे। परन्तु उस वक्त तक मन में एक भय सा बना रहता था, क्योंकि गुरुजी शब्दों व भाषा पर विशेष ध्यान दिया करते थे। गुरुजी जो भी भाषा बोलते वह शुद्ध व सरस हुआ करती।

रायपुर परिवार के सदस्यों में विशेषकर स्व. श्री मनोहरजी तेजवानी, श्री धनराज वर्मा एवं श्री योगेश शर्मा को अक्सर श्री गुरुजी की सेवा करते देखा करता था। तब मन में हमेशा ख्याल आता कि काश! मुझे भी गुरुजी की सेवा करने का अवसर प्राप्त होता।

उपरोक्त गुरु बन्धु छुट्टी के दिन अक्सर मुंगेली जाया करते थे। उस दिन भी ऐसे ही एक छुट्टी का दिन था और श्री गुरुजी मुंगेली में थे। श्री मनोहरजी, धनराज जी एवं योगेश जी मुंगेली जा रहे थे। सो मैं भी उनके साथ हो लिया। मुंगेली पहुंचकर हम सभी ने श्री सद्गुरुजी के चरणों में प्रणाम कर उनके समक्ष बैठ गये। कुछ देर पश्चात् सभी एक–एक कर श्री अशोक भैया के कक्ष में चले गये। वहां केवल मैं ही अकेला बैठा था। गुरुजी लेटे हुये थे। कुछ देर पश्चात् गुरुजी ने कहा ''योगेश पैर दबाओ'' परंतु योगेश वहां न होकर बाजू के कक्ष में थे। सो मैंने जी गुरुजी कहकर डरसे उनके चरणों तक पहुंचकर बहुत ही धीरे– धीरे उनके चरणों को दबाना आरंभ किया। चूंकि इसके पहले इस तरह की सेवा कभी किया नहीं था। अतः मन में एक भय सा था। मेरे स्पर्श करते ही गुरुजी ने कहा ''कौन है?'' मैंने कहा मैं राकेश गुरुजी'' गुरुजी ने कहा तुम्हारे बस की नहीं, बैठ जावो। मैं वही गुरुजी के समक्ष बैठ गया। मन में बहुत ही पीड़ा हुई। आंखे मूंदकर गुरुजी के समक्ष यह प्रण लिया ''गुरुजी सेवा तो मैं करके रहूंगा''।। उस शाम हम सभी लोग वापस रायपुर लौट आये। आने के बाद घर में आरती के बाद थोड़ा ध्यान किया करता और गुरुजी से विनती किया करता।

करीब एक से डेढ़ माह के पश्चात् पुनः मुंगेली जाने का अवसर प्राप्त हुआ तथा उन्ही तीनों गुरु बंधुओं के साथ मैं मुंगेली पहुंचा। इन दिनों आरती के पश्चात् मन ही मन कहा करता – हे गुरुजी! आप ही माता–पिता हो आप ही सर्वस्व हो। सो उस दिन भी हम सभी ने गुरुजी को प्रणाम कर उनके सामने बैठ गये। गुरुजी लेटे हुये थे। थोड़ी देर पश्चात् सभी एक–एक कर श्री अशोकजी भैया के कक्ष में चले गये और पुनः वहां केवल मैं ही बैठा था। और मन ही मन गुरुजी का स्मरण कर रहा था ''ऊँ श्री सद्गुरवै नमः, ऊँ श्री वासुदेवाय नमः'' और सोच रहा था इतने में ही गुरुजी ने कहा ''कोई है'' मैने कहा ''जी! गुरुजी'' गुरुजी ने कहा मेरे पैर दबाओ। मैं तुरंत उठकर, बिना भय के गुरुजी का स्मरण करते हुये

गुरुजी के चरण दबाना शुरु कर दिया। थोड़ी ही देर पश्चात गुरुजी ने कहा ''हां! अब बन गया।'' बस फिर क्या था उस दिन से मन का भय दूर हो गया और उसके पश्चात् गुरुजी! ने सेवा के अनेक अवसर प्रदान किये।

हमारे सद्गुरुजी बहुत ही दयालु हैं तथा सभी की इच्छापूर्ण करते हैं। तब ही तो उन्होने मुझ जैसे अल्पझ एवं तुच्छ बंदे को उनके चरणों में जगह दिया बस मेरा जीवन तो धन्य हो गया। श्री सद्गुरुजी के चरणों में कोटिशः प्रणाम।

यह प्रसंग है फरवरी 1998 का, तारीख मुझे याद नहीं है। उस दौरान मैं 7–8 दिनों की छुट्टी लेकर रायपुर से मुंगेली पहुंचा था। शायद यह सारी व्यवस्था श्री सद्गुरुजी की ही थी। रायपुर परिवार भी व्यस्त था एवं शहडोल से गुरु बंधु लोग वहां पहुंचने लगे थे।

उस दिन मैं गुरुजी की सेवा में था (यह श्री सद्गुरुजी की ही कृपा थी।) चूंकि गुरुजी का शरीर कमजोर हो चुका था तथा दांये से बायें या बायें से दांयें करवट लेने में भी उन्हे कष्ट होता था। गुरुजी की पीठ पर एक जख्म हो गया था (निश्चित ही, गुरुजी ने दूसरों का कष्ट ग्रहण किया हुआ था) किस चीज की आवश्यकता है, उनकी हलचल से जानना होता था कि वे दांये या बांये करवट लेना चाहते हैं।

उस दिन भी गुरुजी लेटे हुये थे, उनकी हलचल से मुझे मालूम हुआ कि गुरुजी दायी ओर करवट लेना चाहते हैं अतः मैंने पीठ पर हाथ का सहारा लगा दूसरा हाथ उनके कंधे पर रखा तथा गुरुजी ने दांयी ओर करवट ले लिये। परंतु पीठ पर हाथ रखते समय मेरी अंगुली गुरुजी के पीठ पर स्थित जख्म पर लग गई। गुरुजी के मुख से आहऽऽ निकला परंतु मुझसे कुछ ना बोले कि मेरी अंगुली जख्म में लग जाने की वजह से श्रीगुरुजी को पीड़ा पहुंची। मैं दुखी मन से गुरुजी के सिरहाने से थोड़ी दूर पर स्थित दो पायरी पर बैठ गया। खुद ही को मैं कोस रहा था। थोड़े ही देर पश्चात् श्री गुरुजी ने पुनः बांयी ओर करवट लेने की चेष्टा की। तो मैं तुरंत उठकर एक हाथ पीठ पर रखा व दूसरा हाथ श्री गुरुजी के कंधे पर रखा। परंतु हड़बड़ी में पुनः हाथ की एक अंगुली फिर से उसी जख्म पर लग गई और उनके मुख से पुनः आहऽऽ, परंतु फिर भी वे मुझसे कुछ ना बोले। मैं पुनः अत्यधिक अपसेट होकर पायरी पर बैठ गया। मेरा मन बहुत ही बेचैन हो गया था क्योंकि दो बार मेरी गलती के कारण श्री सद्गुरुजी को कष्ट हुआ। मैं बहुत ही भावुक हो गया था और उसी भावनावश मैंने कहा, ''गुरुजी!'' गुरुजी ने कहा, ''हां'' मैं इतना भावुक हो गया था कि मुझे शब्दों का भी ज्ञान न रहा। निम्नांकित शब्दों में ही मैंने कहा ''गुरुजी! मैं आपकी सेवा ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहा हूं।'' गुरुजी बोले ''नहीं! कोई बात नहीं।'' इस पर भी मेरा मन व्याकुल था सो मैं बोलता गया, ''गुरुजी! ना मेरे मां है ना मेरे बाप है। आप ही मेरे मां हो, आप ही मेरे बाप हो।'' इतना सुनती ही गुरुजी इतनी कमजोरी में भी अपना बांया हाथ तकिया पर रखकर मेरी ओर सिर उठाकर कहा ''हां हां! हम ही तुम्हारे मां हैं, हम ही तुम्हारे

बाप है। इतना सुनकर मेरी आंखों से अश्रु झलक पड़े और श्री गुरुजी की आंखे भी भर आयी। तत्पश्चात् गुरुजी तकिया पर सर रखकर पुनः लेट गये। मैं मन ही मन अपनी गलतियों की क्षमा मांगता रहा। आज भी आंख मूंदकर वह प्रसंग याद करता हूं तो मेरा मनोबल बढ़ जाता है। मैं श्री सदगुरुजी के चरणों में साष्टांग दंडवत् करता हूं।

राकेशन ारायणय ादव(नागपुर)

भारत पदार्पण दिवस – एक रिपोर्ट

गुरु परिवार अत्यधिक नहीं है बहुत सीमित है। सभी की कई दिनों की इच्छा थी कि श्री सद्‌गुरुजी के पूजन का कार्यक्रम नागपुर में संपन्न हो और अन्ततः दिनांक 03.10.2010 का वह दिन आ ही गया। पदार्पण दिवस के करीब एक महीना पहले गुरु बंधु श्री दीपक हरिदास एवं मधु लोणकर, वर्धा से कुछ कार्यवश नागपुर आये थे। वे प्रथम गिरीश लोणकर एवं तत्पश्चात मुझसे मिलने घर आये। बातचीत के दौरान नागपुर में ''गुरु–पदार्पण'' दिवस मनाने का विचार मन में आया। चूंकि नागपुर में ऐसा कोई भी कार्यक्रम नहीं हुआ था और नागपुर गुरु परिवार की हार्दिक इच्छा थी कि क्यों ना नागपुर में यह कार्यक्रम किया जाये। गुरु परिवार नागपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री घरोटे काका की भी यह इच्छा थी। अतः श्री भास्करजी देशपांण्डे एवं श्री राजू कान्हव को इसकी सूचना दी गई और फिर शुरु हुआ हॉल खोजने का सिलसिला। और अन्ततः श्री सद्‌गुरुजी की कृपा से ही एयरपोर्ट कालोनी का कम्यूनिटी हॉल श्री गुरुपूजा हेतु उपलब्ध हो सका। संयोगवश उपरोक्त हॉल निःशुल्क प्राप्त हो सका। वास्तव में इस वर्ष यहां दुर्गा उत्सव की रजत जयंती थी तथा सजावट इत्यादि हेतु वह हॉल पहले ही लिया गया था और हम सभी को दिनांक 03.10.2010 को एक दिन हेतु हमें प्राप्त हो सका।

यहां विशेष बात यह है कि श्री सद्‌गुरुजी को भारत पदार्पण दिवस पर कलकत्ता में मां दुर्गा, मां काली के साक्षात् दर्शन हुये थे और यहां नागपुर में 3 अक्टूबर को मां दुर्गा की पूजा अर्चना से पूर्व हमारे सद्‌गुरुजी के पदार्पण दिवस के अवसर पर पूजा अर्चना हो सकी। चूंकि दिनांक 03.10.2010 छुट्‌टी का दिन रविवार होने की वजह से 6 अक्टूबर की जगह 3 अक्टूबर को उपरोक्त कार्यक्रम मनाने का तय हुआ। एवं श्री घरोटे काका, श्री भास्करजी, राजू जी, दीपक जी, मधुकर जी की सहमति से एवं श्री गुरुजी की कृपा से एक सुंदर ''गुरुपूजा'' का कार्यक्रम हो सका। उस दिन ऐसा महसूस हो रहा था कि श्री सद्‌गुरुजी के गुरुपूजन का वार्षिक उत्सव हो।

गुरु पूजा की तिथि व स्थान तय हो जाने के बाद मन बहुत उत्साहित था और ऐसा लग रहा था कि सभी कुछ बहुत ही सुंदर तरीके से होना चाहिए। इस बीच गिरीश की

कल्पना को गति मिली और एक भव्य सुंदर, ब्रम्ह, विष्णू, महेश रुपी चित्र (होर्डिंग) बनाया गया। जिसके मध्य में मुंगेली शिवपुर स्थित श्री गुरुजी की मूर्ति का चित्र व उसके बांये, गुरुजी का एक चित्र (दोनों हाथों से आशीष देते हुये) तथा मूर्ती के दायीं ओर एक चित्र (दोनों हाथों में लड्डू लिये मुस्कुरा रहे हैं) ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों त्रिदेव के रुप में गुरुजी ही विद्यमान है।

दिनांक 3 अक्टूबर नागपुर गुरु परिवार के लिये एक विशेष दिन था जिसका स्मरण जीवन की अंतिम सांस तक बना रहेगा। उस दिन श्री राजू कान्हव सुबह 8 बजे श्री सद्‌गुरुजी की पादुका के साथ पधारे। हॉल में मंच पर श्री सद्‌गुरुजी की प्रतिमा रखी गई थी तथा उपर दीवार पर गुरुजी की तीन अलग–अलग मुद्राओं वाला भव्य दिव्य चित्र लगा था। पूर्ण मंच पर फूलों की तोरण के साथ बिजली के बल्बों की तोरण बहुत ही सुंदर लग रही थी। मंच के नीचे हॉल में शंतरंजी बिछाई गई थी तथा बैठने के लिये कुर्सियों की भी व्यवस्था थी। मंच पर गुरुजी की प्रतिमा के बाजू ही चौरंग पर गुरुजी की पादुका की स्थापना की गई और वह भी ''ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः'', श्री सद्‌गुरुनाथ महाराज की जय के उद्‌घोष के साथ।

कुछ समय पश्चात् ही वर्धा से दीपक व मधुकर के साथ अन्य करीब 50 गुरु परिवार के लोग आ गये। जिनमें पाण्डे काका व काकू, अनथा साई (दीदी, जिन्हे गुरुजी ने संगीत की ताली दी है), श्री वैध, श्री राव व अनेक भाई–बहन पधारे। नागपुर परिवार से श्री डॉ. जलगांवकर, श्री भास्कर देशपाण्ड, श्री राजदेरकर, श्री मोहन देशपाण्डे, श्री लोणकर, श्री यादव सभी परिवार के साथ करीब 120 लोग शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत 15 बिंदु रुपी आत्ममंथन से हुई। जिसकी प्रेरणा श्री गुरुजी ने गिरीश लोणकर को दी और एक ही बैठक में गिरीश ने वे सारे बिंदु लिख डाले। मानो गुरुजी बताते गये और वे लिखते गये। वह आत्ममंथन हम सभी के लिये हमारे आत्मोस्थान की एक कुंजी ही हैं। तत्पश्चात अल्पाहार के बाद सुबह दस बजे गुरुजी की पादुका का अभिषेक शुरु हुआ। (जिसमें गिरीश लोणकर एवं श्रीमती लोणकर एवं राकेश यादव व श्रीमती यादव भाग्यशाली रहे।) हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी श्री सद्‌गुरुजी की सेवा का अवसर इस तरह से भी प्राप्त होगा। यह सब श्री सद्‌गुरुजी की ही कृपा थी जिसके लिये माध्यम बने श्री भास्करजी एवं राज जी, क्योंकि इन्ही दोनों बंधुओं ने कहा कि, ''पादुका का अभिषेक लोणकर एवं यादव परिवार करेंगें।''

उस दिन चांदी की थाली में गुरुजी की पादुका रखी गई फिर प्रथम कोमट जल से दूध–दही, पंचामृत एवं गंगाजल से पादुका का अभिषेक किया गया। हम लोग, हमारी अर्धांगनियों के साथ उपरोक्त क्रमानुसार अभिषेक कर रहे थे तथा श्री राजू भैया माईक पर अथर्वशीर्ष व लक्ष्मीसूक्त का पाठ कर रहे थे। वह संपूर्ण हॉल तथा आसपास का वातावरण

मंत्र मुग्ध हो गया था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो साक्षात् गुरुजी ही विराजमान् हैं तथा हम सभी उनके चरणों को पखार रहे हैं। संपूर्ण वातावरण गुरुमय हो गया था।

तत्पश्चात् गुरुजी की आरती उतारी गई। जिसमें अनघाताई की हृदयस्पर्शी आवाज में संपूर्ण वातावरण को अत्यधिक प्रफुल्लित एवं आनंदमयी बना दिया था। राकेश ने शंख बजाया तथा पूरा वातावरण शंखनाद से गूंज उठा। यह एक सुवर्णयोग ही था जो 28 वर्षो के बाद ''गुरुजी की पादुका'' श्री राजू के घर से पूजन हेतु नागपुर लायी गई थी। श्री सद्गुरुजी की आरती के पश्चात् वहां उपस्थित सभी बंधु भगिनियों ने क्रमबद्ध तरीके से ''गुरुजी की पादुका'' पर पुष्प चढ़ाकर नतमस्तक होकर प्रणाम किया सभी लोग श्री सद्गुरुजी के चरणों में लीन हो रहे थे।

फिर शुरु हुआ, भजनों का सिलसिला। सर्वप्रथम अनघा दीदी ने ''गुरुदेव दया कर दे....'' व ''मोको कहां ढूँढ़े रे बंदे'' भजन गाया एवं श्री महेश कान्होलकर, गिरीश एवं राकेश ने कुछ भजन गाये। तत्पश्चात् श्री राजू ने भोपाल के जेष्ठ बंधु भगनियों के अनुभव जो करी 6 से 7 पृष्ठों के थे। जिनमें विशेषकर श्री जैन साहब, डॉ. सईदा शिंदे व श्री मराठे साहब के अनुभव के विषय में यानी श्री गुरुजी की कृपा के बारे में बताया। उस समय संपूर्ण हॉल में एकदम शांति थी ऐसा लग रहा था कि बस ''गुरुकृपा की बरसात'' के विषय में सुनते ही रहें। इसके बाद श्री गुरुजी के लिये थाल परोसकर लाया गया। राजू ने भोजन की थाली को गुरुजी के समक्ष रखकर थाली को हाथों का स्पर्श कर, श्री गुरुजी से भोजन ग्रहण करने की विनती की। उस समय सौ. जलगांवकर, सौ. राजेदेरकर एवं सौ. देशपाण्डे दीदीयों ने ''प्रसाद मझ ध्यावा'' वंदना की। गिरीश व राकेश श्री राजू के साथ ही बैठे थे। राजू भाव विभोर होकर बोले गुरुजी मुझे माफ करिये वे बहुत ही भावुक हो गये थे। पूर्ण कार्यक्रम का यह एक विशेष क्षण था। हम तीनों के आंखों में अश्रु थे और समक्ष श्री सद्गुरुजी। मुग्धा लोणकर जो संपूर्ण कार्यक्रम का आडियो/वीडियो शूटिंग कर रही थी उस वक्त भी कमरे से चित्रण करना शुरु ही था। अचानक उसके कैमरे के स्क्रीन पर ''Did Someone Blink'' के अक्षर उभरे। यानि गुरुजी साक्षात् वहां विद्यमान थे। उसके पश्चात् सभी लोगों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। इस बीच श्री गिरीश कुछ समय बांसुरी पर भजन बजाते रहे। बिना समय खोये एक के बाद एक कार्यक्रम शुरु थे। दरम्यान श्री भास्करजी की दिशा निर्देश शुरु थे जिससे कार्यक्रम सुचारु रुप से चल रहा था।

इसके उपरांत शिष्यानुभव का कार्यक्रम शुरु हुआ। जिसमें सर्वप्रथम कुलकर्णी काका, घरोटे काका, डॉ. जलगांवकर, पाण्डे काका, श्री पाटनकरजी, राकेश एवं प्रथम ही गिरीश ने अपने अनुभव सुनाये और भास्कर जी ने एक सुंदर सा भजन गाया। राजू एवं अनघाताई ने भी भजन गाये। श्री राम घुषे काका के कुछ शिष्यों ने ''श्रीराम जय राम, जय जय राम'' संकीर्तन एक विशेष धुन में गाकर वातावरण को आनंदित कर दियो एवं इसके पश्चात् श्री महेश कान्होलकर, गिरीश, राकेश, मधु, प्रणव व मधुर ने ''ऐ मेरे सद्गुरु प्रणाम बार–बार''

गाकर संपूर्ण वातावरण को गुरुमय बना दिया। उपरांत अनघा ताई ने सद्गुरु जी की आरती के साथ ही संपूर्ण वातावरण दिव्यत्व को प्राप्त कर रहा था। आरती ग्रहण कर सभी शिष्यों ने पुनः गुरुजी के चरणों में नमन किया। शाम करीब 6 बजे तक कार्यक्रम संपन्न हो गया।

यहां एक विशेष बात बताने की है वह यह कि महाप्रसाद के लिये नियुक्त श्री श्रीकांत एवं अर्चना मेहराक, 2 अक्टूबर को सारा सामान क्वार्टर में लाकर रख रहे थे। चूंकि यह उनका पहला ही अनुभव था, सो उनके मन में भय था। उन्होने राकेश से पूछा ''किनकी पूजा होने वाली है'' सो उसने अपने शर्ट की जेब से ''गुरुजी की फोटो'' निकालकर श्री गुरुजी के विषय में बताया। दंपत्ति ने गुरुजी की फोटो माथे से लगाया। तब राकेश ने कहा ''कैटरिंग का आपका पहला ही प्रसंग है, कोई बात नहीं। श्री सद्गुरुजी सब संभाल लेंगें।''

तब वे दोनों भी बहुत निश्चिंत हो गये। और यह श्री सदगुरुजी की ही कृपा थी कि उनका यह पहला ही अनुभव होने के बाद भी उस दिन ''महाप्रसाद'' इतना स्वादिष्ट था कि सभी ने उसकी प्रशंसा की।

तो 3 तारीख को कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। अधिकतर लोग प्रस्थान कर चुके थे। हम लोग कुछ देर बैठने के पश्चात् श्री राजू ने भी वर्धा वापस जाने की तैयारी करना शुरु किया। हम सभी लोग मंच पर आकर ''गुरुजी की पादुका'' को पुनः नमस्कार किया। राजू ने पादुका पर चढ़ाये हुये फूल हटाये व एक स्वच्छ तौलिये से पोछकर एक संदूक में रखा। इस बीच गिरीश बांसुरी बजाता रहा। अब राजू ने वह संदूक अपने सर रखा और राकेश ने गुरुजी की छड़ी को प्रणाम कर अपने हाथों में थाम ली। श्री राजू पादुका लेकर आगे–आगे चल रहे थे और उनके पीछे–पीछे ''ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय'' मंत्रोच्चार करते हुये हम सभी लोग चल रहे थे। राकेश ने छड़ी गिरीश के हाथ सौंपकर, पादुका का संदूक अपने सर पर रख लिया। मंत्रोच्चार लगातार शुरु था। तत्पश्चात् प्रणव, मधुकर, गिरीश व दीपक व अन्य सभी ने थोड़ी–थोड़ी दूर पादुका सिर पर धारण कर ''ऊं नमो भगवते वासुदेवाय'' के गुंजन के साथ हॉल के बाहर निकालकर श्री राजू की कार तक पहुंचे। राजू कार में बैठ गये जहां गुरुजी यात्रा में जाते समय बैठा करते थे। कार में बैठने के बाद गुरुजी की पादुका राजू को दी गई। श्री राजू ने वे अपने हाथों में लेकर अपनी गोदी में रख लिया। इस बीच राजू के माता–पिता एवं परिवार कार में बैठ चुका था। अब कार शुरु हो गई थी। श्री सद्गुरु नाम का उद्घोष शुरु ही था। ''ऊँ श्री सद्गुरुवे नमः श्री वासुदेवाय नमः'' श्री सद्गुरुनाथ महाराज की जय।''

जब राजू में अपना हाथ उठाकर सबसे विदा लिये तो ऐसा अनुभव हो रहा था कि साक्षात् गुरुजी अपने हाथ उठाकर सबको आशीष दे रहे है। जैसे वे यात्रा में जाने से पूर्व किया करते थे। वहां उपस्थित हर सदस्य आनंदित व उत्साह से परिपूर्ण था और बार–बार

ऐसा ही लग रहा था कि आज वार्षिक गुरुपूजन ही है। और एक पर्व के बाद फिर सतगुरुजी अपने प्रवास पर निकल पड़े। इस दिन के ''गुरु पूजा'' की हर किसी ने भूरी–भूरी प्रशंसा की। परंतु यह सब श्री सद्‌गुरुजी की प्रेरणा उनकी कृपा व उनके आर्शीवाद फलस्वरुप ही श्री दुर्गापूजा उत्सव के मंडप में श्री दुर्गा पूजा के पहले श्री सद्‌गुरुजी की पूजा अर्चना हो सकी।

इस अद्‌भुत अविस्मरणीय दिवस, अविस्मरणीय क्षणों को संजोये श्री सद्‌गुरुजी के चरणों में यही विनती करते हैं कि श्री सद्‌गुरुजी की कृपा हर गुरु परिवार पर हर क्षण, हर पल, ऐसे ही बरसती रहे और ऐसे शुभावसर हर वर्ष आये और हम सभी के जीवन में नई चेतना जगायें।''श्री सद्‌गुरुनाथ महाराज की जय''।

गिरीश लोणकर, राकेश यादव एवं नागपुर गुरु परिवार

सत्‌गुरु कृपा

परमपूज्य श्री गुरुजी के चरणो में हमारा सपरिवार नमन। परम पूज्य श्री गुरुदेव की कृपा एवं आशीष का लाभ न सिर्फ हम, हमारा गुरु परिवार बल्कि उनके संपर्क में आने वाले न जाने कितने लोगो को जाने अनजाने में कितनी बार मिलता रहा है इसी का एक उदाहरण/संस्मरण मैं यहॉ लिख रहां हूॅं। त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूं।
श्रद्धेय गुरुजी की कृपा से मैं पिछले 3 साल से ग्वालियर मेडिकल कालेज में सहायक प्राध्यापक के पद पर पदस्थ हूॅं। एक बार मैं एक प्राइवेट हास्पिटल में एक मरीज को देखने गया, जिसकी उम्र 25–26 वर्ष की थी, काफी गंभीर था उसकी किडनी फैल हो गई थी पेशाब बनना कम हो गया उसे मेडिकल कालेज में डायलिसिस के लिए शिफ्‌ट करना तय हुआ। उसी शाम को मरीज के पिताजी मेरे क्लीनिक पर आए और कहा–''कि डॉ. साहब मै बहुत गरीब हूॅं, शिवजी की पूजा के बगैर हम अन्न जल भी नही लेते, आज मेरा इकलौता बेटा मौत से जूझ रहा है, अपने जेवर बेचकर इलाज के लिए आए हैं, हे भगवान ! मेरे बेटे को बचाकर मुझे लेले''। उसकी करुण दशा देखकर मैंने अपने पीछे लगी श्री गुरुजी की फोटो के तरफ इशारा करके कहा कि ''तुम तो इनके चरणो में प्रणाम करके, जो कुछ कहना है इनसे कह दो, गुरुजी सब रक्षा करेगें''। वह व्यक्ति प्रणाम करके चला गया। दूसरे दिन राउंड में मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, मरीज स्वस्थ बैठा था तथा पेशाब बनना अधिक हो गया, सूजन पहले से कम हो गई, डायलिसिस का प्लान एक दिन के लिये टल गया।उसी दिन शाम को मरीज के पिताजी क्लीनिक आए, और उन्होने बतलाया कि कल रात एक अजीब घटना हुई –ः मरीज के मामा रात को अर्ध निद्रावस्था में देखा कि करीब आधी रात के आसपास कोई वृद्ध पुरुष मरीज के सिर पर हॉथ रखकर बोले ''चिंता मत करो, तुम ठीक हो जाओगे'' और फिर अदृश्य हो गए। ये घटना सुनकर मेरी ऑखों से ऑसू निकल आए। जय हो गुरुजी।..........ये वृद्ध पुरुष कोई नही बल्कि अपने ही गुरुजी थे जिनकी कृपा से न सिर्फ हम बल्कि जाने अनजाने में उनका नाम मात्र ले लेने से भी सद्‌गुरु कृपा प्राप्त हो जाती है। फिर वह मरीज एक दो दिन में ठीक होकर चला गया।

परम श्रद्धेय श्री गुरु चरणो में कोटि कोटि प्रणाम
डा. अरविंद चौहान, ग्वालियर

चमत्कार

प. पू. गुरुजी की कृपा से दिनों दिन जीवन में इतने अनुभव हुये कि उन्हें संगृहीत करना सभंव नहीं है। लौकिक एवं पारलौकिक में श्री गुरुजी की कृपा स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। पू. गुरुजी की कृपा से, एवं स्मरण मात्र से समस्यायें खत्म हो जाती हैं। और जब गुरु पर्व में जाना तो कोई समस्या आयेगी ही नहीं, ऐसा प्रगाढ़ विश्वास है. पू. गुरुजी की कृपा से। ग्वालियर से मुंगेली गुरुपर्व में जाने के लिये,

ट्रेन के नियत समय से 10–15 मिनट पूर्व हम स्टेशन पर पहुँच गये, किंतु वहॉ कोई यात्री नही दिख रहे थे, बडा शांत –शांत सा था। एक व्यक्ति से पूछा, तो पता चला कि आगरा –धौलपुर के बीच गड़बड़ी हो जाने से सभी ट्रेनें मथुरा से ही वाया मक्सी–भोपाल जा रहीं हैं। स्टेशन अधीक्षक ने भी यही जानकारी दी, और पैसा वापस लेने को कहा। मुझे थोड़ा सा धक्का लगा, और उन्होनें कहा कि आप किसी तरह भोपाल चले जाइए, वहॉ से आपको अपनी गाड़ी मिल जायेगी, ऐसे में गुरुपर्व में पहुचॅना असम्भव सा लग रहा था, मन में क्षोभ लिये गुरुजी का स्मरण करता, वैसे ही बाहर देखता हूॅ कि प्लेटफार्म न. 1 पर एक ट्रेन खड़ी है। सहज ही मैनें टी. टी. से पूछा कि यह ट्रेन कहॉ जा रही है। उसने पूछा ,आपको जाना किधर है; मैनें कहा ; बिलासपुर, उसने कहॉ कि तत्काल इसमें चढ जायो, यह तुम्हारे लिये आई है। भोपाल तक जायेगी। वहॉ से अपनी ट्रेन पकड़ लेना, उस ट्रेन में जैसे ही हम चढ़े वैसे ही ट्रेन चल दी। मुझे ऐसा लगा जैसे गुरुजी सामने खड़े हैं, मुस्कुरा कर कह रहे हैं कि क्यों चिंता करता है, मैं हूॅ न। गुरुजी ने कहा भी था कि मैं 500 वर्षों तक, अपने शिष्यों एवं भक्तों का मार्गदर्शन एवं सहायता करुगां। ओम शांति –शांति।, श्री गुरुजी के चरणों में प्रणाम्।

शरद, मंदसौर

विलक्षण अनुभव

ग्वालियर स्थानांतरित होने के बाद प. पू. गुरुजी की कृपा से आ. बुआ साहब के यहॉ प्रतिमाह दूसरे रविवार को सामूहिक ध्यान एवं आध्यात्मिक चर्चा में शामिल होनें से, मेरी ध्यान की स्थिति प्रगाढ होते देखकर बुआ साहब नें बताया की इस स्थिति में 'तत्व ज्ञान' प्राप्त करके ''सोहम्'' का ध्यान करना चाहिये अर्थात स्वयं को जानना चाहिये कि ''मै कौन हूॅ'' और मैं यह शरीर न होकर उस परमात्मा परमब्रम्ह की अभिन्न, अविनाशी, अक्षय शाश्वत किरण हूॅ। शरीर तो मात्र साधन है। नाम स्मरण करते हुये , एक दिन मैं मोटर साईकिल पर जा रहा था, अचानक लगा कि आस – पास का प्रत्येक व्यक्ति मैं हूॅ। यह स्थिति करीब 1–मिनट रही, शरीर ऊर्जा से भर गया, तथा बहुत हल्का लगने लगा । थोड़े दिनों बाद फिर वही स्थिति पुनः निर्मित हुई। महाराजा बाड़े पर, करीब 2– मिनट तक रही। बाबा से बतलाया ,वे प्रसन्न हुये और कहा– पू. गुरुजी की कृपा है। श्री गुरु चरणों में प्रणाम, तथा उनके चरणों में प्रार्थना है कि श्री चरणों में सदा बना रहूॅ।

जगदीश गुप्ता, ग्वालियर

असीम कृपा

23 जुलाई 1997 में भोपाल में पू0 गुरूजी से दीक्षा प्राप्त की। मुझे पू0 गुरूजी का तब अनुभव हुआ, जब मेरे पिता जी 13 मार्च 2001 माननीय उच्चतम न्यालय, दिल्ली, अपने दोस्त बिलायती राम सूरी के साथ गये हुये थे। 14 मार्च को होटल मे पिता जी की तबियत अचानक खराब हो गई, उन्हे कैलास हॉस्पिटल नोएडा में भर्ती करवाया गया। रात में 1 बजे मुझे सूचना मिली कि तुम्हारे पिता जी को दिल का दौरा पड़ गया है और उन्हें आई0 सी0 यू0 में भर्ती किया गया है। तुम जल्दी चले आयो।

19 मार्च को रात्रि 8 बजे पिता जी की तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई और डा0 ने कहा. कि अब तुम्हारे पिता जी का बचना बहुत मुश्किल है। अतः आप अपने सभी रिस्तेदारों को बुला लीजिये, क्योंकि उनकी पल्स धीमी हो गयी है, हीमोग्लोबिन भी कम हो गया, तथा पेशाब भी नहीं बन रही है। मै बहुत घबरा गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करू ?मैनें बड़ी मुश्किल से फोन करके लोगों को पिता जी की तबियत से अवगत कराया। मैं करीब 11 बजे रात्रि अस्पताल के बरामदे में बैठे सतत् रो रहा था, तभी मैनें पर्स में से पू0 गुरूजी की फोटो निकालकर प्रार्थना करने लगा कि गुरूजी अब पिता जी को बचा लीजिये और मैं पू0 गुरूजी का ध्यान करते हुये कब सो गया पता भी नहीं चला। अचानक रात्रि में मुझे पू0 गुरूजी का दर्शन हुआ और गुरूजी बोले –क्यों रो रहे हो ? '' मै हूँ न तुम्हारे साथ, अब तुम्हारे पिता जी को कुछ भी नहीं होगा और तुम्हारे पिता जी को साथ लेकर मैं ग्वालियर चलूँगा''। इतना कहकर पू0 गुरूजी अन्तर्धान हो गये, अचानक मेरी नींद खुली सुबह के 4– बजे थे। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं।

20 मार्च को सुबह सभी रिश्तेदार ग्वालियर से आ गये और हम सभी सुबह 6–बजे बैठकर यह चर्चा कर रहे थे कि अब क्या करना है ?तभी डा0 आये और बोले कि चमत्कार हो गया , यह मेरी जिन्दगी का पहला ऐसा केश है, जिसमें किसी मरीज की इतनी ज्यादा तबियत खराब हो और एकदम से सब ठीक हो जाय, यानि कि उसका हीमोग्लोबिन सामान्य होने लगे , और पेशाब भी बनने लगे। मुझे पू0 गुरूजी की याद आई और मैं समझ गया कि यह सब पू0 गुरूजी की असीम कृपा से सब ठीक हुआ है । मेरे नेत्रों में ऑसुओ की धार लग गई और पिता जी पूरी तरह से ठीक होकर ग्वालियर आ गये

चन्द्रसेन रोमन, ग्वालियर , म0 प्र0

अनोखा हार

23 जुलाई 1997 को मुझे पू0 गुरूजी की कृपा से दीक्षा प्राप्त हुई और उसी समय एक चमत्कार हुआ। मैनें अपने पति से गुरूजी के चरणो के पूजन के लिये फूलमाला और नारियल मंगवाया। हम दोनों पू0 गुरूजी के चरणों के पास बैठे थे। मेरे पति नें मुझसे हार मांगा, तब मैनें सोचा कि मैं क्या चढाऊगी ? हार तो सिर्फ एक ही है, लेकिन पैकेट खोलने पर उसमें से दो हार निकले, तब उसके पति ने कहॉ– कि मैं तो एक ही हार लाया था और एक ही हार का पैसा दिया था। तब मैं समझ गई कि यह सब पू0 गुरूजी की कृपा दृष्टि से सम्भव हुआ है। पू0 गुरूजी मेरे मन की बात समझ गये। ऐसी पू0 गुरुजी की कृपा दृष्टि हम सब पर बनी रहे, यही हमारी कामना है। ,

सौ0 जयमाला चंद्रसेन, ग्वालियर म0 प्र0

विशेष अनुभूति

मेरा विवाह नव0 सन् 1985 में हुआ। विवाह के उपरान्त जून 1986 में अपने पतिदेव के साथ लोरमी , बिलासपुर पहुॅची। वहीं पर प्रथम बार , घर में पू0 गुरूजी का फोटो देखी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि ये हमारे गुरूजी है। इनका नाम प0 वासुदेव रामेश्वर तिवारी जी है। अपने पति के साथ कई बार मुंगेली गई परन्तु गुरूजी के लिये मेरे मन में कोई श्रृद्धा नहीं थी, और न हीं दीक्षा लेने की कोई इच्छा हुई। लेकिन जब भी मैं पू0 गुरूजी से मिलती मेरे सारे शरीर में कंपकपी सी उठती तथा मेरे ऑखो से ऑसू बहने लगते थे, मैं ज्यादा देर तक वहॉ रूक नहीं पाती थी। आदरणीय श्री ओम प्रकाश शर्मा , रेंजर जी उस समय लोरमी में थे , उन्हीं के माध्यम से मेरे पति को पू0 गुरूजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ था। उन्होने मुझे भी ध्यान करने के लिये कई बार कहा, परन्तु उस समय मुझे कोई रूचि नहीं थी। मैं जब भी ध्यान करने के लिये बैठती , तब कंधे पर सर्प के फन की आकृति दिखाई देती और मैं डर के कारण उठ जाती थी। सामान्यतः जाग्रतावस्था में बहुत से सर्प दिखते तथा कई बार मेरे पैर के नीचे आते जाते रहते है।

विवाह के पूर्व मेरे पतिदेव नें अपने स्वयं के लिये कई बार पू0 गुरूजी के चरण कमलों में दीक्षा के लिये निवेदन किया था, किन्तु पू0 गुरूजी हर बार मना कर देते थे और कहते कि बाद में आना। लेकिन आश्चर्य कि हमारे विवाह के तुरन्त बाद उन्होनें मेरे पतिदेव को दीक्षा दे दी। मेरे पतिदेव ध्यान के लिये कहते, तो उसे मैं ढोंग समझती, और कहती कि– ऑख बंद करने से क्या होता है ?

बाद में हमारा तबादला दुर्ग हो गया और हमारा मुंगेली जाना आना कम हो गया। एक बार लोरमी से दुर्ग जाते वक्त हम मुंगेली रूके। मेरे पतिदेव ने कहा–कि तुम भी दीक्षा ले लो, मेरा मन नहीं था और मैं जानती थी कि श्री गुरूजी तुरन्त हॉ भी नहीं करते। मैनें ऐसे ही कह दिया । परन्तु उन्होनें पू0 गुरूजी से दीक्षा के लिये निवेदन किया और पू0 गुरूजी ने तुरन्त हां कह दिया। पू0 गुरूजी उस समय लेटे हुये थे, तुरन्त उठकर बोले –बैठो । मेरे पतिदेव हार नारियल आदि लाने के लिये बोले, तब पू0 गुरूजी ने कहा– कि क्या जरूरत है। ऐसे ही ठीक है और तुरन्त मंत्र दीक्षा मुझे मिल गयी और फिर गुरूजी ने ध्यान करवाया। इस तरह से मुझे सहज ही दीक्षा मिल गई। जब पू0 गुरूजी ने शरीर छोड़ा , उस समय हम छुई खदान में था, हमे पता ही नहीं चल पाया, अचानक पेपर पढ़ा ,तब दूसरे दिन हम मुंगेली पहुॅचे। बहुत अफसोस हुआ, मैं बहुत रोई, तथा कई दिनों तक परेशान रही जैसे अपनी सबसे कीमती चीज खे गई हो। तब एक दिन मुझे पू0 गुरूजी की आवाज सुनाई दी, और कहा– कि मैं हूॅ न, क्यों परेशान होती हो। स्वप्न में भी दो बार दिखे। पू0 गुरूजी के शरण में आने पर जीवन में विशेष परिवर्तन महसूस हुआ। अब मुझे एक विशेष तरह की अनुभूति बार–बार होती है, जब कभी भी मैं शान्त मन से ऑख बंदकर लेटती हूॅ, तब दोनों भौहों के बीच एक रंगीन छिद्र दिखाई देता है, सभी वस्तुयें ,सभी व्यक्ति उसमें समाते हुये दिखाई देते हैं, फिर धीरे–धीरे सूक्ष्म बिन्दु रह जाता है। घबराहट के कारण मैं ऑखे खोल लेती हूॅ । बुआ सा0 से बतलाने पर पता चला कि ये तो बहुत अच्छी स्थिति हैं। उन्होनें कहा– कि उसमें ज्यादा देर तक टिकने का प्रयास करो ताकि निर्विचार स्थिति बन सके, जोकि साधना का मूल उद्‌देश्य है। तब से घबराहट कम होने लगी। प0 पू0 गुरूजी की कृपा सदैव हम पर बनी रहे, यही उनके श्री चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

सौ0 नीलम गुप्ता, ग्वालियर , म0 प्र0

अध्यक्ष : 51319
कोषाध्यक्ष : 51007 (O)
: 51327 (R)

ॐ श्री वासुदेव गुरूपरिवार आत्मोत्थान न्यास

बड़ा बाजार, मुंगेली 495334, जिला -बिलासपुर (म.प्र.)

क्रमांक .... **आंकड़ा 2010–11** दिनांक ....

1097297.25	श्री पूंजी खाते जमा
203611.00	श्री भोजन शाला खाते जमा
81106.00	श्री मंदिर हाल मार्बल खाते
124800.00	श्री ध्यान कक्ष निर्माण खाते
1280.00	श्री आरती दीपक खाते
	1508094.25

78945.42	श्री पंजाब नेशनल बैंक मुंगेली (सेविंग खाता) No.-2526000100108533
12151.00	श्री भारतीय स्टेट बैंक मुंगेली (सेविंग खाता) No.-31505295999
771000.00	श्री एफ.डी.आर.खाते
500000.00	श्री मार्केट प्लस खाते (LIC)
104820.00	श्री जीवन वर्षा खाते (LIC)
3484.00	श्री टेलीफोन मोबाईल खाते
2399.00	श्री दरी गद्दा खरीदी खाते
2722.00	श्री मंदिर घण्टी खाते
7930.00	श्री बर्तन खरीदी खाते
2359.00	श्री इलेक्ट्रीक पंप खाते
9000.00	श्री इनवर्टर खाते
10625.00	श्री फर्नीचर लागत खाते
100.00	श्री सुगनामल तेजवानी राजीम
965.00	श्री शहडोल गुरू परिवार शहडोल
500.00	सुश्री डॉ.चन्दा रजक रींवा
	1507000.42
1093.83	श्री पोते बाकी
	1508094.25

वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरूपरिवार आत्मोत्थान न्यास

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष

ऊँ श्री वासुदेव गुरूपरिवार आत्मोत्थान न्यास

बड़ा बाजार मुंगेली 495334, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

अनुदान लेने वालों की सूची ता. 01.04.2010 से 31.03.2011 तक

क्र.	नाम	स्थान	रसीद नं.	दिनांक	राशि
1	श्री रानू लाल बंगानी	धमतरी	1614	12/04/2010	4500.00
2	श्री कृषि उद्यान खाते		1615	19/04/2010	12452.00
3	श्री विशाल, सौ. मुदन्ता एवं सुश्री उषा केडिया	बलौदा बाजार	1616	30/04/2010	2100.00
4	कुमारी चेतना छलोत्रे	भोपाल	1617	01/05/2010	18000.00
5	कुमारी नम्रता छलोत्रे	—"—	1618	01/05/2010	18000.00
6	सौ. निशा छलोत्रे	—"—	1619	01/05/2010	21000.00
7	सौ. सुशीला छलोत्रे	—"—	1620	01/05/2010	11000.00
8	श्री संजय छलोत्रे	—"—	1621	01/05/2010	21000.00
9	श्री आर.एम. छलोत्रे	—"—	1622	01/05/2010	11000.00
10	श्री डॉ. शिन्दे दम्पत्ति	—"—	1623	01/05/2010	2000.00
11	श्री कृषि उद्यान खाते	—"—	1624	01/05/2010	260.00
12	श्री ज्योति रबर इन्जीनिर्यस	भोपाल	1625	12/05/2010	21000.00
13	श्री उत्कर्ष रबर प्रोडक्टस	—"—	1626	12/05/2010	11000.00
14	श्री उत्कर्ष जैन	—"—	1627	12/05/2010	11000.00
15	श्री तनिष्का जैन	—"—	1628	12/05/2010	11000.00
16	श्रीमती प्रिया जैन	—"—	1629	12/05/2010	21000.00
17	श्री राजेश जैन	—"—	1630	12/04/2010	25000.00
18	श्री कृषि उद्यान खाते		1631	14/05/2010	3105.00
19	श्री ग्वालियर गुरू परिवार	ग्वालियर	1632	19/05/2010	8000.00
20	श्री कृषि उद्यान खाते जमा		1633	03/06/2010	620.00
21	श्री दीवाकर धरोटे जी	वर्धा	1634	26/06/2010	10000.00
22	श्री कृषि उद्यान खाते		1635	07/07/2010	30.00
23	श्री कृषि उद्यान खाते		1636	17/07/2010	300.00
24	सुश्री डॉ. चन्द्रा रजक	रींवा	1637	21/07/2010	5000.00
25	सुश्री डॉ. चन्द्रा रजक	रींवा	1638	21/07/2010	10000.00
26	श्री कैलाश रोशनी	रतनपुर	1639	23/07/2010	101.00
27	श्री किरण तारा	रतनपुर	1640	23/07/2010	101.00
28	श्री [illegible]	खैरागढ़	1641	23/07/2010	101.00
29	श्री लक्ष्मी	[illegible]	1642	23/07/2010	101.00
30	श्री राजश्री, जयश्री	दुर्ग	1643	23/07/2010	202.00
31	श्री चन्द्रप्रकाश [illegible]	बिलासपुर	1644	23/07/2010	501.00
32	श्री डी.एन. चिंचोलकर	बिलासपुर	1645	23/07/2010	201.00
33	श्री विष्णु वासुदेव तिवारी		1646	23/07/2010	511.00
34	श्री आर.पी. शर्मा	इन्दौर	1647	25/07/2010	2100.00
35	श्री चढ़ावा खाते जमा		1648	25/07/2010	830.00
36	श्री दिलीप मराठे जी	भोपाल	1649	06/08/2010	12000.00
37	श्री राहुल मराठे जी	—"—	1650	06/08/2010	13000.00
38	श्री रेखा मराठे जी	—"—	1651	06/09/2010	14000.00
39	श्री कृषि उद्यान खाते		1652	02/09/2010	262.00
40	श्री कृषि उद्यान खाते		1653	06/10/2010	1000.00
41	श्रीमती रूक्मणी देवी लूनिया	मुंगेली	1654	07/10/2010	1375.00
42	श्री जे.के. जैन	भोपाल	1655	08/10/2010	7500.00
43	श्री राजेश जी जैन	—"—	1656	08/10/2010	7500.00
44	श्री एम.एल. चौहान जी	—"—	1657	08/10/2010	5000.00
45	श्री दिलीप मराठे जी		1658	25/10/2010	30000.00
46	श्री कृषि उद्यान खाते		1659	11/10/2010	16265.00
47	श्री आर.के. शिन्दे	ग्वालियर	1660	30/10/2010	5000.00
48	श्री डॉ० अरविन्द [illegible] जी	ग्वालियर	1661	30/10/2010	5000.00
49	श्री शरद जी	मन्दसौर	1662	30/10/2010	5000.00
50	श्री दिलीप [illegible] जी		1663	30/10/2010	5000.00
51	श्री जगदीश गुप्ता जी		1664	30/10/2010	5000.00
52	श्री डॉ० अरविन्द चौहान जी		1665	30/10/2010	5000.00
53	श्री चन्द्रसेन [illegible] जी		1666	30/10/2010	5000.00
54	श्री मिस्टर [illegible] जी		1667	30/10/2010	5000.00
55	श्री आनंद तोमर जी		1668	30/10/2010	1100.00
56	श्री मराठे जी पारिवारिक जन	भोपाल	1669	01/11/2010	25000.00
57	श्री कैलाश एवं [illegible] छितरका	गोंदिया	1670	08/11/2010	1100.00
58	श्री प्रमोद एवं [illegible] अग्रवाल	आमगांव	1671	05/11/2010	1100.00
59	श्री चि. [illegible] एवं [illegible] छितरका	गोंदिया	1672	06/12/2010	1001.00
60	श्री चि. आलोक, आशीष छितरका	गोंदिया	1673	06/12/2010	11000.00
61	श्री दिलीप मराठे जी	भोपाल	1674	18/12/2010	6500.00
62	श्रीमती मणि जैन	—"—	1675	18/12/2010	25000.00
63	श्री राजेश जी जैन	"	1676	18/12/2010	24000.00
64	श्री कृषि उद्यान खाते		1677	31/12/2010	250.00
65	श्री राजेश जी जैन	भोपाल	1678	13/03/2011	41000.00
66	श्री जे.के. जैन	—"—	1679	13/03/2011	5000.00
67	श्री गुप्त भंडार ||		1680	13/03/2011	50000.00
68	श्री आर.एम. छलोत्रे	भोपाल	1681	14/03/2011	251.00
69	श्री [illegible] ([illegible])	भोपाल	1682	14/03/2011	1000.00
70	श्री डी.डी. गुप्ता	शहडोल	1683	14/03/2011	200.00
71	श्री गुप्त दान		1684	14/03/2011	500.00
72	श्री प्रमोद गुप्ता	पथरिया	1685	14/03/2011	500.00
73	श्री [illegible]लाल जी लुनिया	मुंगेली	1686	14/03/2011	11111.00
74	श्री [illegible]	दुर्ग	1687	14/03/2011	100.00
75	श्री अर्जुन सिंह [illegible]	दुर्ग	1688	14/03/2011	105.00
76	श्री सुशील चंद्र शर्मा	पंडरिया	1689	14/03/2011	111.00
77	श्री प्रकाश मिश्रा	भिलाई	1690	14/03/2011	501.00
78	श्री जे.पी. शुक्ला	कोरबा	1691	14/03/2011	5000.00
79	कुसुम श्रीवास्तव	शहडोल	1692	14/03/2011	100.00
80	श्री भगवान प्रसाद श्रीवास्तव	शहडोल	1693	14/03/2011	100.00
81	श्री विनोद पांडे	शहडोल	1694	14/03/2011	1100.00
82	श्री बी.के. द्विवेदी	अनूपपुर	1695	14/03/2011	500.00
83	श्री संतोष त्रिपाठी	अनूपपुर	1696	14/03/2011	500.00
84	श्री रमेश द्विवेदी	रायपुर	1697	14/03/2011	101.00
85	श्री पूजा घर से प्राप्त		1698	14/03/2011	2765.00
86	श्रीमती [illegible] दुबे एवं परिवार	बिलासपुर	1699	14/03/2011	5100.00
87	पूजा घर से प्राप्त		1700	14/03/2011	2531.00
88	श्री एवं श्रीमती करडे	भोपाल	1701	23/07/2010	1000.00
89	श्री हरिप्रसाद उर्फ हरिदास मौर्य	बिलासपुर	1702	23/07/2010	500.00
90	श्री विनोद पुरी गोस्वामी	मुंगेली	1703	23/07/2010	500.00
91	श्री आर.सी. मिश्रा	पेन्ड्रारोड	1704	23/07/2010	1500.00
92	प्रभा तिवारी	रीवा	1705	23/07/2010	101.00
93	श्री विपिन जैन	रायपुर	1706	23/07/2010	501.00
94	श्री [illegible] कोस्टर्स	भोपाल	1707	23/07/2010	10000.00
95	श्री आशीष तिवारी	पंडरिया	1708	23/07/2010	101.00
96	श्री चंद्र प्रकाश तिवारी	रींवा	1709	23/07/2010	101.00
97	डॉ. प्रदीप जलगांवकर	नागपुर	1710	23/07/2010	10000.00
98	श्री पेन्ड्रारोड परिवार	पेन्ड्रारोड	1711	23/07/2010	11000.00
99	शीला पांडे	वर्धा, नागपुर	1712	23/07/2010	500.00
100	श्री मोहन देशपांडे	नागपुर	1713	23/07/2010	1500.00
101	श्री [illegible] रानडे	वर्धा, नागपुर	1714	23/07/2010	500.00
102	श्री मकरंद [illegible]	वर्धा, नागपुर	1715	23/07/2010	500.00
103	श्री [illegible] राजदेरकर	नागपुर	1716	23/07/2010	2501.00
104	श्री दिव्य श्री राजदेरकर	नागपुर	1717	23/07/2010	1001.00
105	श्री डॉ. आचार्य	रायपुर	1718	23/07/2010	500.00
106	श्री अवनीश श्रीवास्तव	सीतापुर	1719	23/07/2010	501.00
107	श्री कुसुम श्रीवास्तव	शहडोल	1720	23/07/2010	101.00
108	श्री रविन्द्र तिवारी	शहडोल	1721	23/07/2010	1000.00
109	श्री डॉ० शिन्दे	भोपाल	1722	23/07/2010	3000.00
110	श्री आर.एम. छलोत्रे	—"—	1723	23/07/2010	6501.00
111	श्री अरूण अर्चना शर्मा	"	1724	23/07/2010	101.00
112	श्री शिव नारायण विश्वकर्मा	—"—	1725	23/07/2010	500.00
113	श्री आर.एस. शर्मा	"	1726	23/07/2010	5001.00
114	श्री धनराज वर्मा	रायपुर	1727	23/07/2010	101.00
115	श्री नामदेव वर्मा	[illegible]	1728	23/07/2010	151.00
116	श्री तुलसीदास [illegible]	रायपुर	1729	23/07/2010	101.00
117	श्री गोविंदराम वर्मा	—"—	1730	23/07/2010	201.00
118	श्री जगदीश चंद्र बाजपेयी	धार	1731	23/07/2010	2100.00
119	कीर्ति राठौर	इन्दौर	1732	23/07/2010	1100.00
120	श्री कृष्ण अग्रवाल	भोपाल	1733	23/07/2010	151.00

क्र.	नाम	स्थान	रसीद नं.	दिनांक	राशि
121	श्री शालू वलय	—"—	1734	23/07/2010	101.00
122	श्री श्याम नारायण पाठक	शहडोल	1735	23/07/2010	500.00
123	श्री रमेश चौहान	सेमरिया	1736	23/07/2010	501.00
124	श्री भोलाप्रसाद पटेल	रींवा	1737	23/07/2010	151.00
125	श्री संतोष पांडे	शहडोल	1738	23/07/2010	800.00
126	डॉ. किरण देवरस	बिलासपुर	1739	23/07/2010	11000.00
127	श्री राकेश यादव	नागपुर	1740	23/07/2010	251.00
128	श्री रामरतिसत भैया	नागपुर	1741	23/07/2010	251.00
129	उमा दुबे	शहडोल	1742	23/07/2010	101.00
130	श्री गिरिश देशपांडे	वर्धा, नागपुर	1743	23/07/2010	501.00
131	श्री राजीव पाठक	शहडोल	1744	23/07/2010	350.00
132	श्री सतीष दुबे	—"—	1745	23/07/2010	100.00
133	श्री मनोज पाठक	—"—	1746	23/07/2010	150.00
134	श्री गुरूप्रसाद पांडे	—"—	1747	23/07/2010	100.00
135	श्री विवेकानंद	—"—	1748	23/07/2010	101.00
136	सीमा शुक्ला	सतना	1749	23/07/2010	501.00
137	सुषमा त्रिपाठी	रींवा	1750	23/07/2010	1001.00
138	श्री अच्युत अशोक धर्माधिकारी		1751	23/07/2010	500.00
139	श्री विवेक अशोक धर्माधिकारी		1752	23/07/2010	500.00
140	श्री बबली	रींवा	1753	23/07/2010	51.00
141	श्री गिरिष लोडकर	नागपुर	1754	23/07/2010	100.00
142	श्री यश श्री गुप्ता	ग्वालियर	1755	23/07/2010	500.00
143	श्री शरद (मंदसौर वाले)	—"—	1756	23/07/2010	251.00
144	श्री संतोष श्रीराम		1757	23/07/2010	250.00
145	श्री रत्नाकर कुलकर्णी	वर्धा, नागपुर	1758	23/07/2010	201.00
146	श्री दीपनारायण पाठक	शहडोल	1759	23/07/2010	250.00
147	श्री विकास शर्मा	रींवा	1760	23/07/2010	1000.00
148	श्री उमाशंकर दुबे	दुर्ग	1761	23/07/2010	150.00
149	श्री विजया प्र. देशपाडे	अमरावती	1762	23/07/2010	101.00
150	श्री दिव्य प्रकाश पांडे		1763	23/07/2010	101.00
151	श्री दुर्गा शंकर तिवारी	मुंगेली	1764	23/07/2010	100.00
152	श्री सुभाष शुक्ला	रायपुर	1765	23/07/2010	101.00
153	श्री नवनिधि त्रिपाठी	शहडोल	1766	23/07/2010	1100.00
154	श्री सूरज सिंह नव्कड	मुंगेली	1767	23/07/2010	500.00
155	श्री रविशंकर पांडे	शहडोल	1768	23/07/2010	500.00
156	श्री अनिल	राजीम	1769	23/07/2010	100.00
157	श्री [illegible]		1770	23/07/2010	102.00
158	श्री मधुर लोणकर	वर्धा, नागपुर	1771	23/07/2010	252.00
159	सरिता जेठवा	नागपुर	1772	23/07/2010	2000.00
160	श्री शोभा यादव	नागपुर	1773	23/07/2010	501.00
161	श्री उन्नंशा देवगडे	बिलासपुर	1774	23/07/2010	202.00
162	श्री कृपेश देशपांडे		1775	23/07/2010	1000.00
163	श्री परमेश्वरी हा.से.स्कूल राजिम	रायपुर	1776	23/07/2010	501.00
164	श्री हरीष तेजवानी	..	1777	23/07/2010	201.00
165	श्री अमित जहागिरदार	पुणे	1778	23/07/2010	501.00
166	श्री विनोद पांडे	शहडोल	1779	23/07/2010	50000.00
167	श्री रशिम अभ्यंकर	पुणे	1780	23/07/2010	5000.00
168	श्री चन्द्रशेखर भागवत	नागपुर	1781	23/07/2010	500.00
169	श्री आर.के. दुबे	जबलपुर	1782	23/07/2010	151.00
170	श्री जय प्रकाश शुक्ला	कोरबा	1783	23/07/2010	5001.00
171	श्री शिवनारायण शुक्ल	शहडोल	1784	23/07/2010	101.00
172	श्री श्रीकांत त्रिपाठी	—"—	1785	23/07/2010	111.00
173	श्री प्रमोद गुप्ता	पथरिया	1786	23/07/2010	200.00
174	श्री मनीष कुशवाह	रींवा	1787	23/07/2010	1001.00
175	श्री भारत भूषण तिवारी	नौरोजाबाद उम.	1788	23/07/2010	1900.00
176	श्री श्याम पांडे	बैकुंठपुर	1789	23/07/2010	500.00
177	श्री अतुल वर्मा	वर्धा, नागपुर	1790	23/07/2010	5000.00
178	श्री भरत लाल	बैकुंठपुर	1791	23/07/2010	50.00
179	श्री रजनीकांत तिवारी	[illegible]	1792	23/07/2010	50.00
180	श्री आर.के. दुबे	बिलासपुर	1793	23/07/2010	1100.00
181	श्री राकेश गुप्ता	बैकुंठपुर	1794	23/07/2010	100.00
182	श्री गुप्त दान		1795	23/07/2010	501.00

क्र.	नाम	स्थान	रसीद नं.	दिनांक	राशि
183	श्री उमेदी यदु	बिलाड़ी	1796	23/07/2010	502.00
184	श्री प्रणित देशमुख	वर्धा, नागपुर	1797	23/07/2010	202.00
185	श्री आनंद मिश्रा	शहडोल	1798	23/07/2010	1500.00
186	कैंसिल किया		1799	23/07/2010	
187	श्री ब्रजेश द्विवेदी	कोतमा	1800	23/07/2010	600.00
188	श्री विजय वेलंकीवार	नागपुर	1801	23/07/2010	251.00
189	श्री लवश्री	मुंगेली	1802	23/07/2010	101.00
190	श्री राहुल मराठे	भोपाल	1803	23/07/2010	5000.00
191	श्री चैतूराम जी	मुंगेली	1804	23/07/2010	200.00
192	श्री अशोक पांडे	रायपुर	1805	23/07/2010	200.00
193	श्री दीपक शर्मा	शहडोल	1806	23/07/2010	4000.00
194	श्री मनोज कुशवाहा	सतना	1807	23/07/2010	101.00
195	श्री विद्याकांत त्रिपाठी	पेन्ड्रा	1808	23/07/2010	100.00
196	श्री अमरीश श्रीवास्तव	शहडोल	1809	23/07/2010	2000.00
197	श्री ज्योतिर्मय दास	—"—	1810	23/07/2010	1100.00
198	श्री ज्योति ठोसर	पुणे	1811	23/07/2010	1000.00
199	श्री अशोक पाठक	शहडोल	1812	23/07/2010	150.00
200	श्री अश्विनि कुमार तिवारी	बिलासपुर	1813	23/07/2010	1000.00
201	श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा	—"—	1814	23/07/2010	501.00
202	श्री सोहनलाल मालती कुशवाहा	पन्ना	1815	23/07/2010	1001.00
203	श्री प्रकाश गलगटे	वर्धा, नागपुर	1816	23/07/2010	200.00
204	श्री प्रकाश या गोवर्धन	बिलासपुर	1817	23/07/2010	500.00
205	कैंसिल		1818		
206	श्री मंदिर चढ़ावा		1819	23/07/2011	25570.00
207	श्री सुधीर कौशल	जबलपुर	1820	23/07/2011	1001.00
208	श्रीमती मधु कौशल	जबलपुर	1821	23/07/2011	1000.00
209	श्री राजेन्द्र कुमार संजय कुमार जैन	गोंदिया	1822	23/07/2011	1001.00
210	श्रीमती चन्द्रारानी मिश्रा	शहडोल	1823	23/07/2011	151.00
211	मंजू मिश्रा	शहडोल	1824	23/07/2011	101.00
212	श्रीमती गायत्री मिश्रा	शहडोल	1825	23/07/2011	101.00
213	श्रीमती मनोरमा मिश्रा	शहडोल	1826	23/07/2011	101.00
214	कु. मनीषा राजपूत	मुंगेली	1827	23/07/2011	51.00
215	श्री रवि प्रकाश द्विवेदी	शहडोल	1828	23/07/2011	101.00
216	श्री मोहनलाल सोनी	शहडोल	1829	23/07/2011	101.00
217	श्री सूर्य प्रकाश राजपूत	मुंगेली	1830	23/07/2011	51.00
218	डॉ. सुलभा गालोडे		1831	23/07/2011	500.00
219	जय भारती शिशु मंदिर	राजिम	1832	23/07/2011	101.00
220	श्री भारत लाल वर्मा	बिलोडी	1833	23/07/2011	1001.00
221	श्री [illegible] सिंह पटेल	स्गौनिया	1834	23/07/2011	500.00
222	श्री सन्तोष कुमार त्रिपाठी	कोतमा	1835	23/07/2011	501.00
223	श्री रामखिलावन	बिलाडी	1836	23/07/2011	300.00
224	श्री लोकनाथ	दुर्ग	1837	23/07/2011	100.00
225	अमिता द्विवेदी	अनुपपुर	1838	23/07/2011	101.00
226	श्री गजानन वडयालकर	दुर्ग	1839	23/07/2011	5000.00
227	श्री प्रकाश मिश्रा	भिलाई	1840	23/07/2011	2000.00
228	श्री दयाशंकर विद्या मंदिर	पेण्ड्रारोड	1841	23/07/2011	1001.00
229	श्री रश्मि द्विवेदी	अनुपपुर	1842	23/07/2011	21.00
230	श्री हरपाल सिंह चौहान		1843	23/07/2011	200.00
231	डॉ.विश्वकर्मा	पेण्ड्रारोड	1844	23/07/2011	102.00
232	श्री उरवी रोश वडयालकर	दुर्ग	1845	23/07/2011	100.00
233	श्री राजेश वडयालकर	दुर्ग	1846	23/07/2011	100.00
234	श्री सुशील कुमार मिश्रा	अनुपपुर	1947	23/07/2011	501.00
235	श्री अनिल द्विवेदी	रींवा	1848	23/07/2011	101.00
236	कैंसिल	रींवा	1849	23/07/2011	
237	श्रीमती रेखा मिश्रा	रींवा	1850	23/07/2011	101.00
238	श्री अंजनी कुमार तिवारी	रींवा	1851	23/07/2011	101.00
239	श्री इन्द्रमणी प्रकाश तिवारी		1852	23/07/2011	101.00
240	शीला देशपाण्डे		1853	23/07/2011	51.00
241	श्री डॉ.महेन्द्र कुमार शर्मा	रींवा	1854	23/07/2011	501.00
242	श्री दिलीप माथुर (चढ़ावा)		1855	23/07/2011	2460.00
243	श्री ओ.पी.शर्मा परिवार	इन्दौर	1856	23/07/2011	5000.00
244	श्री आर.पी., संतोष रवि शुक्ला	शहडोल	1857	23/07/2011	5000.00

क्र.	नाम	स्थान	रसीद नं.	दिनांक	राशि
245	श्री रामाविलाय मिश्रा	रींवा	1858	23/07/2011	51.00
246	श्री चढावा (ऋषि त्रिपाठी)	सतना	1859	23/07/2011	750.00
247	श्री जे.एम.द्विवेदी	शहडोल	1860	23/07/2011	101.00
248	श्री शरद राठौर	इन्दौर	1861	23/07/2011	5000.00
249	श्री राजू कानव	वर्धा	1862	23/07/2011	5100.00
250	श्री डी व्ही गुप्ता	शहडोल	1863	23/07/2011	500.00
251	श्रीमती कलावती राय	भोपाल	1864	23/07/2011	500.00
252	श्री देवेन्द्र / कुसूम / शालिनि / वलय	भोपाल	1865	23/07/2011	500.00
253	श्रीमती सत्यवती खरे	शहडोल	1866	23/07/2011	151.00
254	श्रीमती आर.पी.श्रीवास्तव	शहडोल	1867	23/07/2011	151.00
255	श्री राजीम गुरू परिवार	राजिम	1868	23/07/2011	610.00
256	श्री बसंत सोनी	मुंगेली	1869	23/07/2011	101.00
257	श्री कृष्ण चन्द्र मिश्रा	बिलासपुर	1870	23/07/2011	200.00
258	प्रतिमा ठाकुर	दुर्ग	1871	23/07/2011	101.00
259	श्री राकेश सोनकर	दुर्ग	1872	23/07/2011	101.00
260	श्री एन.एन.पाण्डे		1873	23/07/2011	51.00
261	श्री अरूण मिश्रा	रायपुर	1874	23/07/2011	100.00
262	श्री ऋषी पाण्डे	रायपुर	1875	23/07/2011	101.00
263	श्री मुक्ति चौधरी	भिलाई	1876	23/07/2011	51.00
264	श्री अर्जुन नागरे	दुर्ग	1877	23/07/2011	201.00
265	श्री भारतेन्दू मिश्रा	दुर्ग	1878	23/07/2011	51.00
266	श्री बी.पी.श्रीवास्तव	शहडोल	1879	23/07/2011	100.00
267	श्री ओ.एन.पाण्डे	दुर्ग	1880	23/07/2011	51.00
268	श्री महेश कुमार पाण्डे	दुर्ग	1881	23/07/2011	51.00
269	श्री लक्ष्मीकांत	रायपुर	1882	23/07/2011	51.00
270	श्री के.के.अग्रवाल	दुर्ग	1883	23/07/2011	51.00
271	श्री युवराज साहू	दुर्ग	1884	23/07/2011	101.00
272	सु.मंगला देवरस	बिलासपुर	1885	23/07/2010	535.00
273	श्री आर.डी.बघेल	अनुपपुर	1886	24/07/2010	3000.00
274	श्री ए.के.तिवारी	शहडोल	1887	24/07/2010	500.00
275	श्री सुधाकर भाले	भोपाल	1888	24/07/2010	501.00

क्र.	नाम	स्थान	रसीद नं.	दिनांक	राशि
276	श्री डी.के.द्विवेदी	रींवा	1889	24/07/2010	2000.00
277	श्री दीपक हरिदास	वर्धा	1890	24/07/2010	501.00
278	नवनिधि कन्सट्रक्शन	शहडोल	1891	24/07/2010	1100.00
279	शालिनी त्रिपाठी	शहडोल	1892	24/07/2010	500.00
280	श्री आर.के.शिंदे	ग्वालियर	1893	24/07/2010	200.00
281	कु.अरूणी शुक्ला	मुंगेली	1894	23/07/2010	100.00
282	श्री शहडोल गुरू परिवार	शहडोल	1895	23/07/2010	50000.00
283	श्री हिसाब में बढ़त राशि		1896	23/07/2010	10.00
284	श्रीमती लता दुबे	बिलासपुर	1897	30/03/2011	13414.00
285	श्री गुरू परिवार	कैलझी	1901	14/03/2011	501.00
286	श्री वाल्मिकी प्रसाद जी तिवारी	कोतमा	1902	14/03/2011	200.00
287	श्री मयंक पुरी गोस्वामी	दुर्ग	1903	14/03/2011	101.00
288	श्री विवेकपुरी	बिलासपुर	1904	14/03/2011	151.00
289	श्रीमती गीता देवी गोस्वामी		1905	14/03/2011	100.00
290	श्री चिंचोलकर परिवार	बिलासपुर	1906	14/03/2011	200.00
291	श्री दीपक चिंचोलकर	बिलासपुर	1907	14/03/2011	151.00
292	श्री गुरूजी के चरणों में		1908	14/03/2011	333.00
293	श्री गुप्त भण्डार क्र. 3		1909	14/03/2011	50000.00
294	श्री रामायणी परिवार	गोंदिया	773	13/06/2010	2100.00
295	श्री उत्तम अग्रवाल		774	13/06/2010	500.00
296	श्री रामायणी परिवार		775	13/06/2010	1100.00
297	श्रीमती हनशीरानी पदन	रहमान कापा	776	22/07/2010	500.00
298	श्री पी.के.शुक्ला	चिरमिरी	777	23/07/2010	200.00
299	श्री बबला पुरी गोस्वामी	मंधी, बिलासपुर	778	19/09/2000	551.00
300	श्री जी.वी.कृष्णराव	रायपुर	779	19/09/2000	101.00
301	श्री चढावा खाते जमा		780	06/10/2010	400.00
302	डॉ.चन्दा जी	शहडोल	781	15/10/2010	15000.00
303	श्रीमती दिव्या शुक्ला	शहडोल	782	06/10/2010	2500.00
304	श्री जग प्रकाश शुक्ला, परिवार	गेवरा	783	06/10/2010	501.00
305	श्री श्री गुप्त भण्डार		784	13/03/2011	96517.50
	टोटल				1132032.50

वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरुपरिवार आत्मोत्थान न्यास

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष

ॐ श्री वासुदेव गुरुपरिवार आत्मोत्थान न्यास

बड़ा बाजार मुंगेली 495334, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

अनुदान लेने वालों की सूची ता. 01.04.2010 से 31.03.2011 तक

आय–व्यय 2010–2011

क्रमांक	खाते का नाम	आवक	जावक	
1	श्री अखण्ड ज्योत खाते	5105.00	2710.00	
2	श्री चढावा खाते	30020.00	0.00	
3	श्री गुप्त भण्डार खाते	96517.50	0.00	
4	श्री कृषि उद्यान खाते	34974.00	21450.00	
5	श्री मेन्टनेंस खाते	85529.00	61157.00	
6	श्री महानिर्वाण खाते	16822.00	16417.00	
7	श्री गुरूपूर्णिमा महोत्सव खाते	2100.00	645.00	
8	श्री निर्माण मद खाते	613334.00	859605.00	
9	श्री न्यासी द्वारा प्राप्त	12700.00	0.00	
10	श्री गुरू दक्षिणा खाते	14201.00	0.00	
11	श्री मुनाफा खाते (LIC)	39079.00	0.00	
12	श्री ब्याज खाते (FD Saving)	30202.00	0.00	
13	श्री सेलरी खर्च	0.00	32500.00	
14	श्री लेबर खर्च खाते	0.00	21455.00	
15	श्री विद्युत खर्च खाते	0.00	13280.00	
16	श्री पोस्टेज खर्च खाते	0.00	1085.00	
17	श्री स्टेशनरी खर्च खाते	0.00	105.00	
18	श्री मोबाईल रिचार्ज खाते	0.00	985.00	
19	श्री बैंक कमीशन खर्च खाते	0.00	254.00	
	योग	**980583.50**	**1031648.00**	**-51064.50**
20	श्री ध्यान कक्ष निर्माण खाते	124800.00	0.00	
21	श्री मंदिर हाल मार्बल खाते	81106.00	0.00	
22	श्री आरती दीपक खाते	1825.00	545.00	
23	श्री भोजन शाला खाते	282173.00	78562.00	
	योग	**489904.00**	**79107.00**	
	महायोग	**1470487.50**	**1110755.00**	

वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरुपरिवार आत्मोत्थान न्यास

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष